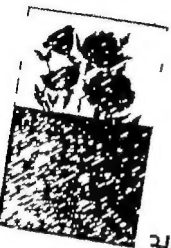




आधुनिक हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत





आधुनिक  
हिन्दी  
कवयित्रीयो  
के  
प्रेम गीत

सम्पादक  
क्षेमचन्द्र 'सुमन'

प्रथम संस्करण  
अप्रैल १९६२

प्रकाशक  
राजपाल एण्ड सम्भ  
पोस्ट बाग १ ६४ बिल्डी

कार्यालय और प्रेस  
बी० टी० रोड साइडरा दिल्ली १२

बिब्लि-केन्द्र  
कमलौड़ी रोड दिल्ली ६

मुद्रक  
श्रीवा प्रिंटर्स  
१०८६१ ईस्ट पार्क रोड दिल्ली

मूल्य  
साठ रुपये

ADHUNIK HINDI KAVYITRIYON KE PREM GEET  
KJHEM CHANDRA 'SUMAN' POETRY

सस्ति बे मुमसे कहकर जाते ।  
कह तो क्या मुमको बे अपनी  
पय-बाधा हो पाते ।'  
घोर

'मुझे फूल मत मारो ।  
मैं बासा बबला वियोगिनी,  
कुछ तो क्या विचारो ।

वसने अमर प्रणय-गीतों के स्रष्टा  
श्रद्धेय राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त  
को सादर



## यह संकलन

इस संकलन की भी एक कहानी है। 'हिन्दू पॉकेट बुक्स' के प्रस्तावित प्रकाशित हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ प्रेम-गीतों नामक पुस्तक के सम्पादन के दिनों में ही यह विचार मेरे मन में घाबा था कि हिन्दी की प्राधुनिक कवयित्रियों द्वारा लिखित प्रेम-गीतों का भी एक संकलन अलग से प्रकाशित होना चाहिए। परिणामस्वरूप उक्त पुस्तक को प्रसंग में पुनरावलोकन के उपरान्त मैं जून १९६१ में इस कार्य में सहस्रज हो गया। जब मैंने हिन्दी की प्राधुनिक कवयित्रियों को इस प्रस्ताव का एक परिपत्र भेजकर उनसे अपने इस कार्य में सहयोग देने की प्रार्थना की तो सब धीरे से मेरे इस प्रस्ताव का स्वागत ही नहीं हुआ। प्रस्तुत सामग्री भी धानी प्रारम्भ हो गई। जुलाई के अन्त में जब मैं अपने पास भाई हुई उस शाम को कुछ व्यस्तता देने बैठा तो मैंने यह अनुभव किया कि अभी इस कार्य में पर्याप्त परिश्रम और जोर अपेक्षित है। जब सहज भाव से मेरे मानस में इस संकलन का संकल्प उठा था तब मैंने स्वयं में भी न सोचा था कि यह इतना गुरतार और दुकड़ कार्य निकलेगा।

मेरा यह विचार था कि इस संकलन में कहीं बोली-काव्य के क्षेत्र में प्रवर्तित सभी प्रविष्ट प्रप्रविष्ट प्राधुनिक कवयित्रियों के प्रेम-गीत ही समाविष्ट न हों। प्रस्तुत यह अपनी विद्यपताओं के कारण हिन्दी-साहित्य का एक प्रतिनिधि 'साकर संग्रह' भी बन सके। मेरी यह भी भावना थी कि इन संकलन में हिन्दी-काव्य की समृद्धि में योग देने वाली सभी प्रतिष्ठित कवयित्रियों के गीतों का समावेश होने के साथ-साथ उन कवयित्रियों की रचनाएँ भी रहें जो अपने माहिरिक जीवन में पश्याग करत समय कभी कबिताएँ लिखा करती थीं और आज किसी बरग



नम साहित्य की अन्य विधाओं में रचना करके हिन्दी की समृद्धि में अपना योग दे रही हैं, वा इस क्षेत्र से सर्वथा उपराम ही हो गई हैं।

अपने जल विचार को कार्य रूप में परिणत करने के पवित्र संकल्प से प्रेरित होकर मैं सर्वात्मना इसमें जुट गया और देश के विभिन्न समूह युवकसमूहों में जाकर हिन्दी की नई-पुरानी नम-पत्रिकाओं की फाइलें तक छूनीं। पहले मैंने उन सभी कर्मियों की शक्तिका तैयार की जो पहले से अब तक बरबस लड़ी होती-काव्य की समृद्धि में अपना सहयोग दे रही हैं, और बाद में उन बहनों की भी सूची बताई जो अब विस्मृति की गहव गूहा में विहीन हो गई हैं। मेरी इस ऊहापोह से मेरा यह कार्य सरलता के जटिलता की ओर बढ़ गया और मैं अपने द्वारा ही उभाए गए इस काल में इतना ललम गया कि न तो काम समाप्त होने में आता था और न इसके बार पान का ही कोई मार्ग दिखाई देता था।

इस छान-बीन में मैंने खोजाई तो प्रायः एकत्रित कर ली, परन्तु उनके जीवन-परिचय तथा विषय आदि कहीं से उपलब्ध किये जायें यह समस्या अत्यन्त जटिल रूप से मेरे सामने आ लड़ी हुई। कुछ स्वर्णीय कर्मियों के बिना तथा जीवन-परिचय-सम्बन्धी सामग्री जुटाने में मुझे जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा उनको कहानी बहुत सम्झी है। इस सम्बन्ध में कहीं मैंने उनके बतियों से-सम्बन्धियों और कारिबारियों का पता लगाकर उन्हें अनेक बार लिखे कहीं उनसे सम्बन्धित नगरों व स्थानों की यात्राएँ भी की। खेद है कि ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य में भी हिन्दी की कुछ अस्नेहनीय स्वर्णीय कर्मियों के प्रतिभा ने अपना सहयोग देना तो दूर, मेरे पत्रों का उत्तर देने की आवश्यकता भी नहीं समझी। यहाँ तक ही नहीं, जब मैं उनसे मिलकर कुछ सामग्री प्राप्त करने के उद्देश्य से उनके नगर में गया तो कहीं भी उन्होंने मुझे मिलने का समय देने तक का योजन नहीं किया।

इन संवसन से सम्बन्धित सामग्री सबसेँ समय को प्रयुक्त

कठिनाई मेरे सामने धाई, वह भी कुछ कर्मविधियों द्वारा अपने चित्र और जीवन-सम्बन्धी सामग्री मेरे मेँ सामानाकामी करता । मैंने भी हिम्मत न हारी और अपने उद्देश्य की पवित्रता जताकर उनसे संकलन की 'एककपटा' बनाए रखने से सहयोग देने की फिर याचना की । मेरी इस सम्मर्पणा का अधिकोश बहनों पर बड़ा खोला प्रभाव पड़ा और उन्होंने अपने चित्र भेजकर जहाँ मुझसे सहयोग किया वहाँ 'हिन्दी साहित्य' के ऐसे महत्वपूर्ण धाकर रख' की भी सोचा बढ़ाई । मेरे निरन्तर अनुरोध एक अविरत धाराह करने पर भी कुछ ऐसी बहनें इस संकलन में समाविष्ट होने से रही थी जिनमें किन्हीं कारणों से अपने चित्र भेजने में असमर्थता प्रकट की । संकलन को 'एककपटा' बनाये रखने की इच्छा से मुझे ऐसा 'पनखो' निश्चय करना पड़ा । इसके लिए मैं अपने पाठकों के निकट जमा-श्राधी हूँ ।

एक और बात यदि मैं अपने पाठकों के सामने स्पष्ट न रखूँ तो मैं अपने कथ्य से किन्तु समझा जाऊँगा । मैंने इस पत्र-व्यवहार तथा यात्रा में भी प्रयत्न यह अनुभव किया कि हमारी अधिकोश बहनें इस कामरत के युग में भी अपने पारिवारिक जवाबदारी और पतिप्रीति धनका समिन्नाबनों द्वारा जनाबदयक रूप से पोषे गए बहनों से भी विभक्त हैं । मैं इच्छा रहते हुए भी कुछ ऐसी बहनों की रचनाएँ इस संकलन में समाविष्ट न कर सका जो वास्तव में मेरे उद्देश्य की पवित्रता के प्रति पूरी सहानुभूति रखते हुए भी हिन्दी-साहित्य की समिवृद्धि के लिए न्योजित मेरे इस बस में अपने सहयोग की समिन्नाएँ न दे सकी । अपने पास आए हुए अनेक पत्रों में से कुछेक पत्रों के अंग में पाठकों की जानकारी के लिए दे देना अपना नैतिक कर्तव्य समझता हूँ । इससे जहाँ हमारे पाठक बड़े अनुमान लगा सकते कि बीसवीं शताब्दी के इस पूर्णतः बहुचर्चा और स्वतन्त्र भारत में ऐसी महिलाएँ भी हैं जो अपने पतिप्रीति की इच्छा पूर्ति के लिए अपने साहित्यिक जीवन की प्राप्ति देने तक को तत्पर हैं वहाँ के यह भी जान सकते कि पुरुषजन के इन निष्ठुरतापूर्ण व्यवहार से

साहित्य की किस्ती लवि हो रही है ।

जब मेरे कई पत्र एक बहन के पास गए तो उन्होंने क्याचित् सहृदयतावश उत्तर देना ही प्रतिक उचित समझा । अपने पत्र में उन्होंने जो कुछ लिखा उसे मैं अक्षरशः यहाँ दे रहा हूँ । उन्होंने लिखा था—

“आपके कई पत्र मुझे मिले । उत्तर न देने की अपराधी अवश्य हूँ किन्तु मेरे पतिदेव को कविता और कल्पना-लोक पसन्द नहीं । इस कारण मैं इस क्षेत्र से बहुत पीछे हट घाई हूँ । अपनी रचनाएँ मैंने मण्ट कर दी हैं और यह मूल्य यह है कि कभी मैंने भी कुछ लिखा था । इस तरह से भावनाओं का बसा बोटकर मैंने अपने पति का मन तो जीत लिया किन्तु धारम-समरण में बेवना बहुत हुई ।

अपनी भव्य पुस्तक के प्रकाशन के कुछ अवसर पर आपने मुझे याद किया बहुत समझकर लिखा—इसके लिए मैं किन छद्मों में आपको बन्धबाध हूँ ? केवल आभासी होने व प्रतिरिक्त में लिख ही क्या सकती हूँ । अच्छा है आपकी यह व्यापकता किसी क सन्नेह का कारण न बने । मेरे पति देवता-तुल्य हैं उनकी इच्छा व बिबद्ध मेरी इच्छा नहीं हो सकती । अतः मैं हाथ जोड़कर आपसे क्षमा माँगती हूँ । आशेय में मैं जो कुछ भी भला-कुल लिख गई हूँ उसके लिए भी क्षमा प्रार्थी हूँ । आशा है आप मेरी इस उदासीनता को बिबधता समझकर क्षमा करेंगे और कविविधियों की सूची से मेरा नाम काट देंगे । (बैसे तो मैं एक पाठिका भी नहीं हूँ ।)”

ऐसे एक नहीं अनेक पत्र मेरे पास आए हैं, जिनका जम्मेला मैं अपनी पिछली पंक्तियों में कर चुका हूँ । ऐसी ही एक बूझी बहन ने जब मेरे पत्रों का कोई उत्तर देने का कष्ट न उठाया तो मैंने उसी मकर के अपने एक साहित्यिक बन्धु को उनकी रचनाएँ, बिज और परिचय याद मित्रदाने के सम्बन्ध में पत्र लिखा । मेरे पत्र के उत्तर में उन साहित्यिक मित्र ने जो पंक्तियाँ मुझे लिखीं उनसे भी हमारी भाव की अभिव्यक्ति

बहनों की स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है—  
 'मैंने से कह दिया था पर मुझे लयता है कि उनके

पति-देवता नहीं चाहते कि कविता के क्षेत्र में उनकी क्याति मजे  
 और कवयित्री के रूप में लीज उन्हें नामों। अतएव यदि वे सामग्री  
 भेज दें तब ठीक है नहीं तो उनके बगैर ही आप अपना संग्रह  
 प्रकाशित करें।'

कृप ऐसी कवयित्रियाँ भी निकालीं जो प्रचार और विज्ञापन से दूर  
 रहकर अपने धर्मोपे की साधना में लक्ष्मीन हैं और वे शान्ति में  
 ही अपनी साधना की इच्छा समझती हैं। अपने एक पत्र में एमी हो  
 एक बहिन ने मुझे यह लिखा—

'मैंने आपसे स्वयं ही सविनय स्थिति साफ कर दी थी कि  
 आप कृपया मेरी कविता की प्रतीक्षा न करें तथा अपना बहुमूल्य  
 प्रत्य निश्चित समय पर प्रकाशित करें। आपने अपने बहुमूल्य  
 संकलन के लिए मेरे गीतों को माँगकर जो धार पर मुझे प्रदान किया  
 उसके लिए आपको कोटिप प्रत्यबाद।

गीत न भेज सकने के लिए क्षमा करिएगा। परमात्मा आपको  
 अपने प्रेय में सफलता प्रदान करें। कभी-कभी सामोछी का भी  
 कुछ कारण होता है। जियर साहब की वे लामें आपने देनी  
 ही होंगी

धामूर ए साहित्य तो है मगर  
 आपव यह तुम्हें मान्य नहीं  
 साहित्य से भी लहरें उठती हैं  
 लामोछ भी तूझी होते हैं

जितने अपने सम्पूर्ण जीवन को ही भगवान् में समर्पित  
 करके अपने को ही भगवान् का गीत बना दिया है उसको मर या  
 नाम की लिप्ता कहाँ रही? जैसी भगवान् की इच्छा है वही  
 होता है तथा हो रहा है। भगवान् जो तात्कालिक कर्तव्य सामने

भारतीय सरकार सेवक और विद्यावती बर्मा जैसी हिन्दी की चौदह प्रमुख स्वर्गीय कवयित्रियों की ऐसी जीवन-सागरी जिस और गीत समाविष्ट हैं, जो कदाचित् ध्वन्यनुतर्ज हैं। इस संकलन को देखकर पाठकों के सामने यह भी अभी चालि प्रकट हो जायगा कि हिन्दी अब किसी विशेष प्रदेश या जनपद की भाषा न रहकर समस्त भारत देश की अभिव्यक्ति का मूल गीत है। इस संकलन की कवयित्रियों में से अनेक ऐसी हैं जिनकी मातृभाषा हिन्दी न होकर गुजराती मराठी तैमुरी बंगला या पंजाबी है। सांस्कृतिक उन्नयन और ब्यापारिक संगम की दृष्टि से भी यह संकलन हमारे लिए एक नई प्रेरणा देने वाला है। हिन्दी भाषा भारत के सभी जनपदों और प्रदेशों के परिवारों के पारस्परिक सम्मिलन का ऐसा साधन बन गई है कि अब उसे अपनी अभिव्यक्ति का सहज माध्यम समझने लगे हैं। इस प्रकार के संकलनों का सभी भाषाओं के पाठकों को हिन्दी की ओर धाकट करने में बड़ा योग हो सकता है। वह दिन दूर नहीं जब सार देश के सोच हिन्दी की ओरने समझने तथा अपने दैनिक कार्य व्यापार में व्यवहृत करने के साथ-साथ उसमें साहित्य रचना भी उसी उत्साह से करने लगेंगे जिस उत्साह से वे अपनी-अपनी मातृ भाषाओं में करते हैं।

मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि लगभग १०-११ महीने के अल्प परिचय और अविरत पत्र-व्यवहार के बाद मैं यह संकलन पूर्ण कर सक्य। इसे सर्वांगीण और सफल ग्रन्थ कहने की पुष्टता तो मैं नहीं कर सकता, किन्तु इतना तो मुझे सन्तोष है ही कि मेरा यह संकलन हिन्दी के धातुनिक प्रेम-काव्य की अभिवृद्धि के लिए किये गए हमारी बहनों के कृतित्व को सामने रखने की दृष्टि में एक अत्यन्त निमग्न किन्तु ठोस प्रयास है। मैं यह भी जानता हूँ कि देश के विभिन्न कोनों में बिखरी हुई बहुत-सी बहनों की रचनाओं का समावेश इसमें न हो सका होना किन्तु इतना तो मैं अवश्य ही विश्वास दिलाता हूँ कि मेरी कृतियों के सम्मेलन में जो भी संकेत या सुझाव दिये जायेंगे उन्हें मैं विनीत मन

( ५ )

धीरे धीरे हृदय से स्वीकार करूँगा जिससे इस संकलन के धामामी  
सस्करणों को मैं धीरे धीरे धार्मिक उपायों एवं सर्वहोषीय बना सकूँ ।  
इस कार्य में मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में बिन-बिन व्यक्तियों का सहयोग  
साहाय्य मिला है जिनके प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ । विशेष  
रूप से उन बहनों का आभारी हूँ जिनके सक्रिय सहयोग धीरे धीरे जीवन  
मन धार्मिकों के मन पर मैं इस पुस्तक कार्य को सम्पन्न कर सका ।  
यदि हिन्दी-जगत् ने मेरे इस प्रयास का तनिक-सा भी स्वागत किया  
तो मैं अपने को अत्यन्त समर्थ मानूँगा ।

प्रजय निवास बिलगाव कॉलोनी  
वाहदरा, दिल्ली-३२

क्षेमचन्द्र सुमन'



## तालिका

१ भगवत भारती	जब तुम्हारी धोर देखा !	१
२ अर्चना	पसको से डक नूं ।	३
३ अविनाश	तुम मुसकुरा हो ।	४
४ आसारानी श्लोक	जानूं क्या मनुहार प्यार की ।	८
५ इन्दिरा 'शुपुर'	पथ का साथी कौन रहेगा ?	१०
६ इन्दिरादेवी साक्षिणी	मे जस उनकी धोर !	१२
७ इन्दु जैन	मेज धरा आकाश सखी री ।	१४
८ इन्दुबासा देवी	यह मिलन रात !	१६
९ इमिता 'कुसुम'	प्राण बिकल हूं ।	१८
१० इमिता निरखे	मैं अनजानी-सी लौट गई ।	२०
११ इमिता बापुल्लेख	जुलावा जब तुम्हें कर से ।	२३
१२ इमिता विनहा	मैं कैसे मन्दिर में धाऊँ ?	२५
१३ ओम्बती अक्षयल	बिकल पीना होती साधार !	२७
१४ कचनलता सखरवास	प्रियतम तुमको भेंट कर्क क्या ?	२९
१५ कमल पुरी	वे जैन बरस जाते हैं ।	३२
१६ कमला घोबराय	बेचना से छटपटाते प्राण !	३४
१७ कमलाकुमारी	मैं जब से यहाँ लड़ी हूँ ?	३६
१८ कमला चौधरी	मेरी माय तुम्हें मा जाए !	३८
१९ कमला जैन बीबी	एक बितवम ही बहुत है प्यार की ।	४१
२० कमला बीजित	सखि वे जाए न एक बार !	४४
२१ कमसेख 'कमल	जलन से प्रीत मुझे है प्रीत !	४६
२२ कमसेख सक्सेना	'नही निर्दयी तुम नहीं के-रहम तुम' !	४९



२३ कामिनि निपाटी	प्राण ! धनवाने निकटतर था रहे हो ।	५२
२४ कीर्ति बीबरी	मम की मूर्ति स्वयं यह लूंगी !	५४
२५ कुम्भकुमारी जैन	गामस में कौन छिपा जाता ?	५६
२६ कुमारी कुमुद	सिसकता प्यार के लूंगी !	५८
२७ कुमारी कुमुद	पायन बमकर घाए हो ।	६०
२८ कुमारी मधु	प्राणों के समीप तू आया क्यों ?	६२
२९ कुमारी राधा	तुम्हारी याद सताती है ।	६४
३० कुमुदकुमारी सिन्हा	छात्र उनको पाषाण न कहना ।	६७
३१ गिरीश रस्तीमी	तुमको पाकर सब-कुछ पाया ।	६९
३२ गीता श्रीवास्तव	सुमन समझकर रौब न देना !	७१
३३ चन्द्रकान्ता	क्या तेरा सपना बही है ?	७३
३४ चन्द्रकान्ता वर्मा	पर कसै क्या ?	७५
३५ चन्द्रकिरण सोमरेकसा	प्यार सदा पायस क्यों होता ?	७८
३६ चन्द्रमुखी प्रोफ़ेसर 'सुभा'	प्रीत बन जाओ !	८०
३७ चन्द्ररेखा वर्मा	घरे, ये किसने बीने धूल ?	८२
३८ चन्द्रवती ज्योतिषसेन जैन	मैं न तुमको भूल पाती ।	८४
३९ चारा पांखे	गीत बाँकी मैं मधुर-सा ।	८७
४० स्व तोरनदेवी दुसल 'लली' के धकेलन नहीं समझते ?		८९
४१ विनेयनम्बिनी डाममिया	प्रिय जब धनमुष्टन जोसोन ?	९१
४२ दीप्ति चन्द्रसेनवाल	बहुत तुम बाध पाते हो ।	९३
४३ दुर्गावती सिंह	न जाना प्राण तुम्हारा प्यार ।	९५
४४ देववती वर्मा	अंधस प्रेमी जान न पाया ।	९७
४५ धार मिश्र	कथा एक गई, भाव भी जमते चलते ।	१०
४६ नसिनी श्याम	आज मेरे मान रोते ।	१०
४७ निर्मला माधुर	गीत दिमी का स्नेह निमी का ।	१०४
४८ प्रकाशवती	विचलित होता हृदय !	१०६
४९ प्रतिभा पने	तुम्हारी याद के बग्नन !	१०८

१० प्रेमकुमारी पुष्पा	कोन तुम सुने गगन में ?	११२
११ प्रेमसता बर्मा	आज कम्पित पाठ-सा मन !	११४
१२ स्व पुष्पाबन्धनी	इनमे कितने भाव भरे हैं ?	११६
१३ पुष्पसता श्रीबास्तव नीलिमा' कछुआ से मरी मेरी कहानी !		११८
१४ पुष्पा धबस्वी	रहते हो सपने-से !	१२०
१५ पुष्पा पुरी	मुझे तुम मत ठुकराओ !	१२२
१६ स्व० पुष्पा भारती	मिने वो हृष्य मिने वो सुमन !	१२५
१७ पुष्पा सक्सेना	बह बात न मेरे मुख से कहलाओ !	१२७
१८ पुष्पा सक्सेना	मैं स्वयं मैं को गई !	१३०
१९ अपवन्धनी 'किङ्कमा'	हैं धमर मधुमान भरे !	१३३
२० मणिका मोहिनी	केवल धर्पण ही अपरु है !	१३५
२१ मधु धममान	तुम हूँस सा मेरे जीवन पर !	१३७
२२ मधु पाण्डेय	मेरे जीवन दीप !	१३९
२३ मधुमानवी चौकसी	कुछ कह न पाई !	१४२
२४ मधुष्मा बास गुप्ता	बस, केवल सपनों में आना !	१४५
२५ मधु शुक्ला	प्राण ! आकर धाम सो बहियाँ !	१४८
२६ मनमोहिनी	रातें आँखों में बीती !	१५०
२७ ममता मधुमान	भावना के दीप मेरे !	१५२
२८ महाबेबी बर्मा	यह सपना सुकुमार किसी का !	१५४
२९ माधवी रानी 'दाया'	मुसकराता हुआ दीप मैं बन सकूँ !	१५७
३० मानवी ओझी	धूप-झाड़ि है प्यार तुम्हारा !	१६०
३१ मासवी श्रीबास्तव	भरी आज रसना !	१६१
३२ मासवी तिरसीकर	पहचानते हैं प्राण तुम्हें !	१६६
३३ मोहिनी गीतम	कलि तुमने लिखकर क्या पाया ?	१६८
३४ रजनी मिश्र	मन के भीत न आए !	१७०
३५ रत्नकुमारी बाण्यडीर्ष	ऐ मन ! धीमू पी से !	१७२
३६ रमा सिंह	मेरे पास कुछ उत्तर नहीं !	१७४

७७	राजकुमारी कील	प्राण तुमको दे रही हूँ !	१७९
७८	राजकुमारी श्रीवास्तव	मेरे प्रियतम साकार धर !	१८०
७९	राजराजेश्वरी भिबेबी 'जलिनी'	कब किसकी साथ हूँ पूरी ?	१८१
८०	स्व० राजरानी चौहान	न पूरी हुई आज तक चाह !	१८२
८१	स्व० रामकसी 'प्रभा'	समझूँगी इसको भी प्यार !	१८३
८२	रामकुमारी चौहान	भीत कोई ना रहा है ?	१८४
८३	स्व० रामेश्वरी घोषण	गामक यहाँ न छोड़ो तान !	१८५
८४	स्व० रामेश्वरी बेबी 'कठोरी'	धन हृदय के किस कोने में !	१८६
८५	रामेश्वरी वर्मा	दूर मेरा भीत है !	१८७
८६	रामकुमारी तिवारी	समर्पण का समिट समिहार तो दो !	१८८
८७	रेखा रामात्मन्	निषोद्धे नैन को क्या हो गया है ?	२०४
८८	मदमी बिपाठी	एक स्वर जगता मला !	२०७
८९	सीमा प्रबन्धी	कैसा प्यार तुम्हारा ?	२०८
९०	स्व० सीमावती 'अनिल'	हमारे प्रियतम प्राणधार !	२११
९१	विजयकान्ता श्रीवास्तव	मुझको तुम न सताओ !	२१३
९२	विद्या मिश्र	जाग सकोये क्या ?	२१४
९३	विद्या बसन्त मानेकर	तेरा जगु प्राण जुका दूँगी !	२१७
९४	विद्या 'विमा'	गान लेकर क्या करूँगी ?	२१८
९५	विद्या लक्ष्मण	याद मेरी भूल जाना !	२२१
९६	विद्यावती 'कोकिल'	मुझको मेरी मूर्ति मिल गई है !	२२४
९७	विद्यावती श्रीधर	मुसकान देने ही बनी हूँ !	२२७
९८	विद्यावती 'मासविना'	भिरह-भीत ही गाया !	२२८
९९	विद्यावती मिश्र	प्रिय मन्दिर की राह न बरसे !	२३१
१००	स्व० विद्यावती वर्मा	प्राण जीवन प्राण प्राण !	२३४
१०१	विमला बेबी 'रमा'	प्रिय बीरे से तू धाना !	२३७
१०२	विमला चक्रवर्ती	मीन छोड़ो पिया !	२३८
१०३	विमला श्रीवास्तव	मपना नव साकार हुआ रे !	२४१

१०४ स्व० विष्णुकुमारी श्रीबास्तव 'नकु'	सूनेपन में तुम आए ।	२४३
१०५ बीणा मिश्र	प्रिय तुम्हें कैसे मनाऊँ ?	२४३
१०६ बीणा त्रिवेदी	आज मेजती तुमको पाती !	२४७
१०७ बीरा	मेरे आँगन खेत क्यूँतर !	२४०
१०८ स्वामा सलिल	मैं झम्कों की रानी हूँ !	२४१
१०९ सकुन्तला माधुर	हर लगता है ।	२४६
११० सकुन्तला खरे	मैं तो उन पर बलिहार गई !	२४८
१११ सकुन्तला धर्मा	कौन वह पुकार गई ?	२४९
११२ सकुन्तलाकुमारी 'नैलु'	इतनी कृपा कर दो ।	२५४
११३ सकुन्तला श्रीबास्तव	कितना लम्बा पत्र जीवन का ?	२५६
११४ सकुन्तला विरोधिया	मुझे प्राण सब तुम बहुत माव छाते ।	२५६
११५ आन्ता त्यागी	करो स्वीकार मेरी आरती !	२७१
११६ आन्ता सिनहा	हार एक धनेक मैं ।	२७४
११७ आन्ता सिनहा	धला मुझसे दूर दब के ?	२७७
११८ आन्ति धनवान	द्वार मिल गई ।	२७८
११९ आन्ति मेहरोजा	आराध्य न सब साकार बनो !	२८२
१२० आन्ति रमण	मुसकुराने को न कहना !	२८४
१२१ आन्ति सिंहन	जब तुम्हीं धनवान बनकर रह गए ।	२८६
१२२ आन्तिकुमारी तुमन	पुष्पतम साधु है ।	२८८
१२३ धारवा पुष्पा	हार तुम मेरे आशीर्ष ।	२८९
१२४ धारवा वैदार्शनिक	तुम मुझको पहचान न पाए !	२९३
१२५ धीमा	मेरी आँखों से देखो तुम !	२९७
१२६ धीमा अग्निहोत्री	धीर तुम जाने कहाँ हो ?	२९८
१२७ धीमा पुष्पा	जाने क्या बात हुई ?	३०१
१२८ धुना बर्मा	याद करती हूँ तुम्हें !	३०४
१२९ धीन बर्मा	वीर बन पाए हो ।	३०६
१३० धीनकुमारी कनुबेदी	प्रेममय अभिमार भूली ।	३०८

१३१	सैनबाबा	मीठ अपना गा रही हैं !	३१०
१३२	शील रस्तीगी	तुम न जाए पर !	३१२
१३३	स्नेहमयी बीजरी	मन मेरे, सगनी बात कहो !	३१४
१३४	स्नेहमयी प्रसाध	तुम गए क्यों निर्मम मेरे !	३१६
१३५	स्नेहमयी 'स्नेह'	तुम मिमोगे ही कभी !	३१८
१३६	स्वल्पकुमारी बकसी	कप एक मीनार है !	३२१
१३७	सकुछा	अब तो नाव भर दे धाई !	३२४
१३८	सत्यवती धर्म	प्यास बकसी क्यों हृदय की ?	३२७
१३९	सन्तोष अयबाल	हास्य भी तो कठ जाता !	३२९
१४०	सन्तोष बाबूपुरी	तुमसे मीठी याद तुम्हारी !	३३१
१४१	सन्तोष सक्सेना	अमी से मन बकरावा !	३३३
१४२	सरला कुप्ता	जीवन घरी सुन्दार हो !	३३६
१४३	सरला ठिगारी	मैं सगनी ही होमी !	३३८
१४४	सरला भारती	मुझे रीत बन की निभाना न आया !	३४०
१४५	सरला श्रीवास्तव	बहु न मिया !	३४३
१४६	स्व० सरला सेवक	क्यों मुझको जीवन नार न हो !	३४६
१४७	सरस्वती बीजरी	जिन्दगी फिर साथ साथो !	३४८
१४८	सरोजिनी कुमरोप	अपने द्वार मुझे आने दो !	३५०
१४९	सावित्री कावसबाब	मुझे भिजे ये प्रियतम रात !	३५२
१५०	सावित्री बाबा	तुम आसा कनकर आते हो !	३५३
१५१	सावित्री रस्तीगी	तुम न आओ !	३५८
१५२	सावित्री सुक्ल	मीठ तुम्हारी सुनि जाती है !	३६०
१५३	सीता अटनागर	आया कीन रिझने ?	३६२
१५४	सुबर्ण बाहरी	बेमुय प्रीत-कहानी बसती !	३६४
१५५	सुदेश प्रतिभा	कीन मन की पीर जाने ?	३६६
१५६	सुधा जैन	माँओं का यह रत्न बसता है !	३६८
१५७	सुधा बलवीर	मुगकाने को इलाज बना !	३७१

११८ सुभा शर्मा	मेरा धनक जामा करते हैं ।	३३६
११९ सुभाशर्मा शर्मा	मृदु प्यार गुटा बैठे हैं ।	३३६
१२ सुप्रभा व्यास	घपना ससार गुटा बैठे हैं ।	३३६
१२१ स्व० सुमशकुमारी चौहान	हठीसी धाँसें सब ही गई ।	३३७
१२२ सुमयसाकुमारी मिश्र 'प्रभा'	मधुर गीत मेरे मुखर हो गए ।	३३८
१२३ सुमिशाकुमारी सिंह	अगवान् एक पर भंग है ।	३३८
१२४ सुमोचना पंवार	प्रिय ! कंसी यह मेरी उममन ?	३३८
१२५ सुधीसा 'कंचन'	बकी जा रही तुम्हें बुझाने ।	३३८
१२६ सुधीसा शरीन	सावन गीसा है !	३३८
१२७ स्व० सुधीसा त्रिपाठी	क्या याद हमारी धानी ?	३३८
१२८ सुयदेवी दीक्षित उपा'	धौर कम हो प्रेम का बगन ।	३३८
१२९ सुयबाला श्रीवास्तव	धर्मेना का एक यह धमिहार ।	३३८
१३० हर्षनन्दिनी माटिया	या भी जा ओ भीत ।	३३८
१३१ हीरादेवी चतुर्वेदी	जाने कैसा उनका प्यार ?	३३८
१३२ स्व होमवती देवी	कैसे गीली पसक जोन् ?	३३८
१३३ ज्ञान पत्तना	तुम हमो में छा रहे हो !	३३८
१३४ ज्ञानवती सकसेना	जामी यागर भर जाती है ।	३३८
१३५ ज्ञानवती सकसेना 'किरण'	मुखसे मेरे गान न धीनो ।	३३८







जब तुम्हारी ओर देखा !

जब तुम्हारी ओर देखा, खिंच गई मन में सुरेखा !

स्वप्न सब साकार पल में हो गए  
गा उठे सब सार मन के, जो कभी बे सो गए  
डम गए शबनम के मोती फूल-से  
उठ गए नज़रें अपमानक भूल से

लाल की सब आ गई रक्तिम सुरेखा !

जब तुम्हारी ओर देखा खिंच गई मन में सुरेखा !

मुक्त सरिताएँ मिलन को चम पड़ीं  
यामिना भी चाँद से मिम हुई पड़ी  
दीप सब निस्सार उस पल हो गए,  
भाज के वचन तभी सब लो गए

मिट गई मध्यस्थ की मर्याद-रेखा

जब तुम्हारी ओर देखा, खिंच गई मन में सुरेखा !

जन्म-स्थान — घातघर  
 (राजस्थान) । जन्म तिथि— ६  
 जून १९२३ । शिक्षा—एम ए  
 (हिन्दी), एल टी । प्रकाशित  
 रचनाएँ—‘हिन्दी काष्ठ में  
 यमुना-वह्नु’ (यात्रोचना)  
 ‘व्यक्तिक’ ‘सन् सत्तावन का

## यात्रोचना



छाया में’ (कविता संग्रह)  
 ‘वन्दन’ (अनुरोध) । विद्वत्—  
 वास्तविक नाम धनुरज्जना  
 भाईच । वर्तमान पता—  
 हिन्दी-प्राध्यापिका वसन्तिदेवी  
 बाले कालिदास चौमदानगर  
 (राजस्थान) ।

हिन्दी-व्यक्तिविशेषों के श्रम-वीथ

पलकों से डक सूं !

अच्छसि जस भगता है  
रोक सको—रोक सो !

बाहा था—तुमको प्रिय ! प्राणों में रख न  
अन्तर-घट में लपेट पलकों से डक सूं  
तुम सग रह जीवन में—प्रेमामृत पस न  
कास-बक चलता है  
रोक सको—रोक सो !

सूना है पग्य सवन ! कुछ कहो कहो  
बिछुड़ गए साथो सब, बाह अच गहो  
हो न मीन मुह न फेर रको, रक रहो  
पस-पस दिन डसता है  
रोक सको—रोक सो !

हाम विवक्ष अमु उत्स भरता ही जाता है  
सर का यह हा-हा रस बढता ही जाता है  
प्राण बिखरु दु स-सहित जसता हो जाता है  
प्रति पस सर गसता है  
रोक सको—रोक सो !

अच्छसि-अस भरता है, रोक सको—रोक सो !

जन्म-स्थान—भदव (भेनम)  
 पश्चिमी पाकिस्तान । जन्म  
 तिथि— १ जून १९३७ ।  
 विदेश—पाकिस्तान बनने से  
 २ माघ पूर्व ही इनके पिता का  
 स्वामान्तरण भाकरा हो गया  
 था । तब ही से सावर में बनी ।

## शविनाश



यह इनका विवाह हो गया है ।  
 इनकी पुस्तक 'रक्तमाई' पाठ्य की  
 छात्रा में काफी एक काव्य  
 संकलन में प्रकाशित भी हुई है ।  
 वर्तमान कथा— द्वारा जाली  
 दुर्दि वलीनसे सदागत बाजार  
 परिचाला ।

हिन्दी-कवयित्रीयों के प्रथम-जीत

तुम मुसकुरा दो !

मैं तुम्हारी सेकनी से लिख रही हूँ  
बीम मेरी तुम बजाकर गुनगुना दो !

घात्र मैं रखने बनी पदचिन्ह स्वर के  
रह की रज से तुम्हारी  
अनकहो-सी बात जो अब तक रही थी  
बोस म मैंने सँबारी

मैं तुम्हारी पीर लेकर गा रही हूँ  
स्पर्श कर तुम छार मेरे मनमना दो !  
मैं तुम्हारी सेकनी से लिख रही हूँ  
बीम मेरी तुम बजाकर गुनगुना दो !

हैं तुम्हारी ज्योति अम्बर से ऋती जो  
किन्तु उसमें लिख रही मैं  
बोल गा-गाकर तुम्हारे बन गई 'तम'  
उर्मो स्वयं सब लिख रही मैं

मैं तुम्हारा चौद मेकर जग रही हूँ  
तुम जसाकर दीप मेरा मिलमिसा दो !  
मैं तुम्हारी सेकनी से लिख रही हूँ  
बीम मेरी तुम बजाकर गुनगुना दो !

गोत का वह भूर पर मदिर सिलर है  
दीप को बेसा हुई है

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

उज्योति प्रबल मोट कब से बस रही पर—

घर्षना यह अनशुद्ध है  
मैं तुम्हारा ही भजन तो गा रही हूँ,  
भारती स्वीकार कर तुम मुसकुरा दो !  
मैं तुम्हारी भेषनी स सिखा रही हूँ  
बीन मेरी तुम बजाकर गुन्ना दो !

जन्म-स्थान — भेतम  
 पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) ।  
 जन्म-तिथि—७ अप्रैल १९२१ ।  
 शिक्षा—हिन्दी प्रमाकर, बी  
 ए । रचनाएँ—धनी तक विभिन्न  
 पत्र-पत्रिकाओं में ३० के लगभग



आशारानी प्लोरा

जानूँ क्या मनुहार प्यार की ।

जानूँ क्या मनुहार प्यार की प्रिय घम्बर से कभी न उतरे ।

महा दून्य का मौन इशारा—  
पाकर सौ-सौ बार निहारा  
कुसी कुसी धँसियाँ पषराह—  
सुसा नहीं घम्बर का द्वारा

बाँद न निकला, बिरण न फूटी बाले बादल कभी न छितरे ।  
जानूँ क्या मनुहार प्यार की प्रिय घम्बर से कभी न उतरे ।

प्रिय की छवि नित नई घटाएँ  
(निगल कल्पना जिन्हें सजाए)  
भक्ति करती सहज भाव से  
सपनों की सुरमई घटाएँ

बिज बने पर धुँधले-धुँधले चेतन-घट पर कभी न निखरे ।  
जानूँ क्या मनुहार प्यार की प्रिय घम्बर से कभी न उतरे ।

सुटी प्रतीक्षा की सब धड़ियाँ  
टूट चुकीं सपनों की कड़ियाँ  
प्रिय का हार पिरोते टूटा—  
बिखर गई मानस की लड़ियाँ

उस निपटुर से प्यार कहाँ का, जो अन्तर में कभी न उतरे ।  
जानूँ क्या मनुहार प्यार की प्रिय घम्बर से कभी न उतरे ।



जन्म-स्थान— नागपुर ।

जन्म तिथि— ३ सितम्बर,  
१८९२ । शिक्षा—एम ए  
(अवेबी) एल दी । प्रकाशित  
रचनाएँ—‘उपने मान धीर  
हुठ, बहु कौन नी बिप-मान’  
(उपन्यास) ‘सैव्या के घाँसू’  
(कहानी-संग्रह) । ‘नया बसेरा’  
(एकाली-संग्रह) प्रेस में—



## इन्दिरा 'सुपुर'

मंजिम धीर घीत' (उपन्यास)  
'मुबह के मुने' (कहानी-संग्रह)  
'एक लालि । एक घीत'  
(कविता-संग्रह) । वर्तमान  
कार्य— अवेबी प्राध्यापिका  
राजकीय महिला इष्टर कानिब  
प्रनापमई । स्वाधी पता— चम्प  
सोक ६३ नाठवर रोड  
इलाहाबाद ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

पथ का साथी कौन रहेगा ?

झोसी के सब फूल छीन लो पर मे कटि मत बीनो तुम  
कटि ले लोगे तो झोसो पथ का साथी कौन रहेगा ?

बार दिनों की घरे चाँदनी

धीप मगर जलता रहता है

सुख के मीस न साथ निभाते

पर बरसाव बसता रहता है

सुख को सारी धड़ियाँ ले लो पर दुख के क्षण मत छीनो तुम  
दुख से लोगे तो फिर झोसो, इन गीतों को कौन रहेगा ?

जब-जब भार सुहामी घाती

निधि का धाँसू गल जाता है

सौम सौवसी फिर आए तो

विन का सूरज डल जाता है

तुम मेरी मुसकान छीन लो पर बढनाम पीर मत बना  
पीड़ा न लोगे तो झोसो दुख का अन्दन कौन बनेगा ?

दिनभर ताप असह देता है,

अन्दा भीतमता भर देता

धौल कमी रो लेती है तो

गीत वही धाँसू हर लेता

मुमते तुम बरनाम छीम लो पर दापों का काप न लेना  
दाप मगर तुम ले लोगे तो यह जीवन कैसे बीतेगा ?

जन्म-स्थान— नामपुर ।

जन्म तिथि— ३ सितम्बर,  
१९३२ । शिक्षा—एम ए,  
(अंग्रेजी) एम टी । प्रकाशित  
रचनाएँ—‘सपने मान धीर  
हूँ’, ‘वह कौन थी’ ‘विय-यान’  
(उपन्यास) ‘सौम्या के घासू’  
(कहानी-संग्रह) । ‘जया बसेरा’  
(एकांकी-संग्रह) प्रेस में—



### इन्दिरा 'नूपुर'

मंजिल धीर मीठ' (उपन्यास)  
'सुबह के घूम' (कहानी-संग्रह)  
'एक सीमा । एक मीठ'  
(कविता-संग्रह) । वर्तमान  
कार्य— अग्रेजी प्राध्यापिका  
राजकीय महिला इण्टर कॉलेज  
प्रभापमड़ । स्थायी पता—जग  
लोक ६६ लाठर रोड  
हलाहाबाद ।

हिन्दी-नवयित्रीयों के प्रेम-गोष्ठ

पय का साथी कौन रहेगा ?

झोसी के सब फूल छीन लो पर मैं कटि मत बीनो तुम  
कटि से लोगे तो बोसो पय का साथी कौन रहेगा ?

चार दिनों की घरे चान्नी

दीप अगर जलता रहता है

सुख के भीत न साथ निभाते

पर मयाव क्षमता रहता है

सुख की सारी भड़ियाँ से लो पर दुख के कारण मत छीनो तुम  
दुख से लोगे तो फिर बोसो, इन गीतों को कौन रहेगा ?

जब-जब भार सुहानी घाती

निशि का भौंमू गल जाता है

साँझ साँझी फिर आएँ तो

दिन का सूरज डल जाता है

तुम मेरी मुसकान छीन लो पर बदनाम पीर मत मैना  
पीड़ा से लोगे तो बोसो दुख का अन्दन कौन बनेगा ?

दिनकर ताप असह्य देता है,

बड़ा धीतलता भर दत्ता

घाँस कभी रो बेती है तो

गीत वही भौंमू हर मत्ता

मुझसे तुम बदनाम छीन लो पर पापों का बोध न लेना  
पाप अगर तुम से लोगे तो यह जीवन कैसे बीटेगा ?

जन्म-स्थान — सीतापुर  
(उत्तर प्रदेश) । जन्म-तिथि —  
सन् १९१० । विशेष — आप  
का विवाह सन् १९२५ में श्री  
गयाप्रसादजी शास्त्री के साथ  
हुआ । श्री शास्त्रीजी के सम्पर्क  
में आकर आपने संस्कृत व्या-  
करण तथा साहित्य का अध्य-  
यन किया और धातुर्वेद की  
ब्यापकायी प्राप्त की । आज  
कल हैदराबाद में अपने पति



### इन्दिरादेवी शास्त्रिणी

वेब के साथ 'नारी आरोग्य  
मन्दिर' नामक संस्था का  
संचालन कर रही हैं । हिन्दी  
की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में  
आपकी रचनाएँ प्रकाशित  
होती रही हैं । वर्तमान  
पता — हाउस डॉ० गयाप्रसाद  
धातुर्वेद शास्त्री आश्रम प्रदेश  
धातुर्वेदिक अकादेमी मुरली  
नगर बाग, हैदराबाद (आन्ध्र) ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-दीप

से खस उनकी घोर ।

मायिक ! से खस उनकी घोर !  
छोटी-सी यह जीवन-नीका, क्य पाएंगी घोर ?  
प्रेम-सिन्धु में विरह-भँवर है छाँधी बिन्ता घोर  
घन बन नयन बरसते पल-पल, कौसी विपत्ति कठोर ?  
मायिक ! से खस उनकी घोर !

यश-अपयश, मुक्त-बुक्त सब भूली, जग का माता तौर  
में जाती है उसी दश को, जहाँ बसें चित चोर ।  
मायिक ! से खस उनकी घोर !

तुम हसते हो, मैं रोती हूँ, क्यों न तरंगि हो घोर  
मरकर ही फिर जीवन घन की कसूँ दया दूग-बोर  
मायिक ! से खस उनकी घोर !

छोटी-सी यह जीवन-नीका क्य पाएंगी घोर ?

।

जन्म-स्थान—मई दिल्ली।

जन्म-तिथि— ५ अगस्त १९३५ । शिक्षा— हिन्दी साहित्य में एम ए प्रथम श्रेणी में (नई हिन्दी कविता के विषय अध्ययन के साथ)। विशेष—कविता तथा उपन्यास के प्रतिरिक्त कभी-कभी कहानियाँ भी लिखती हैं। प्रप्रेमी साहित्य पक्ष में विशेष रुचि।



### इन्दु जन

चित्र-कला नृत्य और संगीत में भी पारंगत हैं। माकासबाड़ी के साधारण और टेसीबिजन के कार्यक्रमों में नाम लेती रहती हैं। 'आमोदय' के सम्यक् थी लक्ष्मीवन्धन की सुपुत्री। वर्तमान पता—गुरु निवास १६ हरियाबंस दिल्ली।

मेघ भरा आकाश सखी री ।

मेघ भरा आकाश सखी री निबुवा है बीराया ।  
कण-कण के सर में मधु भरता, जीवन-सा सरसाया ।

छन-छन पवन बहती मतवासी  
मिम्कन मुक्ती बह बूँधट वाली

गोरी के गालों पर सजनी कृमकृम है छितराया ।  
मेघ भरा आकाश सखी री निबुवा है बीराया ।

डफली, डोल मैजीर बाजे  
कजरी के मोठे सुर साजे

मन मन मनन पायल भुवर साजन रास रचाया ।  
मेघ भरा आकाश सखी री निबुवा है बीराया ।

पवन प्रमन बिखराए गोरी  
नयननवा की काजर डोरी

सजा, मवा हिरनी से मैना अदमृत साज सजाया ।  
मेघ-भरा आकाश सखी री, निबुवा है बीराया ।

मैंहदी गमक रही हाथों में  
दूज चाँद ने तैर नयन में

प्रधर-कुई में पुलक बसाया राग रग बरसाया ।  
मेघ भरा आकाश सखी री निबुवा है बीराया ।  
कण-कण के सर में मधु भरता, जीवन-सा सरसाया



कर्म तिथि—सन् १९३३ ।

प्रकाशित रचनाएँ— 'बाट  
बाटिन (पूणियाँ की घबिका  
लोक-भाषा के माध्य-बीठ का  
संकलन एवं आलोचनात्मक  
परिचय) । अप्रकाशित रचनाएँ  
'इन्दु मेला' (स्फुट बीठ-मग़ह)  
'कुन्ती का अभिषेक' (महु)



## इन्दुभासा देवी

कथा-काव्य) देवबानी (कण्ठ  
काव्य) 'पाँचाली' (प्रबन्ध-  
काव्य) घोर 'दुर्बी' मदिमी के  
लाकगीठ (निबन्ध-मग़ह) ।  
विशेष—बिहार के प्रख्यात  
समीक्षक की प्रताप साहित्य  
मंकार की पत्नी । पहले  
साहित्य साधना कहानी से  
प्रारम्भ हुई । बाद में कविता  
की ओर अभिरुचि । अतमान  
स्थायी पता—ग्राम ब पोस्ट—  
बबमीपुर विपहरिया बाया  
बिहारीगंज पूणियाँ (बिहार) ।

हिन्दी कविविधिया के प्रेम-मीन

यह मिसन रात !

रजनीगन्धा मेरे द्वारे कहती पुकार  
आकुल सौरभ का सुस-सुस जाता मुक्त द्वार  
मल्लिकार्जुन सज सेती फूसो का सिगार  
मदिराम पाँव से घाता है दक्षिणी वात !

यह मिसन रात !

मधुकर का खस सपना पसकों में उतराता  
नौसम धन की परछाईं में आ मुसकाता  
विष्णु-चितवन से मुक छिपकर है बछराता  
पुसकों की सिहरन से भर जाता मृदुल गात !

यह मिसन-रात !

अपकृष्ट रूप-स्वर्षि का पकज बन हृदय-हार  
मुसरित होता सासस पसकों में बार-बार  
कर पान न पायी रूप-सुखा जो-भर निहार  
माँसों-माँसों में सो जाती यह मिसन-रात !

यह मिसन रात !

जन्म-स्थान— भायलपुर  
(पाकिस्तान) । जन्म-तिथि—  
शुक्रवार १९१३ । शिक्षा—  
विभाजनोपरान्त दिल्ली में बड़ी  
बहन ने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई  
करके इन्हें मैट्रिक कराया ।  
प्रथम श्रेणी प्राप्त की ।  
तत्पश्चात् टकण चीसकर  
१९४९ में सरकारी कार्यालय  
में नौकरी करके अपनी बहन



### जमिला 'कुसुम'

सहित ३ प्राणियों के परिवार  
के पास में व्यवस्था । नौकरी  
करते हुए सन् १९३३ में  
बी० ए० १९४४ में बी० एड०  
किया । सन् १९४७ में एम०  
ए० । १९४९ में राष्ट्रीय सेवा  
में विभागीय । वर्तमान पता—  
इण्डियन ऑफिस ऑफ माइंस  
पी० २९ मिशन रो एक्सप्रेस  
कलकत्ता १३ ।

प्राण विकस हैं ।

प्राण विकस हैं स्मरण था गए धाज तुम्हारे गान ।

मुझको अपने कमल-करो में  
रक्खा जैसे गीत स्वर्गों में

भैरवाती ऊप्रा को धाधा दें हम स्वागत-गान ।  
प्राण विकस हैं स्मरण था गए धाज तुम्हारे गान ।

विषय नियन्त्रित है श्रीका में  
दुई मैं तुमको कीका मं

स्वप्न सत्य कर दो, जीवन का हो न जाय भवसान ।  
प्राण विकस हैं स्मरण था गए धाज तुम्हारे गान ।

आळगी आगर के तल म  
साळगी मुखा-मणि पल में

रल दूगी पय श्रीध तुम्हारे स्वागत का सामान ।  
प्राण विकस हैं, स्मरण था गए धाज तुम्हारे गान ।

बन्ना की बँदी से सजकर  
धाधा की मेहरी से रचकर

तुमसे मिलन को धाकृत हैं, करती हैं धाधान ।  
प्राण विकस हैं, स्मरण था गए धाज तुम्हारे गान ।

जन्म-स्वाध—भार (मध्य प्रदेश) । जन्म-तिथि—५ नवम्बर १९१८ । शिक्षा—बी० ए० साहित्य एल । विशेष—साहित्य में रचि करी भी नहीं बी । डॉक्टर बनने का



जमिना निरले

- विचार का । प्रवाह साहित्य की ओर मुड़ गया और वह अपना धर्म छोड़ गया । पूरा नाम जमिना निरले । वर्तमान पता—सहायक अध्यापिका जस्टिस हायर सेकेंडरी स्कूल बड़वाणी (मध्य प्रदेश) ।

मैं धमलागी-सी सौट गई !

संघर्ष सदा जग में पाया  
है धमर प्राण ! उसका साथ

जिस जाल पे मीढ़ बनाया था

वह जाल वहीं से टूट गई !

जो सहर हमारा सम्बल थी

वह सब-कुछ लेकर डूब गई !

सागर की कोई चाह नहीं

ठिरने की कोई राह नहीं

इस पार नहीं, उस पार नहीं

यन्त्रि हूँ तो मर्मपार नहीं !

जिसको धामे ठिर जाना था

पतवार वहीं से टूट गई !

संगो-साथो इस पार रहे

जो बचे सभी मर्मपार रह

माँझी भी हिम्मत हार गया,

उस पार का साथी कोई नहीं !

जिसको लेकर कुछ भास बेधी,

उसकी भी हिम्मत टूट गई !

हिन्दी-अबजिदियों के प्रेम-धीन

उस पार सूर्य की किरण पड़ो  
मैं धीस बिछाए इधर खड़ी

आगुत भी सपनों में खोई,  
पहले मुसकई, फिर रोई !  
जब चलकर समय स्वयं आया,  
मैं धनचामी-सी लौट गई !

जन्म-स्थान— सौलनी  
 (मुम्बई-नगर) उत्तर प्रदेश ।  
 जन्म-तिथि—१ फरवरी सन्  
 १९२८ । शिक्षा—एम० ए०  
 (दिल्ली) । विशेष—हिन्दी  
 की प्रायः सभी वन-पत्रिकाओं में

## उमिता बाथलॉय



कविताएँ, कहानियाँ एकांकी  
 एवं लेख आदि समय-समय पर  
 प्रकाशित होते रहते हैं ।  
 वर्तमान पता—१ बी० ईस्टर्न  
 कोर्ट के पीछे, नई दिल्ली १ ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत



सुसाया कब तुम्हें उर से !

तुम्हारे प्यार का वरदान से करके रहूंगी !

धबझा तुम करो मेरी दुसाया कब तुम्हें उर से  
जलन का छोर ही पकड़ा सदा ही व्यास के डर से  
दुखी हो बीम को छोड़ा करण-सी रागिनी भर के

तुम्हारे राग का अभिमान बन करके रहूंगी ही !

तुम्हारे प्यार का वरदान से करके ही रहूंगी ही !

अमर पर मा न पाई जो नयन को छोड़कर बल की  
सहर में संधार में पड़कर किनारे तोड़कर बल दी  
असम को क्या जमाएगी तड़पकर लौ म्वयं जल की

उसी अभिषाप का अवबाम बन करके रहूंगी ही !

तुम्हारे प्यार का वरदान से करके रहूंगी ही !

उमगकर फूल के मिस या सता ने घूम को घूमा  
कसकती याद बटि-सी उषर हँस घूम भी घूमा  
दुखों के घूम-उपवन में कहीं सुख फूल-सा खिलता

उसी तब ज्ञान का अनुमान बन करके रहूंगी ही !

तुम्हारे प्यार का वरदान से करके रहूंगी ही !

विधोगी की व्यथाओं में मिशन पुपबाप ही जसता  
मुक्त हो अशु के करण से मुक्त बह धाह में पसता  
कसक धीरे हुए युग की मिटाए से नहीं मिटती—

उन्हीं मावक क्षणों का ध्यान बन करके रहूंगी ही !

तुम्हारे प्यार का वरदान से करके रहूंगी ही !

जन्म-स्थान— फर्रुखाबाद  
(उत्तर प्रदेश) । जन्म-तिथि—  
१ मार्च १९४० । विधेय—  
सबसे पहला भीत 'बीबी' में  
प्रकाशित हुआ था । 'तान' की  
छाया में नामक काव्य-संकलन  
में कई रचनाएँ प्रकाशित ।  
'बीबी' के दूतपूर्व सम्पादक

## उर्मिला सिन्हा



अकुर भीमावर्तुह से विधेय  
प्रोत्साहित प्रकाशित । विवाह  
से पूर्व 'उर्मिला राठीर' नाम  
से लिखती थी । वर्तमान  
पता—घाट डी० एच० एम  
सिन्हा ४ ३ सिविल लाइन्स  
विक्टोरिया रोड जबलपुर  
(मध्य प्रदेश) ।

हिन्दी-कविधियों के प्रेम-भीत

जन्म-स्थान—साहौर ।  
 जन्म-तिथि—१४ मार्च सन्  
 १९१७ । शिक्षण—हिन्दी में  
 कुछ कबालियाँ और पीठ लिखे  
 हैं । कहानियाँ और लेखादि  
 विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में  
 प्रकाशित होते रहते हैं ।



कमल पुरी

‘उलझे तार’ नाम से एक  
 उपन्यास भी लिखा है जो  
 अभी ही प्रकाशित हो रहा है ।  
 वर्तमान पता—झारा भी बी०  
 ए० पुरी हाउस नं० ६-३२  
 गली नं० २६ रैपरपुछ  
 करीम बाग नई दिल्ली ५ ।

ये नैन बरस जाते हैं !

जब याद तुम्हारी प्रिय भुम्की है घाती  
तब जाने क्यों ये नैन बरस जाते हैं !  
आते हैं जब सावन में पावन वायन  
तब मन हो जाता है वियोग में पागल  
झाटा है जब मन सूनेपन में गोत  
तब याद तुम्हारी घाती है प्रिय प्रतिफल  
रिमझिम वर्षा में कोयल है जब गाती  
तब जाने क्यों ये नैन बरस जाते हैं !

जब बढ़ता बिरही रातों का सूनापन  
बादल रो रोकर हो आते हैं धायल  
बिजसी भी चमक चमककर छिप जाते हैं  
जैसे तुम लेकर मेरे मन का शतबल  
जब चाँद मुसाबा दे जाता प्रिय पथ पर  
तब जाने क्यों ये प्राण तरस जाते हैं !

दिन भर का यका हुआ पथी भी  
भा जाता है मोड़, रोज सन्ध्या को  
पर दूर वहीं, कुल के सागर में मेरा मन  
मारा करता है गिन-गिन हरदम गोते  
ज्यों ही सन्ध्या की सासी है छा जाती  
तब जाने क्यों ये नैन बरस जाते हैं !

जन्म-स्थान—घणमेर (राब-  
स्थान) । जन्म-तिथि—सन्  
१९२४ । विधाय—पुरानी  
विचारधारा का परिवार  
होने के कारण पढ़ाई की  
हिन्दी की परीक्षाएँ बरेल्लू  
राज्यपाल से ॥ उत्तीर्ण की ।  
१५ वर्ष की अवस्था में ही  
लिखने की प्रेरणा । सबसे



### कमला चौधरी

पहली कविता १९२६ में  
'नवभारत टाइम्स' में  
प्रकाशित । अब तो बूझते  
प्रमुख साप्ताहिक और मासिक  
पत्रों में भी रचनाएँ  
प्रकाशित होती रहती हैं ।  
वर्तमान पता—बी० १०७  
डबल स्टोरी रमेधनगर,  
नई दिल्ली ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

वेदना से छटपटाते प्राण !

वेदना से छटपटाते प्राण फिर क्यों जी रहे हैं ?

वे सुकोमल कल्पनाएँ  
औँ सिये उद्गार धविरल,  
फूल-सा कोमल हृदय  
भुरका गया सा चोट प्रतिपल

छलछलाते पाँसुघों मिस जहर फिर क्यों जी रहे हैं ?

वेदना से छटपटाते प्राण, फिर क्यों जी रहे हैं ?

सिसकियाँ वे करण जितनी  
बदनाएँ बिपम उतनी,  
भावनाएँ मुहुल जितनी  
यातनाएँ दुसह उतनी

झूठकर सम की भँवर में तैरकर क्यों जी रहे हैं ?

वेदना से छटपटाते प्राण फिर क्यों जी रहे हैं ?

२

जन्म-स्थान—इलाहाबाद ।  
 जन्म-तिथि—सन् १९०७ ।  
 विधेय—घायकी तीनों बहनों  
 कर्मविधियाँ थीं । समये से घायसे  
 बकी घीर बहनों में तीसरी स्व०  
 भीमती सुमद्राकुमारी बीहान  
 थी जिन्होंने हिन्दी-बलिता के  
 क्षेत्र में पर्याप्त यत्न घीर  
 क्पाति प्रचलित की । स्व०  
 सुमद्राकुमारी बीहान की मूर्ति

### कमलाकुमारी

घायने भी राष्ट्रीय आन्दोलन  
 में भाग लिया । इतर वर्षों से  
 दण्ड रहन के कारण घाय  
 आबकल साहित्यिक तथा  
 सार्वजनिक कार्यो से उपरत है ।  
 घायके पति डॉ० एच० विह  
 वाराणसी के दीर्घस्व होम्सो-  
 वैबी विभित्तक हैं । प्रकाशित  
 रचनाएँ—“जीवन की साधना”  
 (१९१८) । स्थायी बता—  
 हाउस डॉ० एच० विह होम्सोवैब  
 २/२ बेतगंज वाराणसी ।

हिन्दी-कर्मविधियों के प्रेम-भीत

मैं कब से यहाँ लकी हूँ ?

वह तरस हँसी प्रियतम की  
अब मुझ याद आ जाती ।  
भाँसू की धारा मानो  
स्वर्गगा है बन जाती ॥

भरकर दृग-जल से प्यासी  
चरणों को घोने भाई ।  
मैं कब से यहाँ लकी हूँ  
पर उन्हें देख क्या पाई ?

मैं विह्वल तड़पा करती  
प्रियतम-पद के दक्षन की ।  
यदि चरण-चारि पा जाती  
करती पवित्र जीवन की ॥

जीवन सर्वस्व हमारे,  
मैं राह देखती तब स ।  
इस स्थ-हीन दुनिया को  
तुम छोड़ गए हो जब से ॥

जस चुकी विरह-यावक में  
तब आब दौड़कर आग ।  
अपने उज्ज्वल मस्तक पर,  
क्या सार सगामे पाए ?



जन्म-स्थान—सबनठ ।

जन्म-तिथि—२२ फरवरी

१९८८ । प्रकाशित रचनाएँ—

‘उष्माह’ ‘पिक्कनिक’ ‘यात्रा’

‘वैमपन्न’ (कहानी-संग्रह)

‘सैयाम का बाम’ (स्वार्थ-

यात उमर सैयाम का सचित्र

हिन्दी काव्य क्वाण्टर)

‘आपन मरण जगत के हृषी

## कमला चौधरी

(हास्य-व्यंग्य की विविध कवि-

ताएँ) ‘विश्वों में मोरियाँ

तथा गान्धी बन जाऊँ’

(नालोपयोगी कविताएँ) ।

विशेष— उत्कृष्ट कहानी

लेखिका कवयित्री तथा

प्रख्यात सामाजिक धीर राज

नीतिक कार्यकर्त्री । वर्तमान

पता—विनीत कुम्हार चौकी

छाताब मेरठ (उत्तर प्रदेश) ।

हिन्दी कवयित्रियों के प्रम-गीत

मेरी याद तुम्हें आ जाए !

याद तुम्हारी प्रतिपक्ष नूतन, मेरी याद तुम्हें आ जाए !  
रेख-संचित है राह तुम्हारी, कौन पार जा ब्यथा सुनाए !

बैचे सभी हैं जटिल निपट में,  
मन के साथी-सहचर सारे  
सतत भ्रमण कर दूर-दूर तक  
थके कल्पना के हुरकारे

सीमा साँध न कोई पाया, जो सन्देश तुम्हें दे जाए !  
याद तुम्हारी प्रतिपक्ष नूतन, मेरी याद तुम्हें आ जाए !

व्यस्त कोश में विविध रूप से  
किन्तु विफल सब हैं व्ययन में,  
बपल विल घिन्तन घातुर हो  
चढ़-चढ़कर फैसला उमंगन में

बसुर कपोत न बन पाया जो धाम खूँट पाती पहुँचाए !  
याद तुम्हारी प्रतिपक्ष नूतन, मेरी याद तुम्हें आ जाए !

भाव-पुञ्जापा अमित सँजोए  
मन तल्लोम हुआ धावन मे  
साँस-साँस हो रही समर्पण  
हृदय-स्पन्दन-रत बन्दन में

प्राण-यहदमा तन में सम्मय बाहर जाने से भ्रमराए !  
याद तुम्हारी प्रतिपक्ष नूतन मेरी याद तुम्हें आ जाए !

स्वर, सय ताम सुटाती रसना,  
 स्वरव गँवाती प्रीति रीत में ,  
 व्यथा-कहानी कह जाती है  
 व्यस्फुट धनगढ़ सरस गीत में

सम्भव है संगीत मौन हो, तेरी वीणा से टकराए ।  
 याद तुम्हारी प्रतिपन्न नूतन, मेरी याद तुम्हें आ जाए !

कम-स्वान्त— औरंगा  
 (सानर) मध्यप्रदेश । कम-  
 तिथि—११ अगस्त, १९२५ ।  
 शिक्षा—एम ए । विशेष—  
 'धार्मिक और कवि' नामक  
 पुस्तक में सप्तमी सम्पादिका  
 जीयती रमावती और वे  
 आपकी रचनाएँ भी संग्रहित की

कमला जन 'जीजी'



हैं । आपके यहाँ भी ज्ञान  
 मार्ग पर चलकर राजस्थान  
 साहित्य प्रकाशनी में है ।  
 सम्पादित—'भारी जीवन' ।  
 आप कभी-कभी कहानियाँ भी  
 लिखती हैं । बतलाना पता—  
 परपर बालिका विद्यापीठ  
 रानी (राजस्थान) ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रम-गीत

स्वर, सय, ताल मुटाती रसना,  
स्वरय गैवाती प्रीति-रीत में  
व्यथा-कहानो कह जाती है  
अस्फुट धनमक सरल गीत में

सम्भव है सगीत मौन हो, तेरी बीणा से टकराए !  
याद तुम्हारी प्रतिपल मूकम मेरी याद तुम्हें आ जाए ।

अमर-रत्न— खैराना  
 (तामर) मध्यप्रदेश । अमर-  
 तिबि—१५ अमर, १६२५ ।  
 मिता—एन ए । बिद्येय—  
 'प्राचिनिक जैन कवि' नामक  
 पुस्तक में उसकी सम्पादिका  
 श्रीमती रमादानी जैन ने  
 आपकी रचनाएँ भी संग्रहीत की

कमला जैन 'जीजी'



हैं । आपके नाई भी ज्ञान  
 गारिज अथकम राजस्थान  
 साहित्य अकादेमी में हैं ।  
 सम्पादित—'नारी जीवन' ।  
 आप कभी-कभी कहानियाँ भी  
 लिखती हैं । वर्तमान पता—  
 नरहर बागिका बिद्यपीठ  
 एनी (राजस्थान) ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

एक चितवन ही बहुत है प्यार की !

भाव भीने नयन हमको प्रिय तुम्हारे  
भव नहीं है चाह कुछ उपहार की !  
मत कहो कुछ ये समझ पसकें उठाकर  
एक चितवन ही बहुत है प्यार की !

वज्र उर के वेश में प्रिय भाव हो तुम  
इस ब्रह्मसे-में हृदय का साज हो तुम  
बज रही सरगम कि इसका स्वर तुम्हीं हो  
गूँजती जो भाव वह आवाज हो तुम

किन्तु मन का एक कोना है धँसिरा,  
टोह है इसको नहीं ससार की !  
भाव भीने नयन हमको प्रिय तुम्हारे  
भव नहीं है चाह कुछ उपहार की !

भाव सहरोँ पर मटकती एक सिहरन  
भाव सागर के हृदय पर उबार-सा है  
कौन जाने तीर कितनी दूर है प्रिय  
इस तरी के तसे तो भँवर-सा है

भाव सुन लेंगे भँवर की हम कहाणी  
और जानेंगे विनसता बार की !  
भाव भीने नयन हमको प्रिय तुम्हारे  
भव नहीं है चाह कुछ उपहार की !

पीर से ही प्यार-सा कुछ है हमें तो  
प्यार में किसी जमान है और जो तुम  
आज इस तर में बड़े अंगार मेरे,  
जस निमित्त-भर द्वार से ही आज जो तुम

आ न जाना पास इसकी दाह के प्रिय  
है कसम तुमको हृदय के ज्वार की !  
भाव-भीमे मयन हमको प्रिय तुम्हारे  
अब नहीं है चाह कुछ उपहार की !  
मत कहो कुछ ये समझ पलकों उठाकर  
एक चितवन ही बहुत है प्यार की !

1



जन्म-स्वास्थ्य—बलवान ।

जन्म-तिथि— २५ दिसम्बर  
सन् १९१२ । शिक्षा—महिता  
कासिब सजगड । विशेष—  
पारिवारिक बाधावरण प्रारम्भ  
से ही साहित्यिक रहा । अपने  
माता की सौहार्दपूर्ण शिक्षा से  
विशेष प्रभावित । पञ्चवीं और



## कमला बोधित

कहानियों की ओर विशेष  
प्रवृत्ति । रचनाएँ 'अबला',  
'बलिष्ठ भारती', 'भारती',  
'मानव', 'रेखा', 'युवक',  
'दीदी', 'युव छात्रा', 'मस्ताना  
बोनी' आदि पत्र-पत्रिकाओं में  
प्रकाशित होती रही हैं । स्वाधी  
यता—कमल निवास काँडा  
(महापट्ट)

हिन्दी कवयित्रियों के ग्रन्थ-दीप

ससि वे घाए वे एक बार !

जब नयन अश्रु की मासा से  
चरणों पर हो जाते वसिहार  
विकल वेदना बसक उमगती  
मूली स्मृतियाँ बन साकार  
ससि वे घाए वे एक बार !

अन्तर-बीणा की झुकारें  
विलराती हैं माधक परग  
घी' दूर दितिज के तट पर वह  
है कौन छेड़ता मधुर राग  
क्या वे घाए वे एक बार ?

खनम धो जाती मधु प्याल  
रस-कमल सुटाती जब बलियाँ  
भुक भूम-भूम बहता समीर  
सीधी जाती मधु से गलियाँ  
ससि तब घाए वे एक बार !

अन्तरमन के वातायन से  
है कौन झँकता कर पसार  
क्या प्रियतम घाए हैं मिसमे  
नव खोस पसक के स्वप्न-द्वार  
ससि वे घाए वे एक बार !

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

जसन से प्रीत मुझे है मोत ! यही है मम जीवन-संगीत ।

बनी मिट्टी की मेरी देह  
बना मिट्टी का मेरा गेह  
भरा मिट्टी का ही मुस्नेह  
दीप की ज्योति भुसिका-कीत

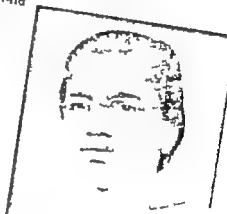
जसन से प्रीत मुझे है मोत ! यही है मम जीवन-संगीत ।

जसम का मुझमें है जवसान  
जसन से ही उसकी पहचान  
हूँ मैं गगन न इसका ज्ञान  
जसन की छावण है यह रोष

जसन से प्रीत मुझ है मोत ! यही है मम जीवन-संगीत ।

जन्म स्थान—दिल्ली ।  
 जन्म तिथि—१ जनवरी सन्  
 १९२८ । शिक्षा—हिन्दी प्रमा-  
 ण्ड, साहित्य रत्न साहित्या-  
 लकार । प्रकाशित रचना—  
 'घाप या बरवान' (उपन्यास)  
 विशेष—हिन्दी साहित्य सम्मे-  
 लन प्रयाग की स्थायी समिति

कमलेश सक्सेना



की सहायता । घापकी रचनाएँ  
 प्रायः 'साप्ताहिक, हिन्दुस्तान'  
 तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में  
 प्रकाशित होती जाती हैं ।  
 दो-तीन पुस्तकें मुद्रणार्थ तैयार  
 हैं । वर्तमान काल—प्रतिपक्ष  
 कमलेश कालिका विद्यालय  
 काठार सीताराम दिल्ली ।

हिन्दी-व्यक्तिगतों के प्रथम-गीत

‘नहीं निर्बन्धी तुम, नहीं बे रहम तुम !’

तुम्हारी हँसी और मेरे रुदन को

न जाने नियति आज क्यों तोलती है ?

उधर मिला-मिलाते हैं तारे गगन में,  
इधर मोस के विन्दु झू पर बरसते,  
उधर केलि करते बिह्वल हैं बादल,  
इधर धूँव को भी हैं चातक तरसते

तुम्हारा परस प्राप्त करने विकस-सी

हवा कुञ्ज में काँपती-बोसती है !

तुम्हारी हँसी, और मेरे रुदन को

न जाने नियति आज क्यों तोलती है ?

सिमिर-आवरण को धरा नीरकर तुम,  
कभी मन-हरन निज मलक तो बिलाओ  
कुसुम को जो भीगी हुई पतियाँ हैं  
उम्हें अपने हाथों से पोंछो, सजाओ

यह मोती के दाने तुम्हारे लिए हैं,

सवा जग को धौलें जिन्हें रोसती हैं !

तुम्हारी हँसी, और मेरे रुदन को,

न जाने नियति आज क्यों तोलती है ?

न जाने तुम्हारे धरण के पुटों तक  
पहुँच पायगी कब दसो आह मेरी  
न जाने कि किस दिन तुम्हारे नगर तक  
मुझे प्राण ! पहुँचायगी राह मेरी

‘नहीं निर्वयी तुम नहीं बे-रहम तुम’,  
सितिल पर से कोई किरण बोलती है !  
तुम्हारी हँसी धीर मेरे स्वन हो,  
न जाने नियति आज क्यों तोसती है ?

जन्म-स्थान—मुरादाबाद ।

जन्म-तिथि—२५ मई १९२९ ।

शिक्षा—एम ए० (इतिहास तथा हिन्दी) । प्रकाशित रचनाएँ 'जीवन-दीप' 'ऊष्मा' (गद्य काव्य-संकलन) । विशेष—गद्य-काव्य-संज्ञान की दृष्टि में विशेष ख्याति प्राप्त की ।



## कान्ति त्रिपाठी

प्रकृति धीर जीवन के अनुभव ही रचनाओं के मुख्य प्रेरणा स्रोत । सृजन के लिए ही धार्मिक कान्ति के समर्पण । सन् १९४० से मुरादाबाद के मोहम्मदास गस्म कान्ति में प्राध्यापिका । खादी पता—लोहामण्ड मुरादाबाद ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रम-जीत

प्राण ! धनजाने निःकटतर था रहे हो !  
 मैं किसी के चरण की गति प्रणति हूँ धाराधना की

ढगमगा जाएँ न उनके चरण पथ में  
 कठिन पथ है गहन गुम्फित बोधिकाएँ  
 सङ्कष्ट जाँ न वह विदवास-नद में  
 कठिन भद्र है कौन वह तृप्णा बुझाए  
 मैं किसी के प्राण की ऊँचा कसक हूँ कामना की !  
 मैं किसी के चरण की गति प्रणति हूँ धाराधना की !

भावना जो नी उसे पायेय माना  
 कामना को सद्य मानो ध्यय मानो  
 मधुर मानो वेदना रस पेय मानो  
 यह हसाहस भ्रमूत है मानो न मानो  
 जो निदा के स्वप्न उनमें प्रगति हूँ उदमाधना की !  
 मैं किसी के चरण की गति प्रणति हूँ धाराधना की !

चरण ध्वनि में स्मृति गुंजाते जा रह हो  
 इस विदा को एक धमना पा रह हो  
 एक धम हित सौ धमों को ला रह हो  
 प्राण धनजाने निःकटतर था रह हा

मैं चरण की भूम हूँ या सिद्धि भगसभ गाधना की !  
 मैं किसी के चरण का गति प्रणति हूँ धाराधना की !  
 हिन्दी-कवयित्रियों के प्रथम-गीत



जन्म-स्थान — मईमपुर  
(जलाल) उत्तरप्रदेश । जन्म-  
तिथि—जनवरी १९३३ ।  
शिक्षा—आगरा विश्वविद्या  
लय से एम० ए० हिन्दी  
उपग्राहक और कथानक उत्प-  
न्न पर शोध-कार्य (अभी  
पूरा नहीं हुआ) । विशेष—  
हिन्दी के उत्तम कहानीकार  
श्री श्रीकारनाथ श्रीवास्तव की



## कीर्ति चौधरी

सहस्रान्वसी और प्रख्यात  
कवयित्री श्रीमती सुमित्रा  
कुमारी सिनहा की सुपुत्री ।  
पूरा नाम कीर्तिबाला सिनहा ।  
प्रकाशित रचनाएँ—‘कविताएँ’  
‘तीसरा सप्ताह’ (अज्ञेय द्वारा  
सम्पादित अंकज में कविताएँ  
संकलित) वर्तमान पता—  
द्वारा श्री श्रीकारनाथ श्रीवास्तव  
१ भगतसिंह रोड विले पार्क  
पश्चिम बम्बई ४७ ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-नील

मन की मूर्ति स्वयं गढ़ लूंगी ।

चाहे जिस मन्दिर के पट को धब सोसो  
मैं अपने मन की मूर्ति स्वयं गढ़ लूंगी !

मटकी राहों में मुझे न रोना भाता  
मेरे खरणों को बढ़ते जाना भाता  
चाहे जितने अस्पष्ट बोल धब बोसो

मैं अपने मन क भाव समझ ही लूंगी !  
मैं अपने मन की मूर्ति स्वयं गढ़ लूंगी !

मेरी बुझता पर तुम्हें दया यदि धाए  
मेरे साहस की कथा तुम्हें भरमाए  
चाहे जितने भी निष्ठुर तब तुम हो सो

मैं अपने अमर दया स्वयं कर लूंगी !  
मैं अपने मन की मूर्ति स्वयं गढ़ लूंगी !

तो वरदानों की छांह बनाए रहना  
'साधना सफल हो सिद्धि मिले यह कहना  
चाहे जिस दिशि मैं धब नीका स डोसो

मैं अपने तट की खोज स्वयं कर लूंगी !  
चाहे जिस मन्दिर के पट को धब सोसो  
मैं अपने मन की मूर्ति स्वयं गढ़ लूंगी !

जन्म-स्थान — दिल्ली ।  
 जन्म-तिथि—१२ अक्तूबर,  
 १९१६ । शिक्षा—बी० ए०  
 (ऑनर्स) बी० टी० । विशेष-  
 दिल्ली और पंजाब-विश्व  
 विद्यालय की बी० ए और  
 बी टी० परीक्षाओं में महि  
 साओं में प्रथम आने के  
 कारण स्वर्ण-पदक प्राप्त किया ।  
 दो वर्ष तक लाहौर के हुंहराज  
 महिला ट्रनिंग कालिज में



### कुन्धकुमारो जन

बी० टी धेसू की पत्नी  
 पिका । दिल्ली के प्रसिद्ध शिक्षा-  
 प्रेमी फतहचन्द जैन बदायी  
 की पुत्री और 'ज्ञानोदय' तथा  
 भारतीय ज्ञानपीठ के सम्पादक  
 एवं नियामक श्री लक्ष्मीचन्द्र  
 जैन की बचपत्नी । स्वाधी  
 बता—प्राहू जन मिमर  
 ६ अमीपुर पार्क पोस्ट  
 कसकता—२७ ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-पीठ

मानस में कौन छिपा जाता ?

जीवन में प्यार उठा करके मानस में कौन छिपा जाता  
मेरे उन्माद भरे मन को धनवाने में बहला जाता

मानस में कौन छिपा जाता ?

द कण में सुख-बुख की भाँकी इस पल विराग, उस पल रागी  
सठती-मिटती-सी पीड़ा का उलझ जाता मुसमल जाता

मानस में कौन छिपा जाता ?

छवि रजत-सुधा बन रजनी में मादकता सहाराता जो म  
नित्यका माधुर्य छेज बनकर, रवि-पथ पर बिखर सिमट जाता  
मानस में कौन छिपा जाता ?

जन्म-स्थान—शाम मरवाग  
(मुजफ्फरपुर) बिहार। जन्म-  
तिथि—सन् १९४१। शिक्षा—  
बी० ए० (ऑनर्स), इस  
वर्ष बिहार - विप्लविद्या  
लय से एम० ए (अंग्रेजी)  
की परीक्षा दी है। विशेष—  
बिहार के हस्त्य-रस के सुप्रसिद्ध  
कवि श्री रामजीवन शर्मा



## कुमारी कुमुद

‘जीवन’ की सुपुत्री। प्रकाशित  
रचनाएँ—‘पुनश्चरियाँ’ नामक  
बाधोपयोगी कविताओं का पहला  
संग्रह १९६० में प्रकाशित।  
‘कुमुदिनी’ १९६० में प्रकाशित।  
कई कविता-संग्रह अप्रकाशित।  
सम्प्रति मुजफ्फरपुर के महन्त  
बर्तनदास महिला काश्मिर में  
अंग्रेजी की सहायिका हैं।

हिन्दी-कवयित्रियों ॥ प्रेम-जीत

सिसकता प्यार से सूंगो !

घरबू की पूणिमा से हास का वरदान तुम माँगो  
धमा से घासुधों का धर्म्य मैं साभार से सूंगो !

बमन में बिजसते किसलय  
धगर हैं दीक्षत सुन्दर,  
विजय का मौन जजर बूँद  
क्या सूता नहीं धम्तर ?

सिन्धी कमियों मिले धनियों मरा मधुमास तुम माँगो  
झडे पत्तों भरा मैं बिखरता पतझार से सूँगी !

नहीं यह बात, है मिसला  
म मुझको स्नेह फूलों से  
नही मासूम क्यों फिर भी—  
उमड़ना प्यार घूँसों से ?

मये राक्षस का सित मसूण रश्मि बितान तुम माँगो  
प्रसर तिग्मासु क मैं दहकते धंगार से सूँगी !

उपा का मुसकपता मुस  
तुम्हारा मुग्य करता मन,  
मुझे पर प्रेरणा देते  
निगा के बरसते लोचन,

किसी नव आगता के अधविसे धरमान तुम माँगो,  
बिरहिणी राधिका का मैं सिसकता प्यार से सूँगी !  
घरबू की पूणिमा से हास का वरदान तुम माँगो,  
धमा से घासुधों का धर्म्य मैं साभार से सूंगो !

जन्म-स्थान—बाणखुसी ।।

जन्म तिथि — १० अगस्त

१९४१ । शिक्षा—बी० ए ।

विशेष—कहानी और कविता

लिखने में बहुततम रचि ।

अवधन हो दर्जन कहानियाँ



## कुमारी कुमुद

और उतनी ही कविताओं का  
प्रकाशन । व्यास पंथी  
नामक एक उपन्यास प्रकाशन  
की प्रतीक्षा में है । वर्तमान  
वर्ष—द्वारा भी प्रकाशक  
२/४४ अथवा बाणखुसी ।

हिन्दी स्वयंशिक्षा के प्रमोद

गायन बनकर धाए हो !

मेरे मन के अम्बर में, द्यामल घन बनकर धाए हो !

मेरी सुभियो की पलकों पर  
पीड़ा के धाँसू विकराना  
मेरे चर की गहराई में  
साँसों-सा यह आना-जाना

किसी मुहागिन के उमुक्त समर्पण से मन धाए हो !  
मेरे मन के अम्बर में द्यामल घन बनकर धाए हो !

किसी धके पाँखी मोहन का  
मुझको अब आभास हो रहा  
दूर लग रहा जो सदय-स्थल  
वही हमारे पास सो रहा,

किसी कण्ठ से मधुर प्रेम का गायन बनकर धाए हो !  
मेरे मन के अम्बर में द्यामल घन बनकर धाए हो !



जन्म-स्थान—बन्नीसी

(गुरदासपुर), उत्तर प्रदेश ।

जन्म-तिथि—सन् १९३१ ।

शिक्षा—सन् १९४९ में प्रयाग

महिला विद्यापीठ से 'सरस्वती'

१९५० में 'साहित्य-रत्न',

१९५७ में एम० ए० (हिन्दी)

आगरा विश्वविद्यालय से ॥

कार्य—१९५७ से जून १९६१

तक बन्नीसी के पर्स कानिज

में हिन्दी की प्राध्यापिका रही ।

अब दिल्ली के एक सरकारी स्कूल

### कुमारी मधु

में हैं । रचनाएँ—'स्वयंता'

नामक काव्य-संकलन प्रघ में हैं

और 'सामर-सीपी' नामक संग्रह

की पांडुलिपि उपलब्ध है । 'आल

गीतों' के संकलन भी प्रकाशन

की प्रतीक्षा में हैं विशेष—

१९६१ से कवि-जीवन प्रारम्भ ।

कहलियाँ, और केन्द भी प्रकाश

नितली हैं । वास्तविक नाम

सरस्वती बाण्ड्य । वर्तमान

पता—ए-५/२७ प्रताप बाग

दिल्ली ६ ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत



प्राणों के समीप तू धाया क्यों ?

मैंने जितने ही चित्र बनाये गीतों के

उतना ही प्राणों के समीप तू धाया क्यों ?

उस बन्धन में बँधना था कितना मचुर मुझे  
जिसको तैयार किया तारे उच्छ्वासों ने  
उस कारा में फिर हृदय-कसी मुस्कानी थी  
जिसका निर्माण किया ठर बिन्दुवासों ने

जब-जब भी संसारात्त ने मुझे बुलाया था,

तब सहरोँ पर बिठता तट पर पहुँचाया क्यों ?

मैंने जितने ही चित्र बनाये गीतों के

उतना ही प्राणों के समीप तू धाया क्यों ?

मैं भटक रही जब तक मन की उन मस्तिष्कों में  
जिनमें स्वर गूँज रहा तेरी वासुगिया का  
कैसे वे हृदय मुसा पाईगी वह निर्मम  
जिनमे जाहू बोला मेरी पायसिया का

जितनी नरास्य तिमिर से डरकर धायी मैं,

उतना जीवन से करना प्यार सिन्हाया क्यों ?

मैंने जितने ही चित्र बनाये गीतों के

उतना ही प्राणों के समीप तू धाया क्यों ?

सूने तो हूँ लिया अपनी उस मृगधा को  
 जिसके नयनों से छसका करती रस-गागर,  
 पर मेरा जीवन-गोकुल तो वीरान हुआ  
 कह दे कैसे इसमें उमड़ेगा सुख-सागर  
 तू सपनों की मधुरा में उत्सव निरूप्य बना  
 पर मेरे मन से अब तक निकल न पाया क्यों ?  
 मैंने जितने ही चित्र बनाये गीतों के  
 उतना ही प्राणों के समीप तू आया क्यों ?

जन्म-स्थान—जीवमगुर,  
सह्या (बिहार) । जन्म-  
तिथि—२७ सितम्बर, १९३६ ।  
विशेष—बिहार की तई पठरी  
झूई कवयित्री । १९२३ के  
साहित्य रचना प्रारम्भ ।  
साहित्य राजनीति एवं साप्ता-  
हिक कार्यों के प्रति विशेष रुचि

## कुमारी राधा



घोर जलाह । कविदासों के प्रति  
रिक्त कहानियाँ घोर विषम  
भी लिखती हैं । प्रकाशित  
रचना—‘छरगु काष्ठों की  
हरिलों’ । रचना की—  
नामेश्वर नामोनी बाकर मंग  
पटना—४ ।

इन्दी-कवयित्रीयों के जेव-जीव

तुम्हारी याद सताती है !

तुम्हारी याद सताती है !  
याद की टीस बढ़ाती है !

घाम पर बोस रही कोयल  
दर्द कुछ बोस रही कोपल  
भाँस से घपने तुम मोझल  
कहीं छिप बिरहून गाती है—  
'तुम्हारी याद सताती है !'

कहीं पर बजती मादक बीन  
नयन से निदिया सेती छीन  
तड़पती भर में बोमल मीन  
तुम्हें छे पुरवा जाती है !  
याद की टीस बढ़ाती है !

सभी में कहती है कुछ बोस  
मुझे दे शुम्भन कुछ घनमोल  
भ्राण से भ्राण खरा ने मोस  
उमरिया सीती जाती है !  
याद की टीस बढ़ाती है !  
तुम्हारी याद सताती है !

जगन्-स्वात—बुलन्दशहर ।  
 जगन्-सिन्धि—घग् १६३२ ।  
 सिता—घाहिर-रत्न हिन्दी  
 प्रमाकर, बिजुपी एम ए ।  
 बिद्युत—बचपन से ही पद्य में  
 रुचि रही । एक बार पढ़ने से  
 ही कमिताएँ कष्टम हो जाती  
 थी । प्रायः साक्षात् वाली गई

## कुसुमकुमारी सिन्हा



हिन्दी घोर इपर उबर होने  
 वाले कवि-सम्मेतों में भव  
 सेजी रही है । घागके पीछों में  
 मित्रनी पीड़ा होती है उनके  
 वही घबिद घावकी वाली में  
 लोव होता है । कमायी पता -  
 २६ बिजपुरी रेलवे रोड  
 बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश) ।

हिन्दी-कविजिजी के प्रेम-बीठ

सखि, उनको पापाए न कहना ।

इन खचल नयनों से छिपकर वह मेरे मन में रहते हैं  
मेरी सिसकी मरी चाहों सब छुपके-छुपके सहते हैं  
तुम मेरे नयनों से छिपने को उनका अभिमान न कहना ।

सखि उनको पापाए न कहना ।

वह मेरे नयनों की उज्ज्वल एक बूँद-से कछुए सजल हैं  
वह मेरे प्राणों के झिलमिल दीपक-से सस्नेह बिकसल हैं  
तुम मेरे प्राणों में रहने वाले को निप्राण न कहना ।

सखि उनको पापाए न कहना ।

वह मरी आशा-से मोमे, वह अभिसाया-से अस्तु है  
वह मेरी चाहों-से खचल वह मरी साधों-से रुढ़ है  
तुम मेरे प्रति नीरवता को उनका निष्ठुर मान न कहना ।

सखि उनको पापाए न कहना ।

वह मेरी पीढ़ा-से आदक वह मेरी सुधि-से कोयल हैं  
वह मेरे सपनों-से सुन्दर, वह मेरे मन-से निश्कल हैं  
तुम मेरे संसति के जिर पड़पाने को धनवान न कहना ।

सखि, उनको पापाए न कहना ।

जन्म स्थान— बबार्न  
 उत्तर प्रदेश। जन्म-तिथि—  
 १३ जुलाई १८९२। विधेय—  
 रचना-काल सत्रमग १ वर्ष  
 है। सबसे पहली कविता  
 बबार्न के एक कवि-सम्मेलन में

गिरीश रस्तोगी



वही। कविता के अतिरिक्त  
 नृत्य अभिनय तथा बहानी  
 आदि में कवि। वर्तमान पता—  
 द्वारा डॉ० जी० डी० रस्तोगी  
 मोरघपुर विश्वविद्यालय  
 मोरघपुर (उत्तर प्रदेश)।

हिन्दी-कविविदों के प्रेम-पीठ



तुमको पाकर सब-कुछ पाया !

तुम्हीं पाकर सब-कुछ पाया, सब सोने की चाह नहीं है !  
पान में बिठना कुछ सोया, फिर भी कोई चाह नहीं है !

हँसने की बेधा छोटी-सी  
मधु बिकराती गाती आई  
जब-जब तुमको पास न पाया  
रह रहकर झँसियाँ भर आई

दिल में इतना दर्द छिपाया जब कोई भी चाह नहीं है !  
तुमको पाकर सब-कुछ पाया, सब सोने की चाह नहीं है !

टेन्ने-मेढ़े पथ पर बसकर  
कितनी ही उलझल आई हैं  
जब-जब बाँटों पर पग पहुँचे  
महक सुमन की भी आई है

फूलों के हो पथ से गुजरूँ ऐसी कोई चाह नहीं है !  
तुमको पाकर सब-कुछ पाया सब सोने की चाह नहीं है !

नित नित बी घाघाएँ सेकर  
कौन निराशा मन में बाँधूँ  
जीवन धीरे मरण दानों है  
किसको छोड़ूँ किसको माँधूँ

सोने का अधिकार मिमा है दुनिया की परवाह नहीं है !  
तुमको पाकर सब-कुछ पाया, सब सोने की चाह नहीं है !

जन्म-स्थान— सिउड़ी  
 शिक्षा बीरछूमि (बनास)।  
 जन्म-तिथि—सन् १९३४।  
 शिक्षा—पटना विश्वविद्यालय  
 से हिन्दी में बी ए (गौरव)  
 तथा एम ए। धारकल उसी  
 विश्वविद्यालय से हिन्दी

## भीता श्रीवास्तव



'आह्वय में राष्ट्रीय सेवा'  
 विषय पर लोच-आर्ष में संलग्न।  
 विशेष—सन् १९५२ से लिखना  
 प्रारम्भ किया। वर्तमान पता—  
 हिन्दी प्राध्यापिका बीउम कुड़  
 अहिना कालिङ गया (बिहार)।

हिन्दी-कवयित्रियों के श्रेय-पीठ

## सुमन समझकर रौंद न देना !

पक्ष में शतदल बिछा रही हूँ, शक्ति मन से अपने  
संभल-संभल पग रखना प्रियतम बिखर न जाएँ सपने

वे सपने वंचित जीवन की, संचित निधियाँ मेरी  
कंठक्रमय राहों में निर्मम, याद बिछी हैं तेरी

बहुतेरी स्वप्नित पान्थुरियाँ, व्यथा मोस से मूलमल  
प्रतिपल कुम्हलाने का भय है परिमलमय है शतदल

सोनुप भाँखें, भलि की पाँखें गूँथ रही थीं कब से  
छूट न जाए मधु का सबय, लिसे न उनके रब से

अमल कमल-दल भमिसिंचित है पावन भाँसू-जल से  
सुमन समझकर रौंद न देना, लगते अन्तस्तल से

जन्म स्वाम — बरेली ।  
 जन्म-तिथि—२२ मकर  
 १६२७ । शिक्षा—इण्टर एम०  
 टी सी० हिन्दी प्रभाकर,  
 साहित्य रत्न, छाह्रित्यात्मकार ।  
 विदेश —हिन्दी के प्रख्यात पत्र

### चन्द्रकान्ता



काद, लेखक और 'नव भारत  
 टाइम्स' दैनिक के सुतपूर्व प्रधान  
 सम्पादक आचार्य चन्द्रसेन  
 आर्य जी सुपुत्री । स्थायी  
 ठेका—दारा जी चौहरीमल  
 मुल्ता, मन्दिर बागी गली गान्धी  
 नगर, दिल्ली ११ ।

हिन्दी-अध्यापिकाओं के प्रेम-गीत

क्या तेरा ससार यही है ?

कर्मों में चक्फेरी खाँधी  
यही चतुर्दिक् दुःख की खाँधी  
जीवन देकर मिले उपेक्षा, क्या जग का व्यापार यही है ?  
क्या तेरा ससार यही है ?

प्राणों में जलती हो ज्वाला  
हँसती मुस्कानों की भाषा  
नीर मरे भी नीरख प्यासे, क्या भागव का प्यार यही है ?  
क्या तेरा ससार यही है ?

जहाँ प्रभाव स्वयं जीवन है  
असफलताएँ ही जीवन हैं  
दुःख में कैसे शिव, सुन्दर क्या संयम का सार यही है ?  
क्या तेरा ससार यही है ?

विस्तृत नभ में तारक-भासा  
विपत्ती क्षिपती कर उभियासा  
जन्म-मरण की मुका क्षिपी में तब निर्दय व्यवहार यही है ?  
क्या तेरा ससार यही है ?

भलक न सच की मित्र पाती है  
स्वप्न भृष्टि ही रज पाती है  
नियति विषमता और विपर्यय क्या निमग्न उपहार नहीं है ?  
क्या तेरा ससार यही है ?

जन्म-स्थान—भोसी (उत्तर  
प्रदेश) । जन्म तिथि— १४  
जुलाई सन् १९३३ । शिक्षा—  
बी० ए० हिन्दी प्रमाकर ।

चन्द्रकान्ता वर्मा



विशेष कवि — समाज-सेवा ।  
वर्तमान पता—४ सी० १६०  
साजपठनगर, भाई विस्मी १४ ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

४२

पर कर्क क्या ?

मैं तुम्हारी प्रीति को पहचानती हूँ, पर कर्क क्या ?

यह कहाँ सम्भव कि बन्धन  
साज के में तोड़ डारूँ,  
मैं विवश हूँ, किस तरह से  
बात यह बाहर निकालूँ  
दर्द हूँ जिस में दबाए  
प्राण मैं प्राण छिपाए—

इस नई धनरीति को मैं जानती हूँ पर कर्क क्या ?  
मैं तुम्हारी प्रीति को पहचानती हूँ, पर कर्क क्या ?

स्वप्न की दुनिया बसाई थी  
कभी, है याद मुझको,  
कल्पनाओं में सजाई थी  
कभी, है याद मुझको,  
पर वही तो स्वप्न मन को,  
गुम से, धब छेदते हैं—

बढ़कों के गीत भी मैं जानती हूँ, पर कर्क क्या ?  
मैं तुम्हारी प्रीति को पहचानती हूँ, पर कर्क क्या ?

हिन्दी-कवयित्रियों ■ प्रेम-वीथ

हम नदी के दो किनारों  
 की तरह से दूर हैं धब  
 मिलन की आशा हृदय में  
 पर बहुत मजबूर हैं धब  
 पढ़ सका है कौन धब तक  
 भाग्य में बिधि ने सिखा जो—

मैं निरुर ससार की इस पीत को भी जानती हूँ पर कर क्या ?  
 मैं तुम्हारी प्रीति को पहचानती हूँ पर कर क्या ?



जन्म-स्थान—इलाहाबाद ।  
 जन्म-तिथि— २१ अप्रैल  
 १९२४ । विद्वान्—हिन्दी की  
 कोकिल-कण्ठी कवयित्री और  
 साधिका । विवाह के उपरान्त  
 कविता की ओर प्रवृत्ति ।  
 संस्कृत के उत्कृष्ट विद्वान् और  
 व्याख्याता स्व० चन्द्रसेखर  
 धारवी के अनुच की बर्मपत्नी ।



### चन्द्रमुखी सोन्या 'सुधा'

इनके पति के रीति में 'सुधा-  
 प्रस' नाम से एक प्रेस और  
 साहित्यिक पुस्तकों की दुकान  
 खोल रखी है । प्रकाशित रच-  
 नाएँ—'पराय' और 'बनना'  
 (कविता-संग्रह) । अप्रकाशित  
 रचनाएँ—'नाम के नीचे' (पद्य-  
 नीतों का संग्रह) । वर्तमान  
 पता— सुधा प्रेस रीति  
 (मध्य प्रदेश) ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

## प्रीत बन जाओ !

झूकर प्राणों की पीर, प्रीत बन जाओ !

जो कुछ सुसम्पन्नी थी, आज उसे उसम्पन्न दो  
जो कुछ उलझी थी, आज उसे मुसम्पन्न दो  
मेरे घामू के सावन आज मुखा दो  
में चाह रही हैं मुझको आज दुखा दो  
नयनों के नहीं स्नेह-नीति बन जाओ !  
झूकर प्राणों की पीर, प्रीत बन जाओ !

तुम स्नेह-स्वाति बन, जीवन भर तरसाओ  
मेरे बित्त-बातक को न अधिक दरसाओ  
भयों की यदि मुसकान बुराओ जानें  
इतना कर दो तो धन्य भाग में मार्ग  
तुम वतमान के बिर प्रतीत बन जाओ !  
झूकर प्राणों की पीर, प्रीत बन जाओ !

मेरे सम्मुख झूठा शृङ्गार नहीं है  
स्वप्नित आशाओं का आघार नहीं है  
मेरी बीणा के बिल्लरे सार सजा दो  
इंगित से उसको क्षण भर आज बजा दो  
गाकर तुम मेरे पीत भीत बन जाओ !  
झूकर प्राणों की पीर प्रीत बन जाओ !

जन्म - स्थान — मैनपुरी  
 (उत्तर प्रदेश) । जन्म तिथि—  
 सन् १९३९ । शिक्षा—बी०  
 ए० इसके अतिरिक्त साहित्य  
 रत्न साहित्यासंस्कार तथा सर  
 स्वरी । विशेष—लेखन-कार्य



चन्द्ररेखा वर्मा

सन् १९४८-४९ से ही प्रारम्भ  
 किया । प्रकाशित रचना—  
 'बन्दिनी के भीत' । खापी  
 पता—बारा डों० मन्मोहन  
 सिंह यापीबाद, बारा असी  
 (उत्तर प्रदेश) ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-भीत

धरे, ये किसने बीने धूल ?

धरे ये किसने बीने धूल, बिछाई किसने ये कलियाँ ?

यह किस बखी की छान

कि जिसके स्वर-स्वरसे से ताल अमानक पिरक चठा जीवन ?

यह किन धबधबों का गान

फूटते जिसके बेसुध रागों से, उत्सास-धरे निर्भर अनगिन ?

यह कौन अछूता सुमन

बीनने जिसका मंदिर पराग, भाग धाई अमराबनियाँ ?

प्राण, ये किसने बीने धूल, बिछाई किसने ये कलियाँ ?

यह कसी पागल प्यास

माँगना जिसने सीखा नहीं, न कुछ भी पाने का उत्सास ?

यह अजब अनोखी पास

सोजती सोंकर सोने हेतु, निराशा में पतता विश्वास ?

यह बंसी झुटी बहार,

सोजती धाई जो मधुमास बन गई मन की रंगरनियाँ ?

प्राण ये किसने बीने धूल बिछाई किसने ये कलियाँ ?

यह किन प्राणों का सेत

कि जिसमें हार नहीं ना जीत, युगों का बिरह क्षणों का मेल ?

यह मधु का अणक ठंडेल,

कौन कह गया कान में, आज बिता दू कल येदना मेघ ?

वह कौन नया सुकान,  
 कि जिसके भय से तरु से सर्गों राज की मारी वस्त्रियाँ ?  
 सखे, ये किसने बीने छूल, बिछाई किसने ये कसियाँ ?

यह किस जीवन का तिमिर,  
 जो जसा घाया मेरे पास, स्नह की ज्योति सहज ही बिर ?  
 ये किसके सपने बधिर,  
 नहीं जो सुनें पराई बात नित्य घाटे भयनों में तिर ?  
 यह कैसी ज्वाला उठी  
 जलाने आई है जो आज, प्यार की शठ दीपावलियाँ ?  
 बटा दो किसने बीने छूल, बिछाई किसने ये कसियाँ ?

जन्म-स्थान—विस्ली ।  
 जन्म-तिथि—१० मई सन्  
 १९०६ । शिक्षा—घर पर ही  
 हुई । विशेष—घापके पिता डा  
 सर मोतीसामर पंजाब-हाईकोर्ट  
 के जस्टिस और विस्ली-विद्या  
 विद्यालय के बाइस प्राध्यापक थे ।  
 पति श्री ज्ञानमय श्री नंदराज

मृत्यु-स्थान—जयपुर



के भगवानराम बैंक के डायरेक्टर  
 थे । घापक कहानी-मह नीब  
 की ईंट पर घाप घा हिम्मी  
 साहित्य-मन्थन की ओर स  
 १९४३ में सेक्युरिटी पुरस्कार  
 भी प्रदान किया गया था । कुछ  
 दिन तक घाप दीदी की प्रधान  
 मन्त्रीदिवा भी रही थी । जयपुर  
 बता—श्रीमन्त कनन नंदराज ।

हिन्दी-कवियों के जन्म-गीत

मैं न तुमको भूल पाती ।

तुम न मुझको याद करते मैं न तुमको भूल पाती ।

तुम पुरुष हो है तुम्हें अधिकार यह मुझसे न बोलो  
है मुझे आदेश—‘सह सौ पर कभी भी मैं न खोसो  
फूल बिखराती सदा मैं पर सदा ही भूल पाती ।  
तुम न मुझको याद करते मैं न तुमको भूल पाती ।

तुम रक्षा सबसे नया संसार मित अपना नबेला  
भार पर बीते दिवस का है मुझे सहना अकेला  
खोजती जब-जब सरमता मैं तभी प्रिय तू भूल पाती ।  
तुम न मुझको याद करते मैं न तुमको भूल पाती ।

सब विचारों में निरन्तर रख तुम्हारे चल रहे हैं  
पर इधर अरमान मेरे अशु भगकर बस रहे हैं,  
चाहती हूँ पर न मन के हाथ गज को हूस खाती ।  
तुम न मुझको याद करते मैं न तुमको भूल पाती ।

तुम सबसे हो जब जिधर बाधा बसो प्रिय बौन रोके,  
मैं हिंसाळ उमलियाँ भी तो मुझे यह बिद्व टोके,  
मैं अकासी बेल तुम-सी बाध मैं भी भूल पाती ।  
तुम न मुझको याद करते मैं न तुमको भूल पाती ।

जन्म-स्थान— दिल्ली ।  
 जन्म-तिथि— २१ दिसम्बर,  
 १९११ । प्रकाशित रचनाएँ—  
 'सीकर' 'वेगुकी' 'भुकपिक'  
 'रेनाएँ' 'धामा' 'योद्धा'  
 'अन्तरंगिणी' 'विपत्ती' तथा  
 'काकती' (कविता-संग्रह)  
 'उत्सव' (कहानी-संग्रह) ।

## तारा पाण्डे



विसेय—हिन्दी की धारम्य  
 स्वादि-प्राप्त कवयित्री । सन् १९६४ में प्र. मा० हिन्दी  
 साहित्य सम्मेलन की ओर से  
 प्रतिवर्ष दिया जाने वाला महिमा  
 सेवसरिया पुरस्कार आपकी  
 'धामा' नामक काव्य-संग्रह पर  
 दिया गया । रचायी बता—  
 सारेठ नैनीताल (उत्तर प्रदेश) ।  
 हिन्दी कवयित्रियों के प्रम-नीत



## गीत गाऊँ मैं मधुर-सा ।

आज मेरे प्राण में स्वर  
भर गया कोई मनोहर !

स्मृतिज के उस पार से वह मूसरराता पास आया  
मधुर मोहक रूप में उस स्मृति ने मुझको बुलाया  
कौन-सा सन्देश लेकर सजनि वह आया भवनि पर ?  
आज मेरे प्राण में स्वर  
भर गया कोई मनोहर !

दुल गई थी प्राण में अपमान की भीषण व्याधा  
से गया वह साथ अपने दुल भरी धीता क्या  
घाँस में आया सजनि वह आज भरे धम, बनकर ।  
आज मेरे प्राण में स्वर  
भर गया कोई मनोहर !

कर गया अनुगोष मुझसे गीत गाऊँ मैं मधुर-सा  
भूल जाऊँ जन्म का दुल मृत्यु को समझूँ अमरता  
यह अमर उपदेश उमका सजनि कण-कण में गया भर ।  
आज मेरे प्राण में स्वर  
भर गया कोई मनोहर !

स्वप्न से ही भर गया अमि आज मेरा जीण प्रवस  
वेदमा की बह्नि न तप हो उठ है प्राण उज्ज्वल  
दे गया वह सजनि मुझको जन्म का वरदान मुदर ।  
आज मेरे प्राण में स्वर  
भर गया कोई मनोहर !



वे प्रचेतन क्यों समझते ?

वे प्रचेतन क्यों समझते, सजनि ! मैं तो जागती-सी !

ठहर आ ठुक देस मेरे आगुत उर की भावनाएँ  
सहलहाती नामसाएँ कम-रत प्रिय कामनाएँ  
आस्त है बिग्यान्ति तजकर, कान्ति प्रतिपल मीमती-सी !  
वे प्रचेतन क्यों समझते सजनि ! मैं तो जागती-सी !

जल मरा सौंदर्य ही पर शमभ का अनुराग कैसा ?  
दे प्रकाश प्रदीप जलता ही रहा वह त्याग कैसा ?  
आज मैं उस दीप पर अनुराग अपना बारती-सी !  
वे प्रचेतन क्यों समझते, सजनि ! मैं तो जागती-सी

बेदना क्या है ? किसी सुख-स्वप्न का इतिहास होगा  
धौसुधौ में भी छिपा धलि ! नियति का परिहास होगा  
कौन उस परिहास पर निज चेतनाएँ त्यागती-सी  
वे प्रचेतन क्यों समझते सजनि ! मैं तो जागती-सी !

मैं बहो हूँ बिषय में जिसने कभी पीडा न जानी  
मिट गए मृग-मृग धमिट होती रही जिसकी कहाँ  
ज्योति जिसकी आज जग में जममगाती जागती-सी  
वे प्रचेतन क्यों समझते सजनि ! मैं तो जागती-सी !

जन्म-स्थान—उरबपुर ।  
 जन्म-तिथि—१९ फरवरी  
 १९१२ । शिक्षा—एम० ए०  
 (नाबपुर विश्वविद्यालय सं संम्  
 १९४० में) । विवाह—१९४९  
 में सेठ रामकृष्ण डालमिया से ।  
 विशेष—हिन्दी-पत्र-काव्य के  
 क्षेत्र में घातक स्थाति अर्जित  
 की । सबसे पहली पद्य रचना  
 'निष्ठा-समा' 'स्वाम भूमि' में  
 प्रकाशित हुई । उसके बाद  
 'माधुरी' 'सुधा' 'धीर' 'बाँध' में

### दिनेशमन्दिनी डालमिया



रचनाएँ प्रकाशित । पहले  
 'दिनेशमन्दिनी चोरशिया' नाम  
 से लिखती थी । प्रकाशित  
 कृतियाँ—'राजन' 'मौलिक  
 मान', 'मारवीया' 'सुपहरिया के  
 फूल' 'बंदी रत्न' 'उपवन'  
 'स्वप्न' 'पक्षीन' (पद्य  
 काव्य) 'उरबाती' 'अनुसार'  
 'सारंग', 'परिष्कार' (कविता  
 संग्रह) । स्थायी पना—  
 डालमिया-निवास ६ तिमन्दरा  
 रोड नई दिल्ली ।

हिन्दी-पत्र-विषयों के क्षेत्र-गीत

प्रिय कब अवगुष्ठन सोसोगे ?

नैनों में मित्रा सहराती  
प्रणय-सिखा अपम फहराती  
वाणो बोझा में धिा जाती,

क्या न घरे मुझसे बोसोगे ?  
प्रिय कब अवगुष्ठन सोसोगे ?

सलियों ने झुंझार कराया  
श्वेत पुष्प-पर्यंक सजाया  
रजत धास शीपक रक्तवाया

प्रम-मुखा पी कब बोसोगे ?  
प्रिय कब अवगुष्ठन सोसोगे ?

बीत रही उजियामी रातें  
मधुर मलय भोली-सो बातें

अभिलाषा उमिल सघातें निक्षिण-वा पर कब सो सोगे ?  
प्रिय कब अवगुष्ठन सोसोगे ?

अर्घ्य लिये में लड़ी हुई है  
स्वप्न अनागत अड़ी हुई है

तब चिन्तन में पड़ी हुई है, कब सुहाव बुकुम बोसोगे ?  
प्रिय कब अवगुष्ठन सोसोगे ?

काम-स्वान—सिक्खरावार  
 (भाग्य-प्रदेश)। काम-तिनि—  
 २८ मन्मथर, मन् १६३०  
 (बीपावसी)। प्रिया—इष्टर  
 मीडिष्ट सरस्वती। निरन्तर  
 प्रस्वत्न रहने के कारण भाये  
 प्रिया न हो सकी। विशेष—  
 पहले कुछ दिन विमला लण्डेन  
 नाम नाम से भी लिखा।  
 आपकी रचनाएँ 'विद्याल प्रारत'  
 नया समाज 'यजमता' 'आलो-  
 दन' 'प्रतिभा' साहित्य-पत्र-पत्रि

### बीप्ति लण्डेनवाल



कायो में प्रकाशित होती रही  
 हैं। इस्तामिया विरलविद्यालय  
 के हिन्दी-विभाग के पीछर डॉ॰  
 राजकिशोर पाण्डेय द्वारा सम्पा-  
 दित 'भाग्य' के हिन्दी कवि-  
 नामक ग्रन्थ में भी कुछ रचनाएँ  
 प्रकाशित हुई। कविता के अति-  
 रित नाटक-लेखन में भी रुचि  
 है। बतमल बता—द्वारा प्रो॰  
 रामकुमार लण्डेनवाल उसका  
 निवा विरलविद्यालय हैराराद  
 (भाग्य प्रदेश)।

हिन्दी-नवमिथियों के प्रेम-नीत

बहुत तुम याद आते हो !

घटाएँ मूँम जब बिरतीं बहुत तुम याद आते हो !  
तृपातुर तप्त प्राणों को, धमिम से सींच आते हो !

तुम्हारा रूप मेरे प्रिय !  
इन्हीं क्यामल घटाओं-सा  
सजस गरिमा लिये खूबि की  
ठरल भीगी व्यथाओं-सा

व्यथाओं से हृदय को छु, नयन में भिन्नमिसाते हो !  
घटाएँ मूँम जब बिरतीं, बहुत तुम याद आते हो !

इन्हीं क्यामल घटाओं-सा  
तुम्हारा नेह मेरे धन !  
बरस धिर निष्क कर जाता  
मयन उर प्राण जग-जीवन

धुत्ताते स्रोत सौरभ के सुमन शठ-शठ सिमाते हो !  
घटाएँ मूँम जब बिरतीं बहुत तुम याद आते हो !

इन्हीं क्यामल घटाओं-से  
कमी जब भूल आते हो  
भटककर ही क्याचित् प्रिय,  
धमे इस धोर आते हो

बड़े धनमोल हो निरुदर, प्रसीला बटु कराते हो !  
घटाएँ मूँम जब बिरतीं बहुत तुम याद आते हो !

जन्म-स्थान—ग्राम कौट  
 बाटी बलिया, (उत्तर प्रदेश) ।  
 जन्म-तिथि—श्रावण शुक्ल  
 संवत् १९५६ वि० । पिता—  
 श्री० ए० (सखनऊ-विश्व  
 विद्यालय से) । विशेष—  
 आकाश वाणी के सखनऊ केन्द्र

दुर्गावती सिंह



से सम्बद्ध । वास्तव-काल से ही  
 लिखने का शौक रहा है ।  
 कहानियाँ कविताएँ और  
 निबन्ध-लेखन में अधिक रुचि  
 है । स्वामी वृत्ता—सी० १०७८  
 बहामनगर लखनऊ ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-पीठ



सर्वस प्रेमी जान न पाया !

मर्बित दीपक जान न पाया, दग्ध शसभ का कोमल कन्दन !

कसिका-बधु किसलय-धूँधट में,  
सपनों का संसार सजाती  
तन-मन के कासे छालों से  
मपनी दुनिया उजड़ी पाती,

सर्वस प्रेमी जान न पाया, प्यार-भरा फूलों का बग़्गन !  
मर्बित दीपक जान न पाया, दग्ध शसभ का कोमल कन्दन !

सजस धर्मों ने शोर मचाकर,  
कव चातक की प्यास बुझाई,  
स्वाति-विन्दु की अभिसापा में,  
सीपी की आँखें पघलाई,

धन गरजन में जान न पाया, लघु भरती का बिह्वल बम्पन !  
मर्बित दीपक जान न पाया, दग्ध शसभ का कोमल कन्दन !

सग्न्या पथ में हल आँचस से  
अनगिन दीपक नित्य जलाती,  
स्वामत करने निद्रा जाबरी  
उजसे मुक्का-मास सजाती

गगन विसाड़ी जान न पाया रजनी-उर का मूक समर्पण !  
मर्बित दीपक जान न पाया, दग्ध शसभ का कोमल कन्दन !

नित मिसमे पर सहुरों को भी,  
 कब मरण की बात बताई,  
 छाती पर रूढ़ी नीका भी—  
 नाप सकी है कब यह राई

मानी सागर देख न पाया, सरिता के घन्तसू का सावन !  
 गबित दीपक ज्ञान न पाया, दग्ध क्षम का कोमल कन्दन !

बचस मम ने पूछी है कब  
 दर्द भरे तुन-मन की बातें  
 भोली भाँखें ज्ञान सकी कब,  
 छसमे बासे जन की बातें ,

द्वार-भीत में ज्ञान न पाया, मानव मानव-मम की चढ़कन !  
 गबित दीपक ज्ञान न पाया, दग्ध क्षम का कोमल कन्दन !

बाल-स्थान—गोवा (मध्य  
प्रदेश) । बाल-सिद्धि—२४ मा  
१६३० । शिक्षा—आयकम हाग  
विश्वविद्यालय एम ए की छात्र  
हैं । कार्य—इससे पूर्व ईश्वरदास  
के राजा बहादुर बंसीमाल



धारा मिश्र

बालिका विद्यालय में अध्यापिका  
भी रह चुकी हैं । वर्तमान कला-  
धारा—श्री प्रियदास एम ए, एम  
एल बी., लखीपुर (महिला  
विद्यालय के पास) तामर,  
(मध्य प्रदेश) ।

कया रुक गई, आज भी बसते-बसते !

सभी स्वस्व मेने समर्पित किया पर  
मिसा मुझको आभार भी डरते-डरते !

घरा की सृजन-वेदना जब सिमटकर  
हरित धामियों में छिपी न छिपाए,  
भुकी वह जमी पर ध्व-गरिमा को साथे  
पकी घोर फूटी मयन छलछमाए,

मिले पात सूखे स्व-वश सोंपने पर  
न उठी दुबारा समसते-संसते !  
सभी स्वस्व मेने समर्पित किया पर,  
मिसा मुझको आभार भी डरते-डरते !

धँधेरा पिघलकर बना मोत-वश-सा  
तूलों की पलक पर बड़ाया गया वह  
किरण की बड़ी बाँह फिर परधराई  
पलक-धौजुरी में उठाया गया वह,

नुकीला सहारा गड़ा एक दण को  
कया रुक गई आज भी बसते बसते !  
सभी स्वस्व मेने समर्पित किया पर,  
मिसा मुझको आभार भी बसते-बसते !

जन्म-तिथि—३ मार्च १९१०।  
 शिक्षा—बी ए सन् १९४८ में  
 पटना से हो। पासे पढ़ने का  
 सीमाव्य नहीं प्राप्त हुआ।  
 विशेष—हिन्दी की ओर विशेष  
 अध्यन होने के कारण महिलाओं



## मलिनी इय्याम

की पवित्रा 'शरद' का प्रकाशन  
 एवं सम्पादन किया। इहत्थी की  
 श्रमश्रुति में वह भी म सम्मिल लकी  
 और बन्ध हो गई। वर्तमान  
 पता—डाय मी एल एन सहाय  
 मोटर वाहन-निरीक्षक कार्यालय  
 (तिहनुप) बिहार।

हिन्दी-वर्षाविषयों के प्रेस-लीड

आज मेरे गान रोते ।

धिर प्रतीकित धिय मिलन के, सिन्धु में आह्वान सोते ।  
आज मेरे गान रोते ।

सान्ध्य-जग की नीलिमा को  
धिर मधुर-सा म्यास देकर  
और रिमक्तिम बादलों से-  
अधु का परिहास लहर

दणिक मेरे आगरण में, स्वप्न के बरदान सोते ।  
आज मेरे गान रोते ।

एक आकुल पीर में नव  
बिसर बिकसित प्यार के धन  
लोभते हैं प्राण भरह  
खो गया जो गान उगमन,

आज धूने मींद के पस, सुमग मेरे प्राण सोते ।  
आज मेरे गान रोते ।

जन्म स्थान—दिल्ली ।  
 जन्म तिथि— १६ दिसम्बर  
 १९२६ । शिक्षा—इंटर, प्रभा-  
 कर साहित्य रत्न । विशेष—  
 संभवतः १२ से कहानी कविता  
 आदि लिख रही हैं । इसके अति-  
 रिक्त प्रसाद परिपक्व कालखण्डों  
 द्वारा आत्मोचित एक कहानी-



### मिर्मला मापुर

प्रतियोगिता में पुरस्कार भी  
 प्राप्त कर चुकी हैं । आजकल  
 भूति तथा चित्रों के निर्माण में  
 निरत हैं और आर्य एम्स हायर  
 सेन्ट्रली स्कूल आगरी द्वारा  
 दिल्ली में कला-शिक्षा भी है ।  
 स्थायी पता— धामन सेन  
 ७/१० हरियार्यज दिल्ली ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-दीप

गीत किसी का, स्नेह किसी का !

मेरे होठों पर है विसरा गीत किसी का स्नेह किसी का !

पथ जीवन का सूना-सूना  
अथु हास से सूना-सूना  
ओ सहचारी ! साथ न बस तू-  
मेरा स्वप्न दुकूल मत धूना

मेरी धाँसों में है छान, बिछ, किसी की मेह किसी का !  
मेरे होठों पर है विसरा गीत किसी का स्नेह किसी का !

मीसा नम मन्दाविनी बबल  
स्मृति का यह उज्ज्वल सिसा नमल  
ओ सहचारी ! मत पुकार तू-  
सुना स्वप्न है, दोष गरल

मेरी पुसकों में है कम्पित प्राण किसी के देह किसी का !  
मेरे होठों पर है विसरा गीत किसी का, स्नेह किसी का !

विजन चाहता कंचण का सुर  
पवन मीगती तन्त्रिम मूपुर  
ओ सहचारी ! नयन बिछा मत  
बिरह धमर है बग्घन मंगुर

मेरे नयनों में निहित है, मोड़ किसी का देह किसी का !  
मेरे होठों पर विसरा है, गीत किसी का, स्नेह किसी का !



अम्बिका— भाधनवर  
(मायनपुर) बिहार । अम्ब  
सिपि— बनवरी १९२६ ।  
बिजा—वर पर ही हुई ।  
अम्बिका स्थापना और  
एकाग्रता बिदास में मिले ।  
विशेष — बेहका की अमर  
वापिस बिहार की अम्बिका  
कवित्री । पत्रों में कविताओं का  
प्रकाशन बिदास से कई वर्ष पूर्व  
ही हो चुका था । वैसे पहले कदा-  
निरा ही मिलीं । दिन, काटन,

### प्रकाशवती

मूर्ति और सुवि-चित्त में भी  
वर्षात पति । रचनाएँ—  
कविता और कहानियों के अति  
रिक्त नाटक और उपन्यास भी  
लिखे हैं । अभी अभी 'चारपरत'  
नाम के भाषका एक उपन्यास  
प्रकाशित हुआ है । विधान तीन  
वर्ष से बिहार-हिन्दी-साहित्य  
सम्मेलन की प्रशासिका ।  
वर्तमान बता—सम्मेलन बनन  
करमकुर्मा पटना ३ ।



## विचलित होता हृदय !

विचलित होता हृदय उमड़ते इन घाँसों के नीर से  
किसने तुम्हें कहा था—तुम खेसो मेरी जखीर से ?

ओ हो चुका असीत भूम जो गिरा गाँठ से याद के  
रहे किसी बिपि भीत धूस-से दिन अनकहे विपाद के  
जाने अनजाने आ टकरा मर प्राणों की पीर से  
इस सध्या में क्यों कर डाला दोनों पुनिन अधीर-से ?  
किसने तुम्हें कहा था—तुम खेसो मेरी जखीर से ?

कितनी साथे बंधा गए, जब गए दृष्टि से दूर थे  
फिरे झूठकर द्वार न मेरे, ऐसे क्या मजबूर थे  
किस कमिका की चाह—'मर्म बीया जाए दाहलीर से ?'  
रहे तेकते भी मैं चुन दी गई सीह प्राधीर से !  
विचलित होता हृदय उमड़ते इन घाँसों के नीर से !

इस सुने मंदिर में प्रतिध्वनि बन टकराते प्राण हैं  
अरण-बिन्ह-सी सेप नाम-पुन, सोट चुने मगवान हैं  
रो रो जिसे बुसाती निष्कल गीतों के पंजीर से  
सूति न मिसी कभी बहसाती रही एक तसबीर से  
किसने तुम्हें कहा था—तुम खेसो मेरी जखीर से ?

हरदम आता ध्यान तुम्हारा शायद यह भी पाप है  
मर जाने की मुक्ति नहीं है जीने का अनुताप है

जाने किस बैरी का आज फसा जीवन पर शाप है  
 अगम अथु बट में प्यासी साधें बसतीं गुपबाप है  
 मैं पछाड़ जाती तरंग मौं तुम सागर गम्भीर-से  
 क्या न कभी मयता है उर, बढ़वा की ब्याघ्र प्रवीर से ?  
 विचलित होता हृदय, उमड़ते इन प्राणों के नीर से  
 किसने तुम्हें कहा था—तुम जैसी मेरी प्रवीर से ?

जम्मू स्थान—नजीबाबाद  
(बिजलीर) उत्तर प्रवेश । जम्मू-  
तिथि—२८ फरवरी १९३९ ।  
मिला—सन् १९५६ में बी०ए०  
(धामरा विश्वविद्यालय से) ।  
१९६० में सोशल वर्क में मल  
मठ-विश्वविद्यालय से एम ए ।  
विशेष—प्रयाग महिला विद्या  
पीठ में बी०ए० में पढ़ते हुए थे

## प्रतिभा गग



श्रीमती महादेवी वर्मा के विशेष  
सम्पर्क में आई । उनके प्रोत्सा  
हन से ही निकले में अप्रसर  
हुई । छात्रकल 'चर्मयुग' 'हिन्दु  
स्थान', 'नव नारतटाइम्स' तथा  
'विपक्ष' आदि पत्र-पत्रिकाओं  
में रचनाएँ प्रकाशित होती रहती  
हैं । वर्तमान पता—हारा—बी  
घार० बी० चर्च जी आई नरुप  
विनयनगर, नई दिल्ली ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-पीठ

तुम्हारी याद के बन्धन ।

न जाने क्यों सजीसे हैं, तुम्हारी याद के बन्धन ?

उमड़ती घाँघियाँ नभ में,  
घरा का मौन झकुसाया  
कोई बरसात कहता है,  
किसी का दिस पिघल भाया,

किसी की घास बन जाती किसी के नयन की शबनम !  
न जाने क्यों सजीसे हैं, तुम्हारी याद के बन्धन ?

घरा की घाँस का काजल,  
दिलिज के माल की सानो,  
विहँसती चाह के नूपुर  
घसूते घघर की ध्यासी,

रजत किरणें सजा जातीं, निद्या के हाथ के कंगन !  
न जाने क्यों सजीसे हैं, तुम्हारी याद के बन्धन ?

घनोली राह की मंजिल  
न कोई साथ है साथी  
सजाई बबल तमब सपने  
जसाई दीप की बानी

घमा से भी घेंघेगी घाज, क्यों चन्ना तेरी पूनम ?  
न जाने क्यों सजीसे हैं, तुम्हारी याद के बन्धन ?

सज्जन तुम दूर हा इतने,  
घमाये स्वप्न धसते हैं  
निरासी रोत दुनिया की  
जहाँ धरमान जसते हैं

मधुरी रागिनी में बज उठी क्यों प्यार की सरगम ?  
तु जाने क्यों सजीते हैं, तुम्हारा याद के बन्धन ?



जन्म-स्थान—इमाहाबाद।  
 जन्म-तिथि—६ जनवरी सन्  
 १९२८। प्रकाशित रचनाएँ—  
 'वसिष्ठ' (कविता-संग्रह)।  
 विशेष—बीलबेडियर ग्रंथ प्रयास  
 के अधिपति श्री मरुतिरोमस्त्रि  
 की सुपुत्री। संगीत श्रुत्य और  
 चित्रकला में रुचि। सन् १९४३  
 में क्रास्नवट वर्ल्ड कालिज के  
 स्पर्धामण्डली सम्मेलन में प्रथम

### प्रेमकुमारी गुप्ता

वर चीनली महादेवी वर्मा की  
 सम्पादना में हुए कवि-सम्मेलन  
 में उन्होंने कविता का प्रथम  
 पुरस्कार प्राप्त किया। अपने  
 पति श्री प्रकाशचन्द्र गुप्ता  
 (लहारनपुर) के साथ १९६० में  
 लगभग १ वर्ष तक पश्चिम के  
 नवजन २२ देशों की यात्रा।  
 स्थायी बना-मंडुलिके मार्गस्थ  
 लहारनपुर।





जन्म-स्थान—इलाहाबाद  
 जन्म-तिथि—१९ जुलाई सन्  
 १९३८। शिक्षा—१९५६ में  
 बी. ए. इलाहाबाद विश्व  
 विद्यालय से। एम. टी. इलाहा-  
 बाद से ही। बिशेष—भाषाकर्म  
 दिल्ली स्कूल इलाहाबाद में  
 प्रबन्धाध्यापिका। नई कविता  
 की कविधियों में से एक।

प्रेमलता वर्मा



‘नयी कविता’ ‘सहृद’ ‘अक्षिण’  
 ‘भारती’ ‘अरुणा’ आदि पत्र-  
 पत्रिकाओं में कविताओं का  
 प्रकाशन होता रहता है। काव्यी  
 कहानियाँ आदि भी लिखती हैं।  
 ‘नमो ध्यानम् एक वचन’ नामक  
 एक पुस्तक भी इसी प्रकाशित  
 हो रही है। स्थायी पता—१४०  
 मोहनसिंघराम इलाहाबाद।

दिल्ली-कविधियों के प्रथम-संग्रह

आज कम्पित पात-सा मन !

आ गई है फिर वही बरसात !  
फड़फड़ाते हृदय-युगलों की धिरीपों में  
फिर वही केसर-भिनी बरसात !  
गय-माते दुस्म ! महमाते युगों की बात !

मरा या कैसा मरा—

है आज तक किसका सुमार !  
बस रही वी हृदय में कहीं रंगीली रात !  
मूर्खते ही मयन कैसे लिन उठे हैं  
दामिनी-से याद के जमजात !  
क्या—आ गई फिर से वही बरसात !

भीमते ही रह गए ये मेह की जल धार में हम  
जबरन ही रह गए ये मोह पारावार में हम  
सह रही हैं आज की अधलुभी पसुनियाँ न जाने क्या  
बिसुध-सी आनन्द-पारावार में !

प्रेम-मुच्छा याद में हम घुम रहे ये मंग-संग  
हृदय में है वही अंध प्रणय-धनवीची तरंग  
धमसताओं से ऊरे बस स्तब्ध हम, भुप,  
धमस श्रोति फुहार में

दो दिनों की ज दनी-सी घुम गई है पूरा याद में !  
आ गई फिर मेह धिनी रात !  
आज कम्पित पात-सा मन, धेमता है फिर वही बरसात !

जन्म स्थान—बजीराबाद  
(पंजाब) । जन्म-तिथि—१०  
अक्तूबर सन् १८११ । निधन  
तिथि—११ फरवरी सन् १८९१ ।  
विशेष—हिन्दी के प्रख्यात  
बहानी-लेखक श्री चन्द्रमुख  
विद्यासंसार (सम्पादक 'आन  
कल') की पहली पत्नी । इनकी  
बड़ी बहन । धीमती सत्यवती



### स्व० पुरुषार्थवती

मल्लिक श्री हिन्दी की प्रख्यात  
बहानी-लेखिका हैं । इनकी  
बोड़ी-जी मायु में पावने बड़ी ही  
उज्ज्वलोटि की कविताएँ लिखी  
थीं । इनकी रचनाओं का प्रका  
शन 'अमृतचंदना' नाम से हो  
चुका है ।

इनमें कितने भाव भरे हैं ?

झिप-झिपकर इतने तारों में जो सिति पर चतरे हैं !  
कौन जान सकता है, इनमें कितने भाव भरे हैं ?

मृग, मास में गुंथे जा चुके  
झूब चुके या पार पा चुके  
एक सूत्र में ग्रन्थित हो, फिर भी तितरे वितरे हैं !  
कौन जान सकता है, इनमें कितने भाव भरे हैं ?

धमक-धमक बातें करते हैं  
डुलक-डुलक कर चित हरते हैं  
सरस, सुशीतल हैं पर, उब्झासानल-साप-जरे हैं !  
कौन जान सकता है, इनमें कितने भाव भरे हैं ?

मुड़क कपोलों पर जब घाते  
सूट-सूट धन दिस बहसाते  
बिरसा कोई बूझे—कैसे सोटे घोर खरे हैं ?  
कौन जान सकता है, इनमें कितने भाव भरे हैं ?

जन्म-स्थान—गोरखपुर  
 जन्म तिथि— १ जनवरि  
 १९४२ । शिक्षा—प्रारम्भिक  
 शिक्षा गोरखपुर में बाप में  
 हाई स्कूल देवरिया में १९६१  
 में इष्टर । सम्पादन करते हुए



पुष्पसता श्रीवास्तव  
 'नीलिमा'

ही सम्पादन करके अपनी शिक्षा  
 प्राप्त की । वर्तमान पता—  
 द्वारा डॉ० मुन्नेरवारदमास  
 श्रीवास्तव (शोम्पोर) मनेन  
 पुर, देवरिया (उत्तर प्रदेश) ।

हिन्दी-रूपविधियों के प्रम-भीत

करुणा से भरी मेरी कहानी !

मैं करुणतम, धीर करुणा से भरी मेरी कहानी !

जम पाया है कभी वन

बढ़ चली सुन्दर मली वन

मूलती पत्तव-हड्डोले, सुप्त तर में भर खानी !

सुरभि ने मन को सुभाया

हृदय में उसको बसाया

सो रही थी मस्त बनकर, मूमता था पवन मानी !

सींच डाला लाज-मण्डल

लिप्त गई मैं पूर्ण उस पल

हंस रही थी मग्न होकर, विश्व पर थी विजय पानी !

गुनगुमाता झमर आया

प्रम का गुण-गान गाया

मैं सन्तोनी प्रणय के इस गीत को सीखी न जानी !

सो रही है धाग उमन

मिट चुका यह मधुर जीवन

कौन देखे वह सुमन, जिसमें न धव बाबी खानी !

मैं करुणतम धीर करुणा से भरी मेरी कहानी !

जन्म - स्वाम - दिल्ली ।  
 जन्म-तिथि—७ जनवरी सन्  
 १८३६ । शिक्षा—एम० ए०  
 बी० एड० संवीत प्रभाकर ।  
 विरोध—हिन्दी की नई पीढ़ी  
 के प्रमुख धोतकार श्री रमानाथ  
 अवस्थी की बर्मपत्नी । सन्  
 १८२३ से कविता करती



पुण्या अवस्थी

सारम्भ की । संवीत में अधिक  
 रवि । आकाश बाणी के नई  
 दिल्ली और प्रयाग-जैनों पर  
 आपके संवीत के कार्यक्रम  
 प्रसारित होते रहते हैं । नती  
 जान बता—आप की रमानाथ  
 अवस्थी १९७ समनर्पण  
 हलाहावाय ।

हिन्दी-व्यवस्थियों के प्रेम-सीत





जन्म-स्थान—माँव जुमाव  
 पुरसाठपुर (पंजाब) । जन्म-  
 तिथि—८ मार्च १९१८ ।  
 शिक्षा—दिल्ली-बोर्ड की मैट्रिक  
 परीक्षा में प्रथम श्रेणी पर ४  
 वर्ष तक छात्रवृत्ति प्राप्त करके  
 बी० ए० (प्रथम) किया ।  
 दिल्ली विश्वविद्यालय से एम०



## पुष्पा पुरी

४० वीं प्रथम खेली में १९६०  
 में किया । विरोध—सामकाल  
 'जानकी देवी बालिका पुर  
 वर्ग नई दिल्ली' से प्राप्ता  
 लिफा । अनेक कविता तथा  
 साहित्यिक प्रतिस्पर्धाओं में  
 पुरस्कार-विजेता । रचना  
 बना—ए ३८ ई० टाइप ईस्ट  
 बिजनेस मैन, नई दिल्ली ।

मुझे तुम मत ठुकराओ !

कितनी दूर अभी आई है संग तुम्हारे

पिछली राह दिखाकर मुझको मत भौटाओ !

मचल उठे थे विषदा प्राण भी तुम्ह देसकर  
बंधस सहरोँ से मन की गंगा सहलाई,  
उमड़ पड़े सोए भावों के नीरब निर्झर—  
मई घड़कों ने अपनी भाषा समझाई

गीठ प्यार के साए मुझको पास तुम्हारे

गाने से पहले उनको तुम मत मिटवाओ !

कितनी दूर अभी आई है संग तुम्हारे

पिछली राह दिखाकर मुझको मत भौटाओ !

फूलों में पसकर कांटों से परिचित हूँ मैं  
सुख का राज-मृदुल दुःख के सिर पर घर दूँगी  
छेसी हूँ मैं हर्ष-शोक की मर्मधारों में—  
भाँसू की सीपी में मुसकानें भर दूँगी

पहचानी है मैंने पीड़ा की गहराई

सुख की माया में मुझको तुम मत उसझाओ !

कितनी दूर अभी आई है संग तुम्हारे,

पिछली राह दिखाकर मुझको मत सौटाओ !

संधपों के बीच बने तुम इस जीवन से  
स्वर्ग घरा पर तुमने अभी नहीं देखा है

मुरझाए पतझर ही भाए द्वार तुम्हारे—  
 नमने जीवन का मधुमास नहीं देता है,  
 एषाही जीवन के सुंदर स्वप्न सभाकर  
 झूठी निद्रा से घातों को मत्त भरमाओ !  
 कितनी दूर बसी आई है संग तुम्हारे  
 पिछली राह दिखाकर मुझको मत्त सीटाओ !

मन के उज्ज्वले दर्पण में देखो तो प्रियतम  
 केवल तन का आकर्षण ही प्यार नहीं है  
 फूलों की भुलवान हृदय को भा जाती है—  
 मुरझाना उनका जीवन की हार नहीं है,  
 जीवन की सम्बन्धी राहों की मीरवठा में  
 इन गीतों के सरस स्वरों से मत्त भरमाओ !  
 कितनी दूर बसी आई है संग तुम्हारे,  
 पिछली राह दिखाकर मुझको मत्त सीटाओ !

सोने का संसार दिखाया है तुमने तो  
 सब अपनी पीड़ा की नगरी भी दिखा दो  
 मैं उसमें मृतवालों का मोती भर दूंगी  
 मुझको अपनी भाँसू की भापा सिखा दो,  
 मैं शून्धार करूँगी पाकर दर्द तुम्हारा,  
 सुन का साथी समझ मुझे तुम मत्त ठुकराओ !  
 कितनी दूर बसी आई है संग तुम्हारे  
 पिछली राह दिखाकर मुझको मत्त सीटाओ !

जन्म स्थान — मेरठ ।  
 जन्म-तिथि — सन् १९२३ ।  
 विद्येय — मेरठ की प्रत्यक्ष-प्राप्त  
 कवयित्री । एक हाई स्कूल में  
 प्राध्यापिका भी रही थी ।  
 साहित्य-साधना के अविरत

स्व० पुष्पा भारती



अनेक सामाजिक कार्यों में भी  
 योगदान दिया । कुछ कविताएँ  
 और कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं  
 में भी छपी थीं । प्रकाशित  
 रचनाएँ — 'इकलाव' नामक  
 कहानी-संग्रह । १३ सितम्बर  
 १९४९ की स्वर्णवात ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-भीत

वह बात न मेरे मुल से कहसामो !  
वह बात न मेरे मुस से कहसामो

मैं कहना चाहूँ, लेकिन कह न सकूँ !

कहने को तो सब-कुछ कह जाते हैं,  
हो सम्भव चाहे शक्ति न करने की  
सबके वचन की तो बात नहीं होती,  
तम की छाती पर दीपक धरने की ।  
उस भार में मत्त मुझको कहसामो,

वह बात न मेरे मुल से कहसामो,  
मैं कहना चाहूँ लेकिन कह न सकूँ !

मैं कहना चाहूँ, लेकिन कह न सकूँ !

सीमाएँ तो हम सबकी होती हैं,  
विस्तार हुआ करता है कम-ज्यादा,  
उत्ताप तरंगों का स्वामी सागर,  
उस पर भी छावण करती मर्यादा,  
उन सीमाओं तक मुझे न पहुँचाओ,

वह बात न मेरे मुग से कहसामो  
मैं रहना चाहूँ लेकिन रह न सकूँ !

मैं कहना चाहूँ लेकिन कह न सकूँ !

धम्बर में ऐसे तारे भी तो हैं  
जो कभी सवेरा देग नहीं पाते,

भू पर ऐसे दुस्त्रियारे भी तो हैं,  
जो सुख वसेल दण्ड मर्ती पाते, —

पायात न कोई ऐसा कर जाया,

मैं सहना चाहूँ, लेकिन सह न सकूँ !

वह बात मैं मरे मुख से कहना सो

मैं कहना चाहूँ लेकिन कह न सकूँ !

वह बात न मेरे मुख से कहलायो !

वह बात न मेरे मुख से कहलायो

मैं कहना चाहूँ, लेकिन कह न सकूँ !

बहने को तो सम-कुछ कह पाते हैं,

हो सम्भव चाहे छिछि ॥ करने की

सबसे बड़ की तो बात नहीं होती,

तम की छाती पर दीपक धरने की ;

उस धारा में मत मुझको नहलाओ,

मैं बहना चाहूँ, लेकिन कह न सकूँ !

वह बात न मेरे मुख से कहलायो,

मैं कहना चाहूँ लेकिन कह न सकूँ !

सीमाएँ तो हम सबकी होती हैं,

विस्तार हुआ करता है कम-ज्यादा ,

उत्ताप तरंगों का स्वामी सागर,

उस पर भी शासन करती मर्यादा ,

उन सीमाओं तक मुझे न पहुँचाओ

मैं रहना चाहूँ, लेकिन रह न सकूँ !

वह बात न मेरे मुख से कहलायो,

मैं कहना चाहूँ लेकिन कह न सकूँ !

धम्बर में ऐसे तारे भी तो हैं

जो कभी खबेरा देन नहीं पात ,

शू पर ऐसे दुलियारे भी तो हैं,  
जो सुकध ससेरा गेह नहीं पाते, —

प्रायात न कोई ऐसा कर जायो

मे कहना चाहूँ लेकिन सह न सकूँ !

बहु बात न मर मुख से कहनायो

मे कहना चाहूँ लेकिन सह न सकूँ !



जन्म स्थान—फानपुर ।  
 जन्म तिथि—१८ अक्टूबर  
 १९३२ (बोयाबली) । प्रिया—  
 आनन्द विश्वविद्यालय से एम०  
 ए० साहित्यपरतन । विशेष—  
 छोटी अवस्था से ही साहित्य  
 तथा काव्य में रुचि है । विद्यार्थी



पुष्पा सक्सेना

७ वर्षों से आकाशवाणी के  
 नरानन्द बेगम तथा अन्य स्थायी  
 पर आबोधित सम्मेलनों में  
 भाग लेती रही है । एक महिला  
 संघर्ष शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा  
 है । स्थायी पता—११२/१६२  
 नरानन्द बेगम फानपुर ।

हिन्दी-व्यक्तिगतों के प्रम-पीठ

मैं स्वयं में लो गई !

गीत प्राणों में जगे पर भावना में बह गए ।

एक धी मन की कसक जो साधनाओं में डली  
कल्पनाओं में पसी  
पन्थ का मुक्तको अपरिचित मैं नहीं भव तक पसी  
प्रम की सँकरी गसी

बढ़ गए पय किन्तु सहसा  
घोर मन भी बढ़ गया

लोक-लोकों के समी भ्रम एक पल में बह गए !  
गीत प्राणों में जगे पर भावना में बह गए !

वह मधुर बेला प्रतीक्षा की मधुर धनुहार की  
मैं अन्ध साधारण थी,  
कह नहीं सकती हृदय की पीत थी या हार थी,  
वदना सुकुमार थी ,

मौन तो बाणी रही, पर  
मेद मन का गुप्त गया  
जो न कहना चाहती थी, ये मयन सब कह गए !  
गीत प्राणों में जग पर भावना में बह गए !

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

कल्पना जिसकी सँजोई सामने ही पा गई  
 वह थड़ी भी छा गई  
 धवि धमोसी भी हृदय पर छा गई मन भा गई,  
 देखते धरमा गई  
 कर सकी मनुहार भी कब  
 मैं स्वयं में लो गई,  
 और अब तो प्राण मेरे कृष्ण ठगे-से रह गए !  
 गीत प्राणों में जमे पर भावना में बह गए !

जन्म-स्थान-होशम (दिल्ली) ।  
 जन्म तिथि—सन् १९०६ ।  
 शिक्षा—बट पर मिडिल स्कूल ।  
 विवाह के पश्चात् स्वयं  
 अध्ययन करके प्रथमा हिन्दी  
 प्रवाकर, साहित्यरत्न आदि की  
 परीक्षाएँ कीं । विधेय—राज  
 धानी की सबसे पुरानी हिन्दी-  
 सम्पादिका और कवयित्री ।  
 'साहित्यरत्न' परोक्षा देने के  
 समय प्रकाश में आकर अध्ययन

### भगवतीदेवी 'विह्वला'

क्रिया । उन्हीं दिनों वही पर  
 महाकवि निराला रामकुमार  
 वर्मा और महादेवी वर्मा के  
 सम्पर्क और प्रोत्साहन से  
 साहित्य रचना में प्रवृत्त हुई ।  
 कविताओं के अतिरिक्त आपने  
 लेख और निबन्ध भी लिखे हैं ।  
 'बाबना' नामक कविता-संग्रह  
 अभी तक अप्रकाशित है । वत  
 जन्म वत्ता—१४६ इस्वी ई०  
 गुर्मी, चौदनी चौक दिल्ली ।



हिन्दी-कवयित्रीयों के प्रथम-गीत

हैं अमर मधुगान मेरे !

तुम अमर हो मैं अमर हूँ हूँ अमर मधुगान मेरे !

मीर नम क्षिति साग निर्मित  
दीप जीवन का मनोगम  
समन की से ज्योति तम का  
हर रहा, जसता प्रणय सम  
तुम दास्य क्यों गुनगुनाते भाव हैं अनजान मेरे !  
हैं अमर मधुगान मेरे !

इस गगन की घामिनी में  
जल रहे हैं दीप कितने  
यह न बीई जानता—  
इनमें भरा है स्नेह फिसने  
वे चरत इकट्ठी करेंगे जो बने भगवान् मेरे !  
हैं अमर मधुगान मेरे !

दीप ने आसोफ स तव  
पंथ का आभास होगा  
आवरण को दो हटा प्रिय !  
तव मुख निरवार होगा  
फिर तुम्हारी ज्योति में ही लीन होंगे प्राण मेरे !  
हैं अमर मधुगान मेरे !

जन्म-स्थान — दिल्ली ।  
 जन्म-दिनांक — २० मई १९४० ।  
 शिक्षा — बी० ए० दिल्ली विश्व  
 विद्यालय से । ध्यातक एव०  
 ए० (हिन्दी) कायना में  
 सहायक कर रही है । विशेष  
 रुचि — विश्व-कला संगीत और  
 वापसानी । सुनी दिल्ली

## मणिमोहिनी



विन्दनी ही हमें प्रिय है । बँबाव  
 सखा नहीं मयवा । पहले मोहिनी  
 'रतिम' नाम से लिखती थी ।  
 कविता के साथ-साथ गद्य भी  
 लिखती है । रचनाएँ 'भारती'  
 'कला' 'कर्मभू' आदि में  
 प्रकाशित होती रहती हैं । स्थायी  
 पता — २५४२ नई बाढ़  
 दिल्ली ५ ।

हिन्दी-व्यवस्थित के प्रेम-पीठ

हैं हमर मधुगान मेरे !

तुम हमर हो में हमर हैं हैं हमर मधुगान मेरे !

वीर, मम लिसि आय-निर्मल  
दीप जीवन का मनोरम  
सग्न की से ज्योति तम को  
हर रहा जसता प्रलय सम  
तुम दासम क्यों गुनगुनाते भाव हैं अतजान मेरे !  
हैं हमर मधुगान मेरे !

इस यमन की घामिनी में  
जल रहे हैं दीप किन्तमे  
यह न कोई जानता—  
इनमें भरा है स्नेह किसमे  
मे सरस इसको करये जा बने भगवान् मेरे !  
हैं हमर मधुगान मेरे !

दीप के आसोक से तप  
पंथ का आभास होगा  
आवरण को दो हटा प्रिय !  
तप मुझे विश्वास होगा  
फिर तुम्हारी ज्योति में ही कीम होवे प्राण मेरे !  
हैं हमर मधुगान मेरे !

हिन्दी-वर्तमानियों के प्रेम-गीत

जन्म-स्थान—दिल्ली ।  
 जन्म-दिनांक—२० मई १९४० ।  
 शिक्षा—बी० ए० दिल्ली विश्व  
 विद्यालय से । ध्यातकाल एम०  
 ए० (हिन्दी) फ़ार्मस से  
 सम्पादन कर रही है । विशेष  
 रुचि—विज्ञान-कला संगीत और  
 सामाजिक । कुली बिसरी

## मस्मिका मोहिनी



विन्दुवी हो इन्हें प्रिय है । बेंबाल  
 चम्पल नहीं मबता । पहले मोहिनी  
 'रसिप' नाम से लिखती थीं ।  
 कविता के साथ-साथ गद्य भी  
 लिखा है । रचनाएँ 'मासती'  
 'अज्ञान' 'वर्षभुज' आदि में  
 प्रकाशित होनी रहनी हैं । स्नायी  
 बना — १९४९ मई माह,  
 दिल्ली ६ ।



केवल छपण ही छपण है ।

सो बूँदें ही दीवन की परिभाषा का रहसा गई  
कितन मुग्ध रहस्य हमने १२ दिन तुमको सागर दींभी ।

प्राणों में मादक-सी हलचल,  
साँसों में मदिरा-सी बल-बल  
मेकम मन में लम्ब घनेको  
घाँटों में भगने-सी छल-छल,  
एक रसीली नीलों की भाषा को मुहर बना गई  
मन की छया सुन ने को छब बली का साधार नसूँगी ।

सुख रसीली हृद-सुगई में  
तमसता क्यों गहराई में  
केवल छपण ही छपण है  
सम्भावों की गहराई में  
मञ्जस कागती बूँदों की तराई सिलसा गई  
पतझर के सघात हटीले घट में सो-सो बार सहेँगी ।

तुमने दूरी को अप मिया  
सुग को निम्बो में दीप मिया  
धमकाते हाटों में मन का  
कोना कोना दहल म मिया  
रसुतियों की रोह छाह रह भीनी दग्ध छुटा गई  
धरमाना का इटसाती-नी कोराई जलघार रहेगी ।

हिन्दी-बर्ग विवी • प्रेम-कीर्त



तुम हूँस लो मेरे जीवन पर ।

तुम हूँस लो मेरे जीवन पर, जग हूँसता रुठे यौवन पर !  
मह सावन बब का चसा गया जो बरसा मेरे उपवन पर !

मंजरियाँ बोमल बुम्हसाईं

उड़ गए भ्रमर सब रस भकर

पत्ते डामों पर सूख गए

**कुसुम** बिगड़ा सब घरती पर

निर्धन का वैभव लुता पड़ा तुम सेसो उससे जी भरकर !  
तुम हूँस लो मेरे जीवन पर !

बह घटा बहूँ कासी-कासी

जिगसे जीवन का बरस रहा

बब का प्यासा मेरा मधुवन

जल की बूँदों को तरस रहा

गिन रहा सोस जा जीवन के, तुम हूँस लो उसकी लक्ष्मण पर !  
जग हूँसता रुठे यौवन पर !

सब पट्टी गाजर मोन हूए

सब पन्नी धाकर लौट गए

उपवन की हासी हासी पर

पतमङ्ग की छाया छाँद गए

सब गोकर भी जो भूम उठा तुम हूँस लो उसकी पिरवन पर !  
तुम हूँस लो मेरे जीवन पर !

हिन्दी-कविजिगीषा के प्रेम-गीत

जन्म-स्थान—नैनीताल ।  
 जन्म तिथि—११ जनवरी सन्  
 १९४४ । शिक्षा—बी० एच  
 सी० । विशेष—हिन्दू विरम  
 विद्यालय वाराणसी में  
 भूगर्भ-विभाग के रीडर हैं०

मधु पाण्डेय



हरीशचन्द्र पाण्डेय की पुत्री ।  
 सन् १९२९ से पीठ लिखना  
 प्रारम्भ किया । स्थायी पना—  
 द्वारा डॉक्टर हरीशचन्द्र पाण्डेय  
 रीडर भूगर्भ विभाग हिन्दू  
 विरमविद्यालय वाराणसी ।

हिन्दी-रूपविनियों के प्रेम-गीत

जम्मू स्थान — बड़ीवा  
(मुनरात) । जम्मू तिथि—  
१ अक्तूबर १९३३ । विशेष—  
बचपन में ही छिर पर से  
पिता की छत्र-छाया छठ गई ।  
छिर बीमार रहने लगी और  
घर भी रीमा ही संझनी है ।  
शीर्षकमोचन व्यवस्था में ही

### मधुमासती चौकसी

जम्मू की छोर बचि । जम्मू  
के मुनराती होते हुए भी  
राष्ट्रवादी प्रचार समिति की  
‘राष्ट्रवादी-रत्न’ पत्रिका की  
छोर छात्रकर्म साहित्य रत्न  
की तैयारी कर रही है ।  
वतमान पता—तामन नगर  
की पोल माइली रोड  
बड़ीवा १ ।

हिन्दी-व्यक्तिगतों के प्रथम-गीत

कुछ कह न पाई !

वेदना मेरी अघर तक आ गई, कुछ कह न पाई !  
कट गए हैं पल पछी गिर गया मन से घरा पर  
बसकते हैं पाव फिर भी कुछ नहीं लाया गिरा पर  
तुम बताओ क्या मरण की वेदना बदलान बनती  
या अघूरी साथ निश्चय प्यार का अभिमान बनती  
रामिनी खुसकर मन में हँस गई कुछ कह न पाई !  
वेदना मेरी अघर तक आ गई, कुछ कह न पाई !

बज उठे हैं तार, बम्पित राग हँसते मुग्ध मन से  
सोस गोपन भाव रखती सामने भोले नयन से  
साज का धूपट हटाकर भाँकते प्यार सपन-से  
जो छिपे थे विस्मरण के कपट में बिसरे रदन से  
प्राण की कोकिल सिहरकर रह गई कुछ कह न पाई !  
वेदना मेरी अघर तक आ गई, कुछ कह न पाई !

बिसरते हैं गान, सबनम बन मनुज के उर अतस से  
बह उठी बदलान फूटे अशु निर्मल गहन तस से  
क्या समझ पाए न उसका प्राण की उन धड़कनों को-  
पीर में मदहोश सोई ससज मोटी तड़पनों को  
नीर की दुनिया बसी बह छुट गई कुछ कह न पाई !  
वेदना मेरी अघर तक आ गई कुछ कह न पाई !

हिन्दी-नवविधियों के अन्तर्गत

पर मणीसे मयन-नम में अधुनों के धन धुमड़ते  
 साधना की सेज पर ये रात-दिन सुख-सुख बिहसते  
 मस्पर्नाए मिट गई, पर चाह भर पाई कभी ना  
 भुट गया सर्वस्य फिर भी साँस कह पाई कभी ना  
 मोर की मुकुमार कसिका बिर गई, कुछ कह न पाई !  
 वेदना मरी धधर तक था गई, कुछ कह न पाई !

हाथ मिट-मिटकर पतंगे जी उठे फिर मस्म से ही  
 प्यार की मनूहार बनकर जल गए क्या रस्य से ही  
 "ना झूरी साधना की राह पर बिलरे मुमन-से"  
 दीप की जलती दिप्या की भारती कहती सुवन से  
 प्रीत की मरिचा सहमकर बुझ गई, कुछ कह न पाई !  
 वेदना मरी धधर तक था गई, कुछ कह न पाई !

अमन-स्थान—बाराणसी ।  
 अमन तिथि — १७ अगस्त  
 १९४२ । पिछा—कापी विपण  
 विद्यालय से बी० ए० । सम्प्रति  
 वहीं से एम० ए० (संस्कृत)  
 कर रही हैं । विशेष—पहली  
 रचना १९३६ में 'आश' के  
 'वास संवत्' नामक स्तम्भ में

### मधुच्छन्दा बासगुप्ता



प्रकाशित हुई । 'आश' के द्वारा  
 ही साहित्यिक जीवन में प्रवेश ।  
 सन् १९४९ में आकाश वाणी  
 के सचनक इलाहाबाद में  
 III कविता-गठ । स्थायी  
 पता—भारत स्मृति भवन  
 सी० १०/१३ मलबहिया  
 बाराणसी १ ।

हिन्दी-नवविचारों के प्रेम-भीत



बस, केवल सपनों में आना !

और समय दुनिया के दर से नीचो पसकों  
उठ न सकेंगी कभी तुम्हारा स्वागत करने—  
मिर्चू जो तुमसे तो मन का बावस देखेगा—  
और कहीं पर जा बरसेगा उसे सुनाने

इस आसिम से बचकर रहना !

बस केवल सपनों में आना !

मन कुछ कहता मतवाला बन तुम्हें देखकर  
मैं समझाती उसे प्यार से स्पर्श संभलकर  
नहीं चाहती उसे रोकना यों निर्दय बन  
फिर भी लेती साँस सदा मैं उसे धमन कर

इससे तो अच्छा मर जाना !

बस केवल सपनों में आना !

इस पथ पर जो गया भटक, वह सीट न पाया  
उसे चाँदनी ने बाबानस बन तरसाया  
दुनिया हँसकर छोड़ गई उसको पीछे ही—  
वह प्रेमी पर उसके मन का भीत न भाया ,

पत्थर बनकर सब-कुछ सहना !

बस, केवल सपनों में आना !

अधिक पास आना भी दुसदायी होता है  
 याद रहे यह मिसन नहीं स्थायी होता है,  
 जब दो दिन के बाद बिछुटना होता है तब-  
 यह मन मृत्यु-सुषा का अभिषापी होता है

अच्छा है, तुम कभी न आना !  
 वस, बेबस सपनों में आना !

जन्म स्थान—मयनर  
 (पालन-पोषण मन्नीमपुर  
 लीटी) । जन्म तिथि—१०  
 अगस्त १९३२ । शिक्षा—  
 एम० ए० (संस्कृत व हिन्दी) ।  
 विशेष—नूरु नाम माधवी-



मधु शुक्ला

लता, शुक्ला । इनके पति  
 श्री रामरत्न शुक्ल कामपुर  
 नगर महापालिका में स्क्रीम  
 सेक्रेटरी हैं । स्थायी-निवास—  
 कामपुर ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

प्राण ! धाकर धाम सो बहियाँ !  
एक युग के बाद आए तुम  
और मुझको कर गए पागल !

तान चादर सो रही थी मैं  
सींच चादर क्यों जगाया रे !  
जागते ही जग गई पीड़ा  
और मन भी हो उठा चबल !  
एक युग के बाद आए तुम,

और मुझको कर गए पागल !

भब न घासी भीद पहलें-सी  
हो न पाती हैं भवेतन हो !  
प्राण रह रहकर तड़पत हैं,  
कर गए हो इस कदर घायल !  
एक युग के बाद आए तुम,

और मुझको कर गए पागल !

जाग जाना ही न बाकी है,  
दूर मजिद राह बाकी है !  
प्राण ! धाकर धाम सो बहियाँ,  
अधु करते हैं डगर धोमस !  
एक युग के बाद आए तुम,

और मुझको कर गए पागल !

हिन्दी कवित्रियों के प्रेम-गीत

अपराध स्थान—मन्थरगढ़  
 (वासन-पोषण मछीमपुर  
 सीटी) । अन्व-तिथि—१०  
 अथवा ११३२ । प्रिया—  
 एम० ए० (संस्कृत व हिन्दी) ।  
 विशेष—पुरुष नाम माधवी-



मधु धुक्ता

मधु, धुक्ता । इनके परि-  
 धी रामरत्न धुक्ता कानपुर  
 मकर महापात्रिका में स्वीत-  
 सेप्रेटरी हैं । स्वामी-निवास—  
 कानपुर ।

प्राण ! धाकर धाम सो बहियाँ !

। एक युग के बाद आए तुम

धीर मुझको कर गए पागल !

तान बादर सो रही भी मैं

सींच बादर क्यों जगाया रे !

जागते ही जग गई पोंडा

धीर मन भी हो उठा चबल !

एक युग के बाद आए तुम,

धीर मुझको कर गए पागल !

धब न आती नींद पहने-सी

हो न पाती हैं अचेतन हो !

प्राण रह-रहकर तड़पत हैं,

कर गए हो इस कदर धायल !

एक युग के बाद आए तुम,

धीर मुझका कर गए पागल !

जाग जाना ही न काफ़ी है,

दूर मंजिल राह बाकी है !

प्राण ! धाकर धाम सो बहियाँ,

अधु करते हैं डगर धोमल !

एक युग के बाद आए तुम

धीर मुझको कर गए पागल !

हिन्दी पत्रपत्रिकाओं के प्रेम-गीत

जन्म स्थान—पुरेन्द्रनगर,  
कच्छ, गुजरात ( यह स्थान  
पहले बड़वास कँध्य कहलाता  
था ) । जन्म तिथि—१९  
जानवरी १९३९ । शिक्षा—  
बी० ए० बी० एड० ।



मममोहिनी

[ विशेष—आजकल आजमेर से  
प्रकाशित होने वाली मासिक  
पत्रिका 'अहुर' का सम्पादन  
करती हैं । वर्तमान पता—  
पो० बा० ८२ कचहरी रोड  
आजमेर ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

## रातों रातों में बीतों

जितना तुम्हें मुसा देने को मन करता है  
सतना ही यह दर्द उभर आता है जैसे ।

सी-सी साँझ डली रातों रातों में बीतीं  
सपनों की हुर गायर रही सदा ही रीती  
सोचा मैंने मौन रहूँगी कुछ न कहूँगी  
पर प्राणों का गीत मुसर आता है जैसे ।

ये प्रनिवन्धों की ऊँची कालो दीवारें  
भाज प्यार की नहीं पूजती कहीं पृथारें  
फिर भी मन को बहसाती हैं या सेती हैं  
पर साँसों का स्वप्न निसर जाता है जैसे ।

कहीं पन्थ ही नहीं दिखाई देना मुझको  
नहीं प्राण का गीत सुनाई देता मुझको  
धीरे मटकते हुए भाज सगता है प्रतिपल,  
सपन घेवरा कहीं उतर आता है जैसे ।

जितना तुम्हें मुसा देने को मन करता है  
सतना ही यह दर्द उभर आता है जैसे !



जन्म स्थान—मथुरा ।  
 जन्म-तिथि—सन् १९४१ ।  
 शिक्षा—बी० ए० । एम० ए०  
 के प्रथम वर्ष में दिल्ली विश्व  
 विद्यालय में प्रवेश । विधेय—  
 पद्य और पद्य दोनों ही



ममता अग्रवाल

विद्यार्थी में प्रवृत्त । विधेय रूप  
 से कविता और कहानी-लेखन  
 में रुचि । बी विद्याभूषण  
 अग्रवाल की सुपुत्री । चतुर्मास  
 पता—२५/४९ सट्टिनगर,  
 दिल्ली ९ ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत



जन्म-स्थान—पटकुआबाद  
(उत्तर प्रदेश) । जन्म तिथि—  
सन् १९०७ । शिक्षा—एम ए,  
(संस्कृत) । प्रकाशित रज-  
नमूने— 'भीहार' 'रसिम'  
'भीरवा' 'साग्य पीत' 'हीन'  
शिक्षा' 'साधुनिक कवि' 'उत्त'  
पत्नी' 'यामा' 'धारि' । विषय—  
हिन्दी की सभ्यता कविता  
महिमा विद्यापीठ प्रयाग की

## महारेवी वर्मा

भाषार्थ साहित्यकार संघ  
प्रयाग की संस्थापिका । कुछ  
समय तक भाग 'बी' की भी  
सम्पादिका रही थी । व० आ  
हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा  
मंगल प्रसाद पारितोषिक और  
'साहित्य-नक्षत्र' उपाधि से  
सम्मानित । सन् १९७५ में  
'पद्मभूषण' से विभूषित ।  
स्वाधीनता — साहित्यकार  
संघ, इलाहाबाद ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-पीठ





मुसकराता हुआ दीप मैं बन सकूँ !

मुसकराता हुआ दीप मैं बन सकूँ

स्नेह इतना हृदय में भरों धाज तुम !

सबलदायी हुई वस्तिका दैसकर  
भय यही है तिमिर विर न जाए वहाँ  
धूम्र भरकर पविक के मधुर राग में  
हर बड़ी रागिनी को बसाए यहाँ,  
एक मञ्जिम समझकर विसं रुक गए  
मित नये पन्थ का बहु सुजन वन गई  
फिर गई राह पर प्राण भाकुन हुए  
और उलझन सुलझकर गई हो गई

हर गई राह का सत्य मैं पा सकूँ,

आरम-विश्वास इतना भरों धाज तुम !

मुसकराता हुआ दीप मैं बन सकूँ,

स्नेह इतना हृदय में भरों धाज तुम !

मोतियों से न सीसी रहे धाँख यह  
रागिनी कण्ठ में खो न जाए कहीं  
भय मुझे है तिमिर को घनी छाँह में  
ज्योति धुँससी स्वयं हो न जाए कहीं,  
जिम्बगी में लिपी है परिधि मीत की  
उगमगाता हुआ हर कदम बस रहा,

हिन्दी-कविमिथिला के प्रेम-गीत

एक पल की मनुज की हँसी को यहाँ  
 डवडवाता हुमा हर नयन छन रहा,  
 चीन्नी-सा मधुर हास बिखरा सकू  
 प्राण ! उन्माद इतना भरो घाम तुम  
 मुसकराता हुमा दीप में बन सकू  
 स्नेह इतना हृदय में भरो घाम तुम

फूल कुछ मर रहे हैं धरा पर धरे  
 नव कमी का न रूपाट हटाओ अभी,  
 हैं सके साथ ही मुसकरा घूमकर  
 डाल के फूल यों मुसकराओ अभी  
 धावराण रश्मि का फूल पर डाल दो  
 नव कसो के नयन मुसकरा तो सकें,  
 हो गए राग का ही सज्जन कुछ पड़ी  
 मुक्त मन से धर धुनगुना तो सकें  
 मैं गरम पी सकूँ गीत गा-गा यहाँ  
 जीभ पर बूँ मधु की धरो घाम तुम !  
 मुसकराता हुमा दीप में बन सकूँ  
 स्नेह इतना हृदय में भरो घाम तुम !

जन्म-स्थान— श्रीरंगनाथ  
(भाग्य प्रवेश)। जन्म तिथि—  
४ जून १९३४। शिक्षा—  
एम ए० (हिन्दी)। विशेष—  
चीन कहानी शब्द-चित्र तथा  
छोटे-छोटे रेडियो-नाटक लिखने  
में विशेष रुचि। विवाह से



मालती जोशी

पूर्व 'मालती विशेष' नाम से  
लिखती थीं। वर्तमान पता—  
हाउ भी सोयनाथ जोशी  
असिस्टेंट इंजीनियर पुनर्वास  
कमल कौलोनी भानपुरा  
बाया भद्राबाई रोड (पश्चिम  
रेलवे)।

हिन्दी-कविमित्रियों के प्रेम-गीत

पूय-छाँह है प्यार तुम्हारा ।

पूय छाँह है प्यार तुम्हारा,

कभी हँसाए, कभी रखाए, हाथ न धाए ।

कभी-कभी नन्दन-कुसुमों से  
मर जाती है मेरी छाँही,  
कभी राह की धूल निगोड़ी  
कर जाती है कूर ठिठोसी

इसीलिए तो बिसस बिससकर कहती हूँ मैं—

बेरी है या भीत हमारा

गले लगाए, मा दुखाए, बाज न धाए ।

पूय-छाँह है प्यार तुम्हारा

कभी हँसाए कभी रखाए, हाथ न धाए ।

मुझपरि हो जाता घपने में  
कभी-कभी तो सुनापन भी  
घोर कभी तो भरे जगत् में  
पास न रहता घपना मन भी

इसीलिए तो बिसस-बिससकर कहती हूँ मैं—

भीज रहूँ या उस चिनारा

कभी कुवाए, पार लगाए, पास जगाए ।

पूय-छाँह है प्यार तुम्हारा

कभी हँसाए कभी रखाए हाथ न धाए ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

१९१



कभी कल्पना के बागों में  
बैठ जाते हैं सण भनवाने  
कभी मयन के यमुना-जल में  
बह जाते हैं घर पहचाने

इसीलिए तो तड़प-तड़पकर कहती हैं मैं—  
हैं कैसा भनमोक्ष सहारा

दीप बुझाए, स्वप्न सभाए नींद न आए ।  
दूध-छाँह है प्यार तुम्हारा  
कभी हँसाए, कभी रूखाए हाथ न आए ।

जगन्-स्वाम— बहुराज  
 (उत्तर प्रदेश) । जन्म-तिथि—  
 १ जुलाई १९३९ । शिक्षा—  
 एम० ए० (हिन्दी) । प्रकाशित  
 रचना— 'मणिमा' (कविता  
 संग्रह) । सम्पादित रचना—

मानती श्रीवास्तव



'एतावती' (संग्रहालय) ।  
 रचयिता— डा० डॉ० गंगा  
 प्रसाद श्रीवास्तव काठनवी  
 पुस्तक बहुराज ( उत्तर  
 प्रदेश ) ।

हिन्दी कवियों के प्रेम गीत

मेरी साज रखना !

तुम जहाँ चाहो रहो सिम्झूर मेरे

इस दुधारी माँग की पर साज रखना ?

काँपकर ही रह गया तन-मन व्यथा का  
तुम कभी भी धीर की बूनर न लाए,  
सान्त्वना की सप्तरंगी बोझनी की—  
माससा ही रह गई मन में छिपाए

तुम गगन में ही हँसो मधु गीत मेरे

जो छिपी है पीर उसकी साज रखना !

तुम जहाँ चाहो रहो सिम्झूर मेरे

इस दुधारी माँग की पर साज रखना !

तुम गगन के जलधरों से खेल खेलो  
तुम तड़पती बिजुल का उपहार ले लो  
देख झुँगी मैं नयन भर दूर से ही—  
स्वर्ण किरणों के बड़ो उपहार ले लो

रूप के पीछे पड़े धुङ्गार मेरे

मैं तुम्हारी छाँह मेरी साज रखना !

तुम जहाँ चाहो रहो सिम्झूर मेरे,

इस दुधारी माँग की पर साज रखना !

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

युग-युगों की साधना के स्वर सँजोए  
 प्राण प्राकृत के तनिक भोले न धोसे,  
 रागिनी मन की गगन तो जा रही हो—  
 छीन कोई से न पथ में भाव भोसे  
 पवन रथ पर जा रहे संगीत मेरे  
 मैं तुम्हारी बीणा मेरी लाज रखना !  
 तुम कहाँ जाहो रहो सिन्दूर मेरे  
 इस दुसारी माँग की पर लाज रखना !

जन्म - स्वान — हरदा  
(मध्य प्रदेश) । जन्म-तिथि—  
४ मई १९१३ । शिक्षा—एम०  
ए (अंग्रेजी) । प्रकाशित रक्त-  
नाए— 'तुम बड़ी पावन हो'  
(बहामी संग्रह) 'बामी'  
(उपन्यास) । विद्येय—हिन्दी



### मासती सिरसीकर

की तरण पीढ़ी की कहानी  
शैक्षिकार्थों में व्यपष्टी । प्रख्यात  
प्रयोगवादी कवयित्रियों में से  
एक । विवाह से पहले 'मासती  
पकनकर' नाम से लिखती थीं ।  
वर्तमान पता—ई० ६६ मोठी  
बाग नं० १ नई दिल्ली ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

पहचानते हैं प्राण तुम्हें ।

पहचानते हैं प्राण तुम्हें पर ये नयन नहीं ।

हुई बावरी बहुत बार भगर निमी न खबर,  
किस दिशा से घाते हैं स्वर किस इंगित पर  
बहते हैं नयनों से निम्कर झट्झ झट्झ मर मर ।  
छुनी है क्यों तान तुम्हारी प्राणों के पंखी को  
बहसाता क्यों क्यास तुम्हारा प्रपत्तों की बंगी को  
रोज-रोज सोजकर, पवन-गगन को टोककर  
हार गई मैं हार गए पम पर यह भगन नहीं ।  
पहचानते हैं प्राण तुम्हें पर ये नयन नहीं ।

बसता दिन है बसती जाती है, हर घाने वाली रात  
पर बसी नहीं टिनी रही, भवस सती-सी साथ  
छँ-छँ में भग भग में मरकर भवसादी उम्माद ।  
यौवन भर जायेगा भरती ज्यों पतझर की पंक्ति  
किन्तु प्यार तुम्हारा सदा रहेगा मत्सु-पार भी साथ  
या वस बाधीप का कि वी गई म विप भीरा-सा  
कान्हा बिन किसी में रही जा पल भी भगन नहीं ।  
पहचानते हैं प्राण तुम्हें पर ये नयन नहीं ।

जन्म-स्थान—अमरगढ़पुर,  
 मेरठा प्रभाग । जन्म-तिथि—  
 अगस्त १९२६ । शिक्षा—  
 पञ्जाब विश्वविद्यालय से हिन्दी  
 प्रभाकर और अंग्रेजी में बी०  
 ए । प्रयाग-हिन्दी-साहित्य  
 सम्मेलन से 'साहित्य रत्न' ।  
 प्रकाशित रचनाएँ—कविका



मोहिनी गौतम

(कविता संग्रह) इसके अति  
 रिक्त एक कहानी-संग्रह भी ।  
 विशेष—विस्ती कालिन विस्ती  
 के हिन्दी-सम्पादक डॉ० मंग  
 मोहन गौतम की बर्मपत्नी ।  
 स्थायी पता—कठीली मेरठा  
 रोड इमाहाबाद ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-पीठ

कसि, तुमने सिलकर क्या पाया ?

मुमत्तान तुम्हारे घन्तर को पल भर भी ठगला कर पाया ?

कसि, तुमने खिलकर क्या पाया ?

ऊँचा की मरुणाई से वह सन्ध्या तक तुम पर मेंढराया  
हिम की धँचियायी रज्जमी में भीरा बज तुममें बँध पाया ?  
तुम कुहर म्त्तान हो मृकुराई ठड़ गया सभी पर रुब पाया  
तुम सम्पुट छोले खड़ी रहों, नेकर धवित्र मन धरमाया !

कसि, तुमने सिलकर क्या पाया ?

तुम बनी प्रतीक्षा की बातों, बीपक बन सचित नेह जना  
पल भर को भी पतंग बनकर, वह निष्कुर बज पाया । पपसा  
तुमने छुद ही मुट-मुटकर तो, उसरो म्बच्छन्द बना पाया  
जब बूँस चुका, रस बूँस चुका, क्या कमो भूषण भी पाया ?

कसि, तुमने सिलकर क्या पाया ?





जन्म-स्थान—उज्जैन  
जन्म तिथि—सन् १९३६  
शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी)।  
विधेय—हिन्दी की नई पीढ़ी  
के विशिष्ट गायक भी श्रीरेन्द्र  
मिश्र की छोटी बहन। इनके  
पिता भी अन्धकामराव मिश्र  
भी अच्छे कवि हैं। सामुनिक  
काव्य का विकास पर एम०

रजनी मिश्र

ए० परीक्षा के लिए प्रस्तुत  
किया गया विशिष्ट प्रबन्ध  
अत्युत्तम है। छोटी अवस्था से  
ही कविता में रुचि जो बड़े  
भाई से प्रभावित होकर  
कामागार में पल्लवित और  
परिष्कृत हुई। वर्तमान पता—  
धरि का बाजार, मयकर  
(म्यामिगर)।

हिन्दी-कवियों के लेख

मन के भीत न आए !

बाट देसते हारी धँसियाँ मन क मोत न आए !

मन के मोत न आए !

हुई मोर घासा की बँदी ने उगा का भाग गजाया  
घँपड़ाई ले जगी तमन भावों ने मय पर्व मनाया  
घग्गानों की घमराई में मन की ज़ोयन पाए !

मन के भीत न आए !

भारी मन बोझिल पसवों न राह द्यत समय बिताया  
मनगिन दिये बिताते मन का, किनगी बाग नही समझाया  
सपन-भरे नयनों में मेरे धाँसू ही भर पाए !

मन के भीत न आए !

बसी पुरबिया निकला जगजगत् नर बसे मितारै  
लगन न छूटी, घास न दूरी में अपने शिखान महारे  
मेरे मन्दिर में तेरा ही स्नेह-गाय मुमकाए !

मन के भीत न आए !

जन्म-स्थान—बननपुर ।  
 जन्म-तिथि—१९ दिसम्बर  
 १९१२ । विवाह—२८ जून  
 १९२५ को सहारनपुर में ।  
 शिक्षा—काव्यतीर्थ परीक्षा  
 सन् १९२८ में द्वितीय श्रेणी  
 में उत्तीर्ण की । विरोध—  
 कविता लिखना इन्होंने सन  
 १९३९ में शुरू किया और



रत्नकुमारी काव्यतीर्थ

अपने पिता सेठ गोविन्ददास के  
 नाटकों के बीतों को गिनाकर  
 लगभग २० कविताएँ लिखी  
 हैं । प्रकाशित पुस्तकें—'अंकुर'  
 (कविता-संग्रह) श्री नर्मदा  
 प्रसाद खरे की विस्तृत प्रशिक्षण  
 सहित । स्थायी पता—राजा  
 मोकुलपात का महल अवध  
 पुर ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-बीज

रे मन ! धाँसू पी ले !

निमृत्त मीद स जाग निरन्तर नयन नीर स गीले !  
रे मन ! धाँसू पी स !

दीनव दीया पर सोया था सुख से रे भमजान !  
किस निर्दय घोंगुली ने छेड़ी सिन्धी बीन पर तान !  
निकले राग रसीम !  
रे मन ! धाँसू पी ले !

बीक बकित-सा उड़-उड़ मत छू रे बादल क कुल !  
उच्छवासों को धाँपी बसती पथ न जाना भ्रम !  
रुक जा हाथ ! हठीले !  
रे मन ! धाँसू पी स !

मातुर भाशा सोल झँकती, सुल-मुपमा ब डार !  
बन्दो का जीवन रे मोले ! हो जावेगा भार !  
होनिराग ही जीस !  
रे मन ! धाँसू पी स !



जन्म स्थान—दाम नग  
 बेरिया (हरदोई) उत्तर प्रदेश ।  
 जन्म तिथि—२६ मई एन्  
 १९२७ । शिक्षा—एम० ए०  
 (हिन्दी तथा राजनीति) तथा  
 एम एम० बी० (सकल  
 विश्वविद्यालय से) । प्राथमिक  
 शिक्षा बी० ए० तक महिला  
 कॉलेज सकलनग में प्राप्त की ।  
 प्रकाशित रचना—‘समृद्ध केन्द्र’  
 (कविता संग्रह) । विशेष—  
 हिन्दी की नई पीढ़ी की कव

### रमा सिंह

विचारों से सज्जनम् । आपकी  
 रचनाएँ आकाशवाणी के  
 विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित होती  
 रहती हैं । ‘आनन्द’ ‘कल्पना’  
 ‘विपश्चिन्ता’ ‘संकेत’ आदि  
 ‘हिन्दुस्तान’ ‘युगमूर्ति’ तथा ‘नया  
 समाज’ आदि पत्र-पत्रिकाओं में  
 सततम्पात्र रचनाओं का प्रकाशन ।  
 आनन्द महिला विद्यालय  
 सकलनग में हिन्दी की प्राध्या  
 यिका । वर्तमान पता—विह  
 लान, हुनगर्ग पार, सकलनग ।

हिन्दी कवयित्रियों के प्रेम-पीठ

मेरे पास कुछ उतर नहीं !

सोम घाई खुप हुए धरती-मगन  
नयन में मोघूँसि के बादम उठे  
बोझ से धमकें झगी नम हो गई

सोम न पूछा उदासी किसलिए ?  
किन्तु मेरे पास कुछ उतर नहीं ?

रात घाई, कासिया घिरती धर्म  
संजन तम में द्वार धन के गुल गए  
बाह की बिनपारिषाई हंसने सगी

रात ने पूछा, जमन यह किसलिए ?  
किन्तु मेरे पास कुछ उतर नहीं ?

मीन घाई, खजना सब मीन है  
देह्यककर सो धर्म पर प्राण को  
खपन की जादूमरी गलियाँ मिली

मीन ने पूछा मुलाखे किसलिए ?  
किन्तु मेरे पास कुछ उतर नहीं ?  
प्रान तो बिकरे यहाँ हर मोर हैं  
किन्तु मेरे पास कुछ उतर नहीं ?

जन्म-स्थान—बोमपुर। जन्म  
तिथि—सन् १९२७।  
सिला—मैट्रिक के बाद एम०  
ए० तक प्राइवेट पढ़ा। राज  
स्थान विश्वविद्यालय से सन्  
१९५५ में 'राजस्थान के राज  
परानों द्वारा हिन्दी की सेवाएँ'  
विषय पर पी-एच० डी० की  
उपाधि प्राप्त की। विशेष—  
विवाह से पूर्व 'राजकुमारी बिज



### राजकुमारी कौल

पूरी नाम से विख्यात हैं।  
भाजकम बयपुर के महापत्नी  
कालिज में हैं। कविता के अति  
रिक्त चितार और वायलिन  
आदि में विशेष रुचि। प्रकाशित  
रचनाएँ—'आलापीप' (कविता  
संग्रह) 'स्मृतियों की छाँव'  
(कहानी-संग्रह)। वर्तमान  
पता—४ विवेकानन्द मार्ग सी  
स्कीम बयपुर।

हिन्दी कविविधियों के प्रम-वीर

प्राण तुमको दे रही है ।

प्राण मुझे तुमने दिया मैं प्राण तुमको दे रही हूँ ।

व्योम की इस क्षितिज-रक्षा—

से घटम विश्वास सम्बल  
हामली मैं धो निष्ठा मे

भर पलक में स्वप्न का जल  
क्यों न मेरे ज्वलित प्रयत्नों—

को बुझाती धधु-धारा

मन मुझे तुमने दिया मैं मान तुमको दे रही हूँ !

प्राण मुझे तुमने दिया, मैं प्राण तुमको दे रही हूँ ।

तुम कहो तो भ्राम सार—

बुझित जग का ताप हर नू,  
धीर जगती की व्यथा से

भाज अपने नयन भर नू  
प्राण का निश्वास पहसा

साँस के अन्तिम क्षणों में

येय तुमने दे दिए, मैं मान तुमको दे रही हूँ !

प्राण मुझे तुमने दिया, मैं प्राण तुमको दे रही हूँ ।

मोतियों का हार है या

धूसि पर चित्तगारियाँ हैं

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रथम-गीत



प्रिय तुम्हारी राह में  
 अभियेक की तैयारियाँ हैं  
 किन्तु निद्रा के सजे हैं  
 द्वार बन्दनवार सपने  
 यशु तुमने दे दिए, मैं ध्यान तुमको दे रही हूँ ।  
 प्राण मुझे तुमने दिया मैं प्राण तुमको दे रही हूँ ।

प्रकृति की सीमन्त में—  
 सिन्दूर किसने भर दिया है  
 पीर में तो दूर थी—  
 मण्डूर किसने भर दिया है ?  
 धाज मुझको विजय भी  
 मिलाती पराजय के स्वर्णों में  
 प्रीत तुमने ही कि मैं पहचान तुमको दे रही हूँ ।  
 प्राण मुझे तुमने दिया मैं प्राण तुमको दे रही हूँ ।

भाज में ही तो सिखाती  
 वीर को से पीर पसना  
 सीसता है धसम मुझसे  
 ही घरे, बुपचाप बसना  
 भाज मेरी राह में तो  
 हार को भी हारना है  
 दे दिए पापाण, मैं मगवाय तुमको दे रही हूँ ।  
 प्राण मुझे तुमने दिया मैं प्राण तुमको दे रही हूँ ।

मानती हूँ फिर गई हूँ—  
 तिमिर से मैं हूँ धनेसी

इन उमड़ती वल्लियों की  
 भाँस है मरी सहेली  
 किन्तु क्षीपक नीस नभ क—  
 दे रहे आसोक मुझको  
 तम मुझे तुमने लिया निमग्न तुमका दे रही है ।  
 प्रण मुझे तुमने दिया मैं प्राण तुमको दे रही है ।

बाद में तो दिन निवसता  
 रात भाँसों में मुझा ली  
 तुम हठीले हो अगर तो  
 आज मैं भी हूँ निरासी  
 भंक में भर प्रणय परिमल  
 ले हृदय में एक आशा  
 घाप तुमने दे दिया, वरदान तुमको दे रही है ।  
 प्रण मुझे तुमने दिया मैं प्राण तुमको दे रही है ।

जन्म-स्थान—बनारसपुर ।

जन्म तिथि—सन् १८९० ।

अपने छात्र-जीवन से ही वे कविता लिखने और भाषण देने की ओर प्रयुक्त थीं । सन् १६ में हुई पति की प्राकस्मिक मृत्यु के बाद आनन्दमयी अपनी एकमात्र पुत्री के साथ रह रही हैं । विशेष—आप प्रसिद्ध मन्त्रकार नेता स्व० हरिहरनाथ आर्य की



## राजकुमारी श्रीवास्तव

की पत्नी श्रीमती अनुपम  
श्रीवास्तव की बड़ी बहन हैं ।  
आपकी रचनाएँ 'आनन्दमयी'  
'हिन्दुस्तान' 'धुमा' तथा  
'माधुरी' आदि पत्र-पत्रिकाओं  
में प्रकाशित होती रही हैं ।  
स्वाधीनता—द्वारा कुमारी  
कीति विचारों ए० डी० ए०  
मण्डला (मध्य प्रदेश) ।

हिन्दी-जनमित्रों के प्रेम-मील

मेरे प्रियतम साकार धमर !

मेरे जीवन का सार धमर, मेरा सुन्दर संसार धमर !

मैंने भी गाए गीत कभी,  
मैंने भी पाई प्रीत कभी  
जो धाज कलन भी बन न सका  
बहु जीवन था संगीत कभी

उर की जय-मासा वस भर में बनती प्राणों की हार धमर !

मन ने तारों पर सुघ-सुघ जो  
मैंने जो गीत बजाया था  
हाँ स्वयं स्वर्ग भी माहित हो  
फिर इस धरती पर धाया था ,

बहु स्वर्ग गया धौणा दूटी, पर उसकी मूढु झटार धमर !

यह भेद बता दे ओ निर्मम  
मुझको बसपावर क्या पाया ?  
तूने मुझसे धन से छुनी  
केबस उनकी नदवर काया ,

मेरे धमर क धासन पर मेरे प्रियतम साकार धमर !

मठ पूछा उसने क्या सोया,  
जिसका सबरव समपित है

जिसके प्राणों का अणु-अणु भी  
 प्रिय के करणों पर अधिष्ठ है,  
 सोना ही पाना मन जाता जब जीवन ही उपहार धमर !

जब दीन उसे कहता बसे  
 जिसका मन किंचित् दीन नहीं  
 उसकी स्मृतियों से घासोकिठ,  
 अन्तर मेरा छवि-हीन नहीं  
 नस्वरता को जीवन देकर जमका देता है प्यार धमर !

मेरी सचुता से जो पाते,  
 अपनी महिमा का आदवासन  
 वे दुर्बल मन कब कर पाए,  
 मेरे गौरव का ठेक सहन  
 उनके प्रहार से तिरस्कार, बनते मेरा उपकार धमर !

जग मेरी भरिमा क्या जाने,  
 क्या मेरा वैभव पहचाने ?  
 जिसके अंजल में बिम्बामणि,  
 वह क्या मूर्कों से मय माने ?  
 तूझान पराजित हों जिससे मेरा प्रकाश आचार धमर !

पथ में वह पवित्र भटकता है  
 जिसमें निज केन्द्र नहीं जाना  
 यदि भटका तो भी सा न सचा,  
 जिसने मजिल को पहचाना,  
 दुस मेरी मंजिम का साथी, मेरे मन का शूङ्गार धमर !  
 मेरे जीवन का सार धमर मेरा सुन्दर संसार धमर !

ब्रह्म हत्या—घागरा ।  
 ब्रह्म-तिथि— १४ पुष्य  
 १९१४ । त्रिणा—एम० ए० ।  
 घात्रकमलजनकविरचविद्यालय  
 मे ममात्र शास्त्र विषय पर  
 अनुमन्त्रण कर रही है ।  
 विनय—इनके पति श्री कैबीरीन  
 त्रिवेदी लखनऊ में तिरुता उप-  
 संवांसक हैं । इनकी रचनाएँ  
 सन् १९१२ से ही 'आर्य महिमा

### राजराजेश्वरी त्रिवेदी 'नसिनो'

'माधुरी श्री' 'विरचवित्र  
 प्रादि पत्र-पत्रिकाओं में प्रका-  
 शित होती रही है । प्रकाशित  
 रचनाएँ—'कुसुम' । एक संवत्  
 और भी दीर्घ ही प्रकाशित  
 होने वाला है । घात्रकमल भी  
 इनके भीन भावना वाली के  
 लखनऊ केन्द्र से प्रकाशित होते  
 रहने हैं । रचनीयता—५ नाम  
 लगेयु लखनऊ ।



कब किसकी साथ हुई पूरी !

फिर साव सज्जनि जग पूछ रहा मेरी उस मौन कहानी को  
जीवन की पुँचली दर्दीनी सपनों की खेप निघानी को

मेरा घटीत लो गया हाथ  
युग के जंघम धमिसारों में

वे स्वप्न मज्जीमे टूट गए,  
बिनिमय को मनु मनुहारों में

मेरे प्राणों के गीतों की  
बिल्ली हैं धाकूम पंखुड़ियाँ

विस्मृति के जगलों में बेसुध  
मूर्धित कवि की कविताबसियाँ

बह सुनने को झूठ म रहा युग-युग की कथा पुरानी को !  
फिर साव सज्जनि जग पूछ रहा मेरी उस मौन कहानी को !

सौमो क मिक्ता-कण पर यह

मासो का सुम्नर महम खड़ा  
है इसका पत ठिकाना क्या

कब बना और फिर कब बिपदा  
सपपण का इस दुनिया में

कब किसका उर-सुमन सिमा,  
कब किसकी साथ हुई पूरी

किसका धमुराग फसा फूसा

हिन्दी-कवयित्रियों के श्रम-जीव

मैं मौन धकित-सी निरस्त गृही कब से जग की मममानी को !  
फिर आज सजनि जग पूछ रहा मेरी उस मौन कहानी को !

सपनों में उमठ रहा सावन  
है गरज रहा बादों तर में ,  
मैं बंसे गाऊँ गीत मधुर  
बघरुछ बण्ठ दूँ स्वर में  
बर्षों भरी मौन विवग्ना से  
असि ! आज जगत् को प्रीत हुई  
बयों मेरी मौन धर्चना भो  
अब उसको अमह प्रसीत हुई ,

फिर आज हटीला जगा रहा, साईं-सी याद पुगानी को !  
फिर आज सजनि जग पूछ रहा मेरी उम मौन कहानी को !  
जीवन की धँबसी दर्दीसी, सपनों की दोप निशानी को !



## कब किसकी साथ हुई पूरी !

फिर आज सज्जि जग पूछ रहा मेरी उस मौन कहानी के  
जीवन की धुंधली तदीमी सपनों की छेष निशानी के

मेरा पतीत को गया हाम  
युग के लंबन अभिसारों में,  
वे स्वप्न सज्जोमे टूट गए,  
विनिमय की मृदु मनुहारों में  
मेरे प्राणों के गीतों की  
विरारी हैं आकुल पंखुवियाँ,  
विस्मृति के जगलों में बेसुध  
सुखित कवि की कविताबसियाँ

वह सुनने को आज ठम रहा युग-युग की कथा पुगनी के  
फिर आज सज्जि जग पूछ रहा मेरी उस मौन कहानी के

सोमो क रिक्ता-कण पर यह  
मसो का सुन्दर महल सड़ा  
है इसका पत ठिगाना क्या,  
कब बना प्रीर फिर कब बिगड़ा  
सुखर्पण का हम दुनिया में  
कब किसका उर-सुमन सिमा  
कब किसी साथ हुई पूरी  
निसबा धनुराग फसा-फूसा ,

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-

मैं मौन चकित-सी निरल रही, जब से जय की मजमाती को !  
फिर आज सजनि जग पूछ रहा मेरी उस मौन कहानी को !

पलकों में उमड़ रहा सावन  
है गरज रहा भादों तर म  
मैं कैसे गाऊँ गीत मधुर  
शबकद कण्ठ दूँ स्वर में ,  
क्यों मेरी मौन विवशना से  
बसि ! आज जगत् को प्रीत हुई  
क्यों मेरी मौन चर्चना भा  
शब उसको समझ प्रतीत हुई ,

फिर आज हटीसा जवा रहा, साईं-सी याद पुगनी को !  
फिर आज सजनि जग पूछ रहा मेरी उन मौन कहानी का !  
जीवन की धँसली दर्दोली, सपनों की छाप निदानी को !

अमर रत्नाम्—ग्राम बन्धा  
पुर (कानपुर) । जन्म-तिथि—  
वसन्त पंचमी सन् १९०९ ।  
निधन-तिथि—२४ जून सन्  
१९४९ । विशेष — भाषकी  
रचनाओं में वीर रस वीर भक्ति  
रस के साथ-साथ वेदना की  
छाया रहती थी । भाषको  
छ० भा० महिला-कवि-सम्मेलन



## स्व० राजरामी चौहान

प्रधान में पहले-पहल कविता  
पाठ करने पर स्वर्ण पत्रक प्राप्त  
हुया था । भाषके पिता एवम्  
भूपसिंह की कृपे 'मूय' स्वयं  
भी प्रतिष्ठित कवि थे । इनकी  
बड़ी बहन रामकुमारी चौहान  
भी हिन्दी की प्रतिष्ठित  
कवयित्री हैं । अतः नामक  
भाषका कविता-संग्रह अभी तक  
प्रकाशित नहीं हो सका ।

म पूरी हुई आज तक चाह ।

हृदय-सागर में उठती निरख तरंग भाव भरी उद्दाम  
उसीमें आशा का जल-यान जा रहा है मरा अशिराम  
कटी बरों-सी बड़ियाँ कटित दिवस भी युग-स हृग व्यतीत  
आज भी अरमानों के साथ गा रही आँख दुःख के गीत  
समझती थी पागल है विश्व नहीं जब तुमस थी पहचान  
किन्तु मैं सब कुछ पगली हुई देव । अब हुआ तुम्हारा भान  
दिसाई दिये घटेले रहे न जी भर तुम्ह विलोका चाह  
रही मन में मन की अमिताभ न पूरी हुई आज तक चाह  
तुम्हारी पद-पूजा के लिए अनोख चुन रखने के फूल  
सोचती थी मन में विधि-वाम न जाने कब होव अनुक्रम  
अप्रसर होना चाहा किन्तु किया माया ने प्रबल विरोध  
अचानक पुनः उठे यह प्राण भूत सब अपने मन का बोध  
हृदय-मंदिर में तब से नाथ तुम्हारी प्रतिमा है धामीन  
उसीका करती पूजन और साधना में रहती है भीन

दिग्गी-बब पवित्रों के प्रम-गीत

जन्म-स्थान—धामीन नगर

(मुजफ्फरनगर) उत्तर प्रदेश ।

जन्म-तिथि—अक्तूबर १९०७ ।

मिशन तिथि—१९ नवम्बर

१९४१ । विशेष—हिन्दी के

प्रख्यात पत्रकार और 'नया

जीवन' पत्रिका के सम्पादक

भी रह चुके हैं। मित्र 'प्रभाकर'

की बर्मापत्नी । विवाह से पूर्व



स्व० रामकृष्ण 'प्रभा'

यद्यपि इनका अक्षर-ज्ञान कुछ  
बहुत कम था कि भी न पढ़ना था  
परन्तु फिर भी श्री प्रभाकर जी  
के सम्पर्क-साहचर्य से बाद में वे  
अज्ञानमयी लेखन व कविताएँ  
बढ़ी उन्नतता से लिखने लगे  
थी । इनका जीवन व्यक्तित्व-  
निर्माण की साधना का एक  
बेध सदाहृत था ।

हिन्दी-व्यंग्यविधियों के प्रेम-नीत

समझूंगी इसको भी प्यार !

अकारमय घनी मिटा है बठी है सरिता के तूत !  
! करणों में धर्पण हित छोड़ रही मानस के फूल !

जब करणों में यह पहुँचेगी पहुँचेगे मरे भी फूल !  
देत इन्हें स्मर मुझको लेना, जाना जीवन धन फिर भूल !

मेरी स्मृति में नष्ट न करना सरिता-संगम-सुख है प्राण !  
हृदयांचल में मे स्मृति ऐसी होती है द्रुत अन्तर्धान !

अन्तिम भेंट समझकर प्यारे, फूलों को करना स्वीकार !  
अपवा पग से छुड़ा देना, समझूंगी इसको भी प्यार !

जन्म स्थान—सीतामढ़  
(कानपुर)। जन्म तिथि—अप  
इन इच्छा ६ सन् १९३६।  
विशेष—इनके पिता तथा माता  
से इनमें काव्य प्रतिभा प्रस्फुरित  
हुई। इनका विवाह सन् १९९४  
में अईसी के प्रसिद्ध छात्र-सेवी  
कृष्ण रत्नसिंह जी ए० एन-  
एल० बी० एड्जोकेट के साथ  
हुया। सन् १९२६ में पति का  
पुनर् विधायन हो गया। बेचना

### रामकुमारी चौहान

पूर्ण कविता लिखने में किसी  
समय आप महादेवी वर्मा के  
समकक्ष मानी जाती थीं। आपके  
'निश्वास' नामक काव्य-संग्रह  
पर सम्बत् १९९२ वि० में सम्मे  
जन का 'शेकसरिया पुरस्कार'  
दिया गया था। अनेक अग्रकावित  
रचनाएँ प्रकाशन की प्रतीक्षा  
में हैं। स्थायी पता—महाराष्ट्र  
महर्षी बाई का मन्दिर, अईसी  
(उत्तर प्रदेश)।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-जीत

गीत कोई गा रहा है !

शीघ्र दूटे तार उर के, क्यों खजाता जा रहा है ?  
गीत कोई गा रहा है ?

मुप्य श्रीवन-स्वप्न मेरा हीन जगमग जल रहे हैं  
मीन मम के शीघ्र तारे बिन्दु-वैभव सम रहे हैं  
रुद्ध उसने तार मम के मीन हो मृगमय रहा है !  
गीत कोई गा रहा है !

मृग्य मादक मोहिनी में, बिन्दु वसुध सो रहा है  
छान्ति, सन्ध्या का भिसम तम-आनिमा को धो रहा है  
माज बरुणा के उदभि में उबार-सा दुःख धा रहा है !  
गीत कोई गा रहा है !

तरल स्वर सहरी हृन्मयी यन्त्रिका के स्वर सजाती  
घिघिसि सोई भावना की मुप्य पीड़ा को जमाती  
मृन्मय मरुमन-मध्य मधु का कीन रस घरसा रहा है !  
गीत कोई गा रहा है !

मृन्मय छट पर मृन्मयता की मोल सहरो में समामा  
विकस कीहुड़ विषम मेघा में पवित्र यह कीन प्राया  
कीन उर के शीघ्र पथ पर बिछू बरता जा रहा है ?  
गीत कोई गा रहा है ?

हिन्दी-वचनविधियों के प्रच-गीत



गायक यहाँ न देखो तान !

सभी-सभी तो सोया है मम सौदाग का भवसान !  
गायक यहाँ न देखो तान !

हठराई-सी सकुचाई-सी  
सुल-दुल रंगित कसियाँ  
बिली-सी मुरझाई-सी  
स्वप्नित नम-ताराबनियाँ  
बिसल रहे उर के प्रसाद में प्राणों के चिर मान !  
गायक यहाँ न देखो तान !

सोने दे हँसने दे मुग्धता  
स्वप्न मग्न के अभिनय में  
गाने दे उर के तारों पर  
मिसने दे उस लय में  
जहाँ कूबली खल भर भी तो हृदय विजय की तान !  
गायक यहाँ न देखो तान !

भर सेने दे जीवन की—  
रग-रग में बहु उन्माद  
भुसासके ओ निर्दय की—  
कटु मधुर निरालो याद  
पा सेने दो इसे यहाँ उर के सबसे उर दाम !  
गायक यहाँ न देखो तान !

कल्पित उर के सपु प्रकाश में  
 जग के इन धारों को  
 बूझ रहा इस घासा बसि में  
 छिपे हुए छासों को  
 वहाँ प्रीति का घन्ट मिनाता, बिर बिद्धूहे दो प्राण !  
 गायक वहाँ न खेड़ी तान ।

जन्म-स्थान—ग्राम देवर,

बिला जमान (उत्तर प्रदेश) ।

जन्म-तिथि—सन् १९११ ।

निधन तिथि—सन् १९६३ ।

विशेष—आपकी शिक्षा लखनऊ

के गरीबी नामक मुहल्ले में

(वहाँ उनकी लनिहान थी) हुई

थी और सन् १९२९ में आपका

विवाह श्री लक्ष्मीसुंदर मिश्र

'अक्षर' के साथ हो गया था ।



## स्व० रामेश्वरी देवी 'अकोरी'

श्री आर्य जी स्वयं भी बड़े पण्डित

लेखक और कवि हैं । अकोरी जी

उनके सहयोग से कविता के अम

में असह्य हुई और बोड़े-से ही

अमन में अच्छी ब्यापि प्राप्त कर

ली थी । प्रकाशित रचनाएँ—

'दिनकर' 'मकरन्द' (काव्य

संग्रह) 'पूव घड़ी' (कहानी-

संग्रह) ।

भग्न हृदय के किस कोने में !

क्या है छिपा, धीर क्या सुप्त है मिमता जो तुमको रोने में ?  
भग्न हृदय के किस कोने में ?

क्यों तुम पथ में यान्त-बलान्त-सी  
बैठी हो सखि ! व्यथित भ्राम्त-सी  
धीरम उच्छवासों द्वारा तुम  
किसे बुलाती हो अद्यान्त-सी ?

यह जीवन-पथ अकथ्य अगम है, छान्ति नहीं लिखित् रोने में ?  
भग्न हृदय के किस कोने में ?

मपना हास्य सहये मुग्धना  
बैभव-मुक्त लो दिया न जाना  
सजनि ! घन्त में सीना-हीमा  
हो पथ में प्रीति बरसाना

कोई सहृदय इक्षित न होगा है बसारता इस रोने में ?  
भग्न हृदय के किस कोने में ?

हो समाधिरत साधु व्यथि-सी  
प्रिय, किस घोषी की विरथि-सी  
सग्रा में विलीन बैठो हो  
भुक्तिमाम धाराध्य भक्ति-सी

मुक्ति-भार्गव क्या कभी भुक्तम है, चिर-निद्रा में ही सोने में,  
भग्न हृदय के किस कोने में,

भाषा के प्रदाय धुमल-स  
 कांक्षि-हीन सम्पूर्ण जसे-से  
 सब-के-सब निर्वाण पा चुके  
 उन्हें सगायो अब न गले से

सोयो, अब सब मल्ट हो चुका, कांक्षि मिसे सक्षि ! यदि सोने में !  
 भग्न हृदय के किस कोने में ?

जन्म-स्थान—राजियाबाद  
(मेरठ), उत्तर प्रदेश । जन्म  
दिनि—१३ जुलाई, १९२३ ।  
शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी)  
आवृत्ति विरगविद्यालय से । बी  
एड० (दिल्ली) । विशेष—हिन्दी  
के प्रख्यात पत्रकार और कहानी  
लेखक श्री महावीर अधिकारी

## रामेश्वरी शर्मा



की पत्नी । प्रकाशित रचनएँ—  
‘कानीछापा’ (कहानी-संग्रह) ।  
आवृत्ति मैत्री इण्डियन हायर  
सेकेण्डरी स्कूल में प्रधान हिन्दी  
अध्यापिका हैं । वर्तमान पता—  
आप श्री महावीर अधिकारी  
सम्पादक ‘जबजबत हाइम्स’  
पौ० बा० २१३ बम्बई—१ ।

हिन्दी-अध्यापिकों के सेव-गीत

दूर मेरा भीत है !

बाँवनी बिखरी धरा पर  
बाँद हँसता है गगन पर  
बस रही है रास सारी पर घबूरी भीत है !  
दूर मेरा भीत है !

कल्पना की धर्बना में  
भावना तल्लीन है  
हृक चळती है हृदय में पर न कोई भीत है !  
दूर मेरा भीत है !

एक 'छाया' है मन में  
नीर भी भरपूर है  
मिसन भी है बिखर भी है, क्या निरासी रीत है !  
दूर मेरा भीत है !





समर्पण का अमिट अभिसार तो दो !

मिसन की रागिनी गाए, न गाए,  
विरह की व्याधा पर अधिकार तो दो !

बकी जब राग-भीती प्राण-बंधी  
जगी जब असस किरणें स्वर्ण-बंधी  
कि पय-नूपुर रँगीले बने बंचस  
जसे बंचस ऊपा के मधुर तम छस  
प्रणय की जय न देना तो न देना,  
समर्पण का अमिट अभिसार तो दो !

मिसन की रागिनी गाए, न गाए,  
विरह की व्याधा पर अधिकार तो दो !

सहर में हूब जो सत्ता-किनारा  
कि सुखे कुछ तूणों का से सहाय  
बका बुध्दाय सो जाता निमित्त भर  
न पय-दर्शक, न पय विराम कोई  
न फूलों की कभी सिर छाँह धाई,  
सिखाँ की रंगमयी बहार तो दो !

मिसन की रागिनी गाए न गाए,  
विरह की व्याधा पर अधिकार तो दो !



जन्म-स्थान— दिल्ली ।  
 जन्म-तिथि— सन् १९२९ ।  
 प्रकाशित रचना— 'सुनिका' ।  
 विधेय— हिन्दी की वर्य पीढ़ी  
 के कवि श्री रामानन्द 'बोधी'  
 ( सम्पादक 'कादम्बिनी' ) की



रसा रामानन्द

सहयोगिणी । हिन्दी की प्रमुख  
 पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ  
 प्रकाशित होती रहती हैं ।  
 बतमान कता—१०/१० रमेश  
 नगर, गई दिल्ली—१३ ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-पीठ



एक ध्वनि है जो न आती पास धपने  
 एक प्रतिध्वनि, जो न पीछा छोड़ती है  
 जिन्दगी नाता जगत् से आगरण से  
 राम जाने सोइती या ओइती है  
 वहकते हैं स्वर, वहकती हैं सबाएँ,  
 यह हठीसे बँन को क्या हो गया है ?  
 उमड़ता सावन उमड़ती हैं घटाएँ,  
 यह निगोड़े नैन को क्या हो गया है ?

मुसकराएँ हम जमन सब झूम जाए,  
 जोहती हैं बाट जाने की बहारें  
 आज सुधि सायब तुम्हें भाई इधर की  
 द्वार वस्तक दे रही हस्ती फुहारें,  
 सहमता उपवन सहमतो हैं हबाएँ,  
 इस हठी उपरैन को क्या हो गया है ?  
 उमड़ता सावन उमड़ती हैं घटाएँ,  
 यह निगोड़े नैन को क्या हो गया है ?



कैसा प्यार तुम्हारा !

कैसा प्यार तुम्हारा यह मैं समझ न पाई ?  
क्यों वह खेले खेल प्रणय का समझ न पाई ?

वह छत-छत जीवन का बग्यन  
वह छत भूमिभाषा का दर्शन  
छत-छत जीवन का नवस प्यार,  
है छत जीवन का नव कुसार

कैसा प्यार तुम्हारा यह मैं समझ न पाई ?  
क्यों वह खेले खेल प्रणय का समझ न पाई ?

कहाँ गये वे वचन तुम्हारे  
फिर आने की वाचा हारे ?  
राह निहाकूँ बैठी अपमक  
नेह सँजोऊँ बोलो कब तक ?

कैसा प्यार तुम्हारा यह मैं समझ न पाई ?  
क्या वह खेले खेल प्रणय का समझ न पाई ?





हमारे प्रियतम प्राणाधार !

दिखाऊं किसी जाकर धाज, हृदय की भन्तर्भासा नाच  
जैसे जाते हैं तन मन प्राण सन्निर्वा दीड़ रही है साध

सँभालोगे कब धाकर प्यार ?

बता दो प्रियतम प्राणाधार !

निरय प्रति हम अन्तर में प्राण न जाने होता क्या उत्पाव  
सँभाने नहीं सँभलता हाय हृदय का यह भीषण परित्याप

उत्तारोग क्या था यह भार ?

कभी हे प्रियतम प्राणाधार !

हृदय की विषम बेना धाज हृदय ही में मैं कर लूँ बन्ध  
चाहती किन्तु शब्द बन हाय निरुल पकती बरों बह स्वच्छन्द

हाय रोकूँ कैसे यह ज्वार ?

कहो कुछ प्रियतम प्राणाधार !

हाय भीतर-बाहर सब ओर जल रहा है यह कम्पबात  
चाहता बुझता जीवन-दीप न सह पाएगा अब आभात

मुम्हीं सब पहुँचा दो उस पार ।

देवता प्राणों के आधार !

कर्म-न्याय—कोरीबाट  
 होयपाबाव (मध्य प्रदेश) ।  
 कर्म तिथि—१३ सप्टम्बर  
 १९५२ । शिला—हाई स्कूल  
 हिल्सी बिछारद । विशेष—  
 सन् १९४५ से कविता प्रारम्भ



विनयकान्ता धीयास्तव

की । कुछ कहानियाँ भी लिखी  
 हैं और अनेक कविताएँ बहुत-सी  
 पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो  
 चुकी हैं । स्वाधीनता—शान्ति  
 निकेतन ६५ केरीताल जयम  
 पुर ।

हिन्दी कवयित्रियों के प्रेम-गीत

## मुझको तुम न सताओ

ऐसी जभी हृदय को होसी, राख हुए धरमान  
मुझ ने मोड़ लिया मुझ अपना, क्षाप बने वरदान  
मैंने गाथा फाय धाय की लपट उठी दीवानी  
मैंने फेंका रंग नयन से बहा उमड़कर पानी  
हर्ष, हृत्नास, हास की होसी, राग रंग की धारा  
किन्तु व्यथ जब मेरे मन का हृद यया ध्रुव ठारा  
मन में व्यथा, व्यथा में छाई पाहुन की परछाईं  
जिस छवि ने धाकर मेरी यह दुनिया भरमाई  
ओ पावस के मादक ओंको, मेरे पास न आओ  
प्रिय मन्दिर सूना है, आकर मुझको तुम न सताओ  
टूट गया वह मादक सपना भग्न हुए धरमान  
देकर मुझे यया है तिस-तिस जलने का वरदान

अन्तःकरण—घाम बम्बोरा  
 मिना सीतापुर (उत्तर प्रदेश) ।  
 जन्म तिथि—मार् १८३४ ।  
 शिक्षा—मजबूत विद्वत्विद्या  
 लय से इतिहास विषय लेकर  
 प्रथम श्रेणी में एम० ए  
 की उपाधि प्राप्त की । फिर  
 जर्मनिया विद्वत्विद्यालय से  
 हिन्दी में एम० ए किया ।  
 कार्य—कुछ समय तक मजबूत  
 विद्वत्विद्यालय में ही अध्यापन

## विद्या मित्र

शिक्षा । बाद में धान्सी राष्ट्रीय  
 हिन्दी विद्यालय नरिङ (महा  
 राष्ट्र) में अध्यापिका रही ।  
 माजबूत शर बंतीवाल बहु  
 ज्ञेय विद्यालय विद्यालय  
 हैदराबाद में प्रधान अध्यापिका  
 है । विदेश—पी-एच० डी० की  
 उपाधि के लिए अनुसन्धान में  
 रत हैं । स्थायी पता—२१-  
 ४-२४६ पारसहन हैदराबाद  
 (बांग्ला) ।



जान सकोगे क्या ?

मेरे दुःख की गहराई को जान सकोगे क्या ?

मेरे हृदय-सिन्धु में भी जो समा न सका  
जिसको मेरा मन-नीर भी बहा न सका  
प्राणों का वचन न जिसे बाँध सका  
प्राणों का कम्बल न जिसे साँव सका  
उस मेरी अनन्त पीड़ा को पहचान सकोगे क्या ?  
मेरे दुःख की गहराई को जान सकोगे क्या ?

जो नभ के वसस्थल पर तारे बनकर बिखरी  
जो पुष्पों के प्राचल पर शबनम बनकर निखरी  
जो कोयल के स्वर की मधुरमय पीर बनी  
जो चातक के घर की उन्मादक टीस बनी  
उसकी सीमा का कर अनुमान सकोगे क्या ?  
मेरे दुःख की गहराई को जान सकोगे क्या ?

जिस पीड़ा के घर को हृत्तल में पाला-पोसा  
प्राणियों की बलि दे प्राणों के रस से सींचा  
जिसके होने से मेरे जीवन का दुःख दूना है  
जिसको सो देने से मेरा जीवन ही मूना है  
उसके प्रति मेरी ममता को जान सकोगे क्या ?  
मेरे दुःख की गहराई को जान सकोगे क्या ?

हिन्दी-कवित्रियों के प्रेम-गीत

आम-स्थान—आमरावती ।

आम तिथि — १६ जून सन्  
१९१२ । सिद्धा—बी० ए०  
बी० एड० । विषय—विवाह  
के पूर्व विद्यालय के दिनों में  
जब आमरा कासिम में पढ़ती  
थी तो 'कृमुनिनी ओरी' के  
नाम से लिखती थीं । बी० ए०  
बी आमरा विश्वविद्यालय से



विद्या असन्त मानेकर

किया । आरम्भ शुक्रा के  
कार्ये कन्या विद्यालय में  
मुख्याध्यापिका हैं । बी० एड  
विवाहोपरान्त १९२९ में किया  
वचन में कुछ माहक तथा  
बहानियां भी मिलीं । अतमान  
पता—डारा डॉ० बरुत केराव  
मानेकर २ बी कमी शुक्रा  
( महापण्ड ) ।

द्वितीय-वचनियों के धम-वीत

गान लेकर क्या करेंगी !

घाप ही दो तुम मुझे मैं दान लेकर क्या करेंगी ?  
रागिनी ही सो गई जब गान लेकर क्या करेंगी ?

घाज स्वर्गिक रूप चाहे

छाँह बन भू पर उतर से  
घौर रवि की तप्त ज्वाला,

उमिर्यों का रूप घर से  
पर न मेरी हार को वह

अवधि यों छल सकेगी  
बुझ गई जो भाग उसको

राज कब तक जल सकेगी  
मृत्यु ही दो तुम मुझे मैं प्राण लेकर क्या करेंगी ?  
घाप ही दो तुम मुझे मैं दान लेकर क्या करेंगी ?

भावना की पुष्प गंगा

घाज दोनों पार बहती  
इव लूँ चाहे उतर लूँ

मुक्ति ही हर बार रखती  
फिर भला जग से मुझे क्या

दे रही है घाज मुझको  
वे न वे मुझको अमरता

गरम की कटुता प्रवसता  
ध्येय ही जब मिट चुका तो ध्यान लेकर क्या करेंगी ?  
घाप ही दो तुम मुझे मैं दान लेकर क्या करेंगी ?  
रागिनी ही सो गई जब गान लेकर क्या करेंगी ?

जन्म-स्थान— फर्रुखाबाद  
 (उत्तर प्रदेश) । जन्म तिथि—  
 २० अप्रैल १९२५ । प्रकाशित  
 रचनाएँ— 'जीवन-सरणि'  
 (कविता-संग्रह) । विशेष—  
 इनके इस कविता-संग्रह की  
 प्रशंसा सर्व धी सनेही गाय  
 कणप्रसाद भारोड़ा कृष्णाबन  
 नाल बर्मा मयवतीचरण बर्मा

विद्या सबसेम।



क्या सोहननात हिन्दी साहि  
 हिन्दी के जाने-माने साहित्य-  
 कारों एवं कवियों में की है ।  
 सुधी मुमताकुमारी बीहान थीर  
 महादेवी बर्मा से विशेष रूप से  
 प्रभावित । स्थायी बत्ता—  
 १०७ । १९० जवाहरनगर,  
 बनपुर ।



याद मेरी भूल जाना !

भूल पाओ, तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !  
याद होगा दूर जाना !

विश्व के स्वप्निल प्रसोमन-

मैं भ्रमणक फैल गई थी,  
मैं प्रणय के उन मुक्तोत्सव  
बन्धनों में बस गई थी

आज जीवन में मुझे है वह अटिल बन्धन छुड़ाना !  
भूल पाओ तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !  
आज होगा दूर जाना !

आज हग में अबू कैसे  
प्राण ! यह कैसे उदासी  
याद है क्या विश्व-मन पर  
मिल गए थे दो प्रवासी

धीरे हम-तुम या उठे थे दो स्वरों से एक गाना !  
भूल पाओ, तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !  
आज होगा दूर जाना !

माँग तुमने ही सजाई थी  
न प्रथम गुहाण भरकर,  
मुसहराय के हृयों में  
तुम प्रणय का राग भरकर

आज भी उन ही करो से माँग को होगा सजाना !  
भूल पाओ, तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !  
आज होगा दूर जाना !

देखना मुझने न ढूँ पाए,  
वह प्रणय-आसोव मेरा  
है तुम्हींको फिर समर्पित  
कल्पना का सोच मेरा  
निभ सके सो अन्त तक मेरी अमानत को निभाना !  
भूल पाओ, तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !  
आज होगा दूर जाना !

दूर दूर से हो नहीं, मैं  
दूर तुमसे आ रही हूँ  
मैं तुम्हारे प्राण में  
प्रतिबिम्ब अपना पा रही हूँ  
फिर मिसल का मार्ग है यह, मृत्यु तो जग का बहाना !  
भूल पाओ, तो हृदय से याद मेरी भूल जाना !  
आज होगा दूर जाना !

जन्म-स्थान— हसनपुर,  
 ( मुण्डवाबाद ) उत्तर प्रदेश ।  
 जन्म-तिथि— १९ जुलाई सन्  
 १९१४ । प्रकाशित रचनाएँ—  
 'अंकुरिता' 'माँ' 'सुहामिन'  
 'पुनर्मिलन' 'आपत्ती' (कविता-  
 संग्रह) । 'फेम बिना लस्वीर'  
 (नाटक) । विधेय—हिन्दी की  
 सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीरामन्य



### विद्यावती 'कोकिल'

साधिका । सापकी रचनाओं की  
 सर्वेधी माधनमास बतुबेदी  
 हुवासीप्रसाद द्विवेदी डॉ श्रीरेन्द्र  
 वर्मा तथा बिनकर धावि अनेक  
 क्यातिप्राप्त कवियों श्रीर  
 धामोचकों ने धूरि धूरि प्रशंसा  
 की है । वर्तमान पता—श्री  
 धरविन्द साधन पाण्डिजेरी ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-जीव

मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है !

तेरे इंगित ही ध्रुव मेरे बस कर्म की धारा,  
तरी इच्छा ही पग-गति का मेरी बनी इशारा,  
ध्रुव मेरे बचन-बचन की ग्रन्थि खुल गई है !

मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है !

अन्तरात्म के तम से यथा किसी ने मुझे गुहारा,  
वस्तु-वस्तु में देख लिया वह मैंने रूप तुम्हारा  
मुझको मेरा कर्म, ज्ञान और शक्ति मिल गई है !

मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है !

हुनिया बे बस आकर मुझका, ढिगा नहीं ध्रुव पाते,  
रु-रुकर मेरे अन्तर में उलटे फिर आ पाते,  
मुझको मेरी परम ध्रुवबस शक्ति मिल गई है !

मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है !

परम शान्ति का यहाँ एक साम्राज्य बिख गया है,  
तेरी पूर्ण विजय पर ध्रुव बिस्वास जम गया है,  
मुझे धमर बनकर मेरी धनुराक्षि मिल गई है !

मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है !

अमिट प्रेम को सहर निरन्तर बहती दिन-दिन है  
मैं न जागती, मैं हूँ, तुम हो, या जग जीवन है !  
जीवन-आत खिल गए, सारी मुक्ति खिल गई है !

मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है !

मेरा तो सखि धौं धौं हुआ तुम भी हूँ हो हे  
देख धीर देशान्तर हूँ हूँ जन्म-जन्म हे  
आयो देखो यहाँ तुम्हारी सृष्टि मिल गई है !  
मुझको मेरी मुक्ति मिल गई है !

जगन्-स्थान— देवदेव ।  
 (सहायनपुर) उत्तर प्रदेश ।  
 जन्म तिथि— सम्भवत् १९०३  
 वि श्रमी । विधेय—पारिवारिक  
 संस्कारवश शैशविक संस्कारों  
 में उन्नत शिक्षा तो प्राप्त नहीं  
 कर पाई पर जीवन-दर्शन और  
 अनुभव में बहुत-सी शिक्षा

## विद्यावती कौशल



प्राप्त की । संगीत में विशेष  
 रुचि है । मध्य प्रदेश के महु  
 नामक स्थान से आपके पति  
 श्री कीयलप्रसाद जैन 'रजत पट'  
 नामक एक सिने वन सम्पादित  
 कर रहे हैं । स्थायी पता—  
 'रजत पट' कार्यालय महु कैंप  
 ( मध्य प्रदेश ) ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

## मुसकान देने ही जमी हूँ ।

देव, तुमको भाज मैं मधु गान देने ही जमी हूँ !  
हार हो या जीत मैं मुसकान देने ही जमी हूँ !

मन्मदे सपने सजाए, कल्पना के हनु क्षणों में  
एक दिन साकार होंगे स्वर्णमय वे उन पलों में  
भाज तो प्रिय जान तो पहचान देने ही जमी हूँ !  
हार हो या जीत मैं मुसकान देने ही जमी हूँ !

देव जीवन है समर्पण तो खुशो के राग गाएँ  
विश्व में उत्साह भर दें धी नई दुनिया बसाएँ  
जाम तो कर भाज जीवन-दान देने ही जमी हूँ !  
हार हो या जीत मैं मुसकान देने ही जमी हूँ !

ध्यात होगी क्लान्त होये भासत होगी वमान मग में  
पर छिबिभटा या सकेमी एक पल को भी न पग में  
सक्य पाने का सबभ अनुमान देने हो जमी हूँ !  
हार हो या जीत मैं मुसकान देने ही जमी हूँ !

जम्मू स्थान—विमोह  
 (मध्य प्रदेश)। जम्मू-तिथि—  
 १४ अप्रैल सन् १९९०।  
 शिक्षा—एम ए साहित्यपरम्परा।  
 प्रकाशित रचनाएँ—‘यज्ञ के  
 पूर’, ‘पुर्खिमा’, ‘अचाना’  
 ‘कामना’ ‘नापी हृदय’, ‘बीड़  
 कला-कविता’ ‘माधुर्य बीड़  
 महिलाएँ’ आदि। विधेय—

## विद्यावती मालविका

इसमें से अन्तिम उत्तर प्रदेश  
 सरकार द्वारा पुरस्कार हो चुकी  
 है। ‘अचाना’ पर मध्य प्रदेश  
 सरकार ने प्रथम पुरस्कार प्रदान  
 किया था। आपकी रचनाएँ  
 हिन्दी के सभी प्रमुख पत्र  
 पत्रिकाओं में प्रकाशित होती  
 रहती हैं। वर्तमान पता—  
 बीरक नं० ४ मार्तण्ड लाम्बर,  
 पीवा (मध्य प्रदेश)।





## बिरह-गीत ही गाया ।

मन के विकस भाव ने आखिर, बिरह-गीत ही गाया ।

पल भर खूब आनम के बादम ! दबती मेरी घोसी  
आप आँसुओं में है मैंने अपनी प्रीति सँजो ली  
तेरी पाँखों के संग मेरी साथ बसेगी भोसी  
पहुँचाना सन्देश सलोने ! भरे आश की ओसी  
तेरी ही गति मे तो मैंने है अनुराग बँधामा !  
मन के विकस भाव ने आखिर, बिरह-गीत ही गाया ।

तप्त रेणु रम नहीं वहीं भी पूर्वा-दल की आशा  
तेरी छाया में धो राही ! रह न मन यह व्यासा,  
समक धरे समेत मयन क जिसमें मौन निराशा  
आँसु से भीगी पलकों में छिपी कान-सी भाषा  
प्राणों का सन्देश यही है एक सँस दुहराया !  
मन के विकस भाव न आखिर, बिरह-गीत ही गाया ।

इन आँखों में मदा रहेगा प्रिय का रूप सलोना  
एक मात्र म सिमट रहा है मन का कोना-कोना  
धोइ स्वयं की ममता में ही क्या पाना, क्या खोना,  
नहीं हार या जीत धरे ! जब कोई अपना हो ना  
कह देना दो दोम विकस ये, 'तूने प्रिय पथ पाया !'  
मन के विकस भाव न आखिर बिरह-गीत ही गाया ।

जगम-रवान—गौर(पुस्तकालय)  
 कानपुर । जगम तिवि—सन्  
 १९१८ । सिसा—घर पर ही ।  
 विवाह के कुछ समय बाद ही  
 वैधव्य । विधेय—विदू-बन  
 की मति समुदाय के सब लोग  
 भी विद्या-व्यसनी । कविता  
 निरुपमा ११ १४ से प्रारम्भ ।  
 पहली कविता १९४० में काली  
 से प्रकाशित होने वाली पत्रिका  
 'वेदना' में प्रकाशित हुई ।  
 अभी तक सम्पन्न हो हजार

### विद्यावती मिश्र

कविताएँ प्रकाशित । कविताओं  
 के प्रतिरूप सामयिक रचनाएँ  
 ऐसीत रूपक मधुरी रचनाएँ,  
 बालकों के लिए पद्य बधाएँ भी  
 मिलीं । प्रकाशित रचनाएँ—  
 'अमानि' 'प्रतीक्षा' 'मर्दा'  
 'मुक्ति' 'कठोपनिषद्' (पद्य  
 गुणवत्) । 'प्रतीक्षा' तथा 'मुक्ति'  
 उत्तर प्रदेश-सरकार द्वारा  
 पुरस्कृत । वर्तमान पना—भाग  
 श्री गिरधर मिश्र २१  
 राय-नगर मदनपुर ।



हिन्दी-वर्णनिका के प्रेम-योग

प्रिय मन्दिर की राह न बदसे !

इस क्षण का कण-कण बदसे पर,

प्रिय मन्दिर की राह न बदसे !

पूजा का उत्साह न बदसे !

मद्धित हुई यहीं पर मेरे,

घन्तर के भावों की भाषा

इसे स्वाति-सा समझ, तुपा को

तुष्टि समझता भातरक प्यासा

जीवन का कण-कण बदसे पर,

हृय का पुष्प प्रवाह न बदसे !

प्रिय मन्दिर की राह न बदसे !

यह अचन के फूल सुकोमल

भसात, धुबि बन्दन प्रमिगन्दन

स्वासों की रोमी मौसु की

अञ्जलि, प्राणों का आमग्रण

मन्दिर का कण-कण बदसे पर,

मेरे प्रभु की चाह न बदसे !

प्रिय मन्दिर की राह न बदसे !

वहाँ पहुँचने से प्रिय मुझको  
 प्रतिदिन बसने की तैयारी  
 और मधुर आवाज़ आएगी  
 एक दिवस मेरी भी बारी

मधुर मिसल का बरण-करुण बदले,  
 किन्तु विरह की आह न बदले !  
 प्रिय मन्दिर की राह न बदले !

जन्म स्थान—कानपुर  
(उत्तर प्रदेश) जन्म तिथि—सन्  
१८९४ । निधन-तिथि—२४  
मई १९५१ (दिल्ली में) ।  
शिक्षा—माहिस्वरन । विशेष—  
'सेन' दैनिक (बंगू) के मुख्यपूर्व  
सम्पादक और दिल्ली राज्य के

स्व० विद्यावती वर्मा



वर्तमान जन-जगत् के पण्डित  
श्री रामभानु वर्मा की बचपत्नी ।  
दिल्ली की प्रमुख सामाजिक  
कार्यकर्त्री । आप स्व० भा०  
हिन्दी-माहिस्वरन-जन्मभूमि की  
स्थापना समिति की सदस्या भी  
रही थी ।

आज जीवन-प्राण आए !

हो रहा मम उर तरंगित आज फिर मधु गान गाएँ  
आज जीवन प्राण आए !

खुद गए जो सार टूटे  
बज उठी फिर मूक बीणा  
मिट गए सन्ताप हिय के  
साधना कर मित नवीना

मिल गए दो उर वियोगी नेह का वन्दन पाएँ !  
आज जीवन-प्राण आए !

दूर कर धन कासिमा का  
सासिमा छाई गगन में  
हो रहा अनुराग अनुभव—  
आज फितना दुःख मिसल में

नृत्य करते मोर झू पर ध्योम में धनदयाम छाएँ !  
आज जीवन प्राण आए !

टिमटिमाते दीप भी सौ  
जगमगाई स्नेह पाकर  
मुग्ध हो आए दलभ फिर  
प्यार की धागा सगावर

जो विकल से भाव धर में, धाज फिर वे सिमसिमाएँ !  
धाज जीवन प्राण भाए !

बन गई अभिसारिका-सी  
सिम जहीं धाधा-सताएँ  
पवन बहु-बहु प्रेम-निधि से  
से रहा भगणित बसाएँ

मधुप ने मधुम स्वरों में राग फिर नूतन सुनाए !  
धाज जीवन प्राण भाए !

जग-स्मान—सारा (बिहार) ।  
 जग-तिथि—सन् १९०३ ।  
 जिना—भर पर ही । बिसेय—  
 कृमरॉन स्टेट के निवासी स्व०  
 मुन्नी लक्ष्मोप्रसाद के द्वितीय  
 पुत्र श्री मदनमुकुन्द से विवाह ।  
 आपका परिवार अब भी 'मुन्त  
 बिम स्टेट' कहलाता है । पटना  
 विश्वविद्यालय के 'बाईं भाग  
 स्टोड' की सरस्वा मनोनीत

## विमला देवी 'रमा'

होने वाली बिहार में सर्व प्रथम  
 महिला । आपकी निजी हुई  
 कई पुस्तकें 'पटना विश्वविद्या  
 लय' में पाठ्य-पुस्तक रह चुकी  
 हैं । काली-महिमा-मण्डल की  
 धोर है 'आदित्य अग्रिका'  
 जगति से विप्रुधित । वर्तमान  
 वता—४० नई बस्ती कीटर्बन  
 इमाहाबाद—३ ।





## प्रिय धीरे से तू भाना !

ठहर-ठहर कर करुण वेदना, ठम्बी धाहें भरती है,  
 किसका कौन कहाँ पर बसता किसको सोचा करती है  
 निर्मोही करने से भरकर विरह नीर नित भरता है,  
 सबको पीडा को बहु ग्रहरह निज अञ्जलि में भरता है,  
 किसको छवि को हिय में रखकर, फूला नहीं समाता है  
 किसका स्मरण आज व्याकुल कर पागल हाथ बनाता है,  
 सिवा देखने के बहु प्रतिमा, धीरे न मैं कुछ कर पाई,  
 साय लिये सज्जा को अपने में प्रवेश घर से आई,  
 यहाँ देखकर हृदय निराले मैं अपने को भूल गई,  
 प्रीति प्रतीति पुनीत देखकर, मानस-कलियाँ फूल गई,  
 कुछ है देव तुम्हारा पूजन सबिधि न मैंने कर जामा !  
 किन्तु विनय अन्तर में मेरे प्रिय धीरे से तू भाना !

बम्म-रवान—रायपुर/मध्य  
प्रदेश)। बम्म-तिबि—३ सित  
म्बर १९३६। शिक्षा—साहित्य  
रत्न रायपुर विश्वविद्यालय से  
एम० ए० (हिन्दी)। छावरा  
विश्व विद्यालय से 'रामचरित  
मानस का सोपाना' का अध्ययन  
विषय पर दोब-काय कर रही  
है। विज्ञेय—सन् १९५२ में  
३६ तक बढ़ाया और बम्म

## विमला राजेन्द्र



नगर के विश्वविद्यालयों में  
प्राध्यापिका रही। सन् १९५६  
में बिहार के लोकप्रिय कवि  
श्री राजेन्द्रकिशोर से विवाह  
हु। जाने के उपरान्त जयप्रकाश  
महिमा काव्यमण्डल में प्राध्या  
पिका हैं। रचनाएँ—'सो  
त्रियम्बर (कविता-संग्रह) प्रेम  
में है। स्थायी पता—हरेन्द्र  
मकान मनेमपुर, छारा (बिहार)।  
हिन्दी-कवयित्रीयों के प्रेम-सीत

मौन तोड़ो पिया !

छन्द सोसो पिया, बोलो अर्थ के स्वर में !

अभी तब जो कहा

जैसे अमकहा रह गया

फूटकर आबेग—

मन में अमकहा रह गया

हार सोसो पिया आने दो हवा घर में !

छन्द सोसो पिया, बोलो अर्थ के स्वर में !

बहुत पीड़ा-मुल सँजोया

तृपा पीली रही

आह इस सुख की अधिकता

अब न जाती सही

मौन तोड़ो पिया बहने दो तृपा घर में !

छन्द सोसो पिया बोलो अर्थ के स्वर में !

हमें कितने पर्व

उठ-ठठकर मुलाते रहे

हम निरर्थक भीतरागी

अब मनाते रहे

बसो दूबें पिया, दोनों कामना-सर में !

छन्द सोसो पिया, बोलो अर्थ के स्वर में !

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

जन्म-स्थान—मोंडा (पत्तार  
 प्रदेश) । जन्म-तिथि—सन्  
 १९१० । शिक्षा—एम० ए०  
 (हिन्दी) साहित्यरत्न उर  
 स्मृती साहित्य मुद्राकर ।  
 विवाह—सन् १९४८ में एक  
 प्रसिद्ध इन्जीनियर के साथ

## विमला श्रीवास्तव



किन्तु सन् १९२० में उनकी  
 प्रतापदिक मृत्यु । विभव—  
 पाश्चात्य लेखिका मार्स ह्यूट  
 कातिश मोंडा में प्राध्यापिका  
 हैं । वर्तमान बसा—के एस  
 हास्पिटल बनकटवा मोंडा  
 पत्तार प्रदेश ।

हिन्दी-रचयित्रियों के प्रथम-चित्र

सपना कब साकार हुआ रे !

जिसी एक निम मन उपवास की कसिका सुगन्धित मांस से  
 भ्रम उठा था काना-बोना स्नेह-सुरभि विष्वास से  
 भक्त हृदय की हुई सारिका मधु मृत्यु की मनुहार से—  
 भ्रमा बं धनि कुस उठ भूमे बधि के मन के भाव से  
 किन्तु कुस जल चैनना हय दूर तुरत मधुपास हुआ रे !  
 सपना कब साकार हुआ रे !

एक निम मन की धरती पर धाई की बरसान भी  
 पिरी जलन क्षण भर गपना बन मिटा सपन का घास भी  
 हूब उठी भीतों की बाबल नाचा मन कर मार भी—  
 मोती बनकर बरस रही थी नभ से कम की बात भी  
 किन्तु मृत कहते मैत्री से पावस का क्षिप्तवार मिटा ? !  
 सपना कब साकार हुआ रे !

एक निम भिरा गई हृदय को अचल हिमाचल-सी दृढ़ता  
 नभ-सा था विस्तार मिल गया धरती-जैसी निष्परता  
 भ्रमना दम्भ भमटे सपना लक्ष्य स्वयं मन गढ़ता—  
 मगा कि बाधाभासे मे जीवन मदा रहगा सङ्गा  
 किन्तु चैनना ने भ्रम-मोग दूर तुरत विश्वास हुआ रे !  
 सपना कब साकार हुआ रे !

जन्म-स्थान—मुरादाबाद ।  
 जन्म-तिथि—मार्च १९२९ वि० ।  
 निधन-तिथि—०९ नवम्बर  
 १९५२ । शिक्षा—साहित्य रत्न  
 हिन्दी-प्रमाकर । विशेष—  
 बानपुर में विवाह के कुछ साल  
 बाद ही बचप्य-कुल छोड़ना  
 पड़ा । तदुपरांत कुछ काल तक  
 नवाबनग कानपुर में समाज  
 यम कल्या विद्यालय में प्रबाना

स्व० विष्णुकुमारी  
 श्रीवास्तव 'मञ्जु'



भ्यादिना रही । साहित्यिक  
 कार्य—म० १९८१ वि० में  
 'भीरा पदावली का संग्रहण  
 किया जो हिन्दी भवन लाहौर  
 से प्रकाशित हुआ । संप्रकाशित  
 रचनाएँ—'रिबेली' (काव्य  
 गद्य) और 'शुविषा दुपट्टि  
 (नाटक) ।

सूनेपन में तुम आए ।

प्राप्ता के भग्न भवन में,

प्राणों का दीप जलाए ।

उत्सुक हो स्वागत-पथ पर

बैठी थी ध्यान लगाए ।

उठती तरंग-मामा में

छरदिन्दु-किरण फैलती थी ।

हिससी मिसली झूठलाती

पगली सरिता हँसती थी ।

वे नील गगन में तारे,

मुच्छा का तार पिरोते ।

मेरी सूनी कुटिया में

घाँसों से भरते सोते ।

स्नेह-सिन्धु उफलाता

ज्वर है तरणी मेरी ।

क्या कभी सगेगी तट पर

जब धाई रात घँघेरी ।

प्रियतम क्या भूल सकूँगी

सूनेपन में तुम आए ।

मुरझित पराग को लेकर

कसियों के दम बितराए ।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रथम दीव

काम-स्थान—सदन १ ।  
 काम-तिथि—१९४१। पिता—  
 बरामू से हाई स्कूल करने के  
 उपरान्त धीरे धीरे लखनऊ  
 में। १९६० में लखनऊ-  
 विश्वविद्यालय से बर्तन-शास्त्र में  
 एम० ए० किया है। चाबकल  
 रित्तों में व्यस्त है। बिराद—

## बीरू मिश्र



अपनी माता भीमती दादा मिश्र  
 से प्रभावित होर प्रेरित। बिच  
 कला होर पिहर कला में भी  
 बरि। हठमाय से दुकान्त-प्रिय।  
 कामकुम्ह कासिब लखनऊ में  
 जीव-विज्ञान के प्राध्यापक भी  
 बिद्वाराय मिश्र की मुपुर्बी।  
 हठमाय-पता—४ भीम रोड  
 लखनऊ।

हिन्दी-कवयित्रीयों के प्रम-जीन



प्रिय तुम्हें कैसे मनाऊ ?

मीन ही अमिष्यविन मेरी  
भूल मेरी भावनाएँ  
अचल निस्पन्दित हुई हैं  
हृदय का सब कल्पनाएँ  
हँस गया है कण्ठ कैसे गीत मैं तुमको सुनाऊँ ?  
प्रिय तुम्हें कस मनाऊँ ?

कुछ अनोखी उसमन  
मन का बिय आकाश-सी है  
नयन जल में डूबत-स  
दाग ला जाते बही है  
बिना तरङ्ग कैसे तुम्हें मैं हृदय की भाषा सुनाऊँ ?  
प्रिय तुम्हें कैसे मनाऊँ ?

प्रबल भभावात सघुतम  
दीप की ली लीप जाती  
निर पटकता सहर फिर आ  
हून स कुछ बह न पाती  
प्रिय तुम्हें मैं आज कैसे बात मन की बह सुनाऊँ ?  
प्रिय तुम्हें कैसे मनाऊँ ?

हिन्दी-कवयित्रीयों के प्रेम-गीत

जन्म स्थान—सतलुज ।  
 जन्म-तिथि—१९३८ । शिक्षा—  
 इंटर साइंस एन । बिशेष—  
 दैनिक हिन्दुस्तान के मह  
 महाराज की दैनिक त्रिवेदी की  
 समालोचनी । लालुआ (ममीलाल)  
 और प्रयाग में जन्म प्रविष्ट

## योगी त्रिवेदी



माहवार भी साहित्यकाल  
 वस्तु तथा योगी महाराज  
 समा के साहित्य में रहने का  
 प्रयत्न किया । स्थायी बना—  
 रही बानी यही भरतपुर  
 (राजस्थान) ।

हिन्दी बहसिनिधि के प्रम-जीन

आज भेजती, तुमको पाती ।

ओ मेरे तन-मन के साथी !

आज भेजती तुमको पाती  
तुमको काश मुला मैं पाती  
मैं भी अनजाने लो जाती ।

दूर गए तुम आस दे गए  
धीर मरी वो साँस दे गए  
मुसकानों की राह बताकर  
मंजिल का विश्वास दे गए  
'आऊँगा वक्त' यह कह करके  
मीठी-मीठी व्यास दे गए  
बीते दिन भी' बीती रैना  
बाट निहारत थक गए मैना

सावन छाया सजन न आए  
कैसे तुमको रिमझिम पाती ?  
ओ मेरे तन-मन के साथी !

ओ मेरे जीवन की बाती !

जब धाई गीतों की बेसा  
रोए मन का भीत अवेसा  
हूँस-हूँस पर गीका पूछे  
किसमे बेसा वह असबेसा

द्वितीय-कवयित्रीयों के प्रथम-गीत

पाँच थके, धी' पन्थ न बीते  
 मेरी बोगिस पाल, बर मई  
 मीना भाजिस रोक न पाया  
 जीवन की सब साध मिट गई ।

मत भटकाओ सब भा जाओ  
 पीड़ा मुझसे सही न जाती ।  
 ओ मेरे तम-मन के साथी !  
 आज भेजती तुमको पाती ।

कर्म-स्थान—इलाहाबाद ।

कर्म तिथि—सन् १९१२ ।

शिक्षा—गुरुकुलीय । पंथ एम०

ए० करने का विचार है ।

विशेष—हिन्दी व समाधिभाष्य

कवि धीर साहित्यकार डॉ०

चमकीर भारती की बहन ।

एक उपन्यास मीठ का फूल



## बीरा

सभी हाम ही न प्रकाशित  
हमा है । कहानियो नव प्री  
कवितान् प्राब पत्र-पत्रिकासं  
में प्रकाशित होती रहनी है  
पूरा नाम बीरबाबा । पा  
सिगनी बीरा नाम छ ही है  
वतमान पता—डारा डॉ०  
सनेन्द्रकुमार २१४५ धर्मपुर  
निकी ।

मेरे प्रागिन ध्वेत बनूतर ।

उड़ आया ऊँची मुँडेर से मेरे प्रागिन ध्वेत बनूतर ।

गर्मी की हल्की सध्या यों—

झाँक गई मेरे प्रागिन में

भरीं बेवज्र की कुछ धूँ

किसी नवोद्गा के मन-मन में

सहर गई सतरंगी चूनर ज्यो तबो के मृदुल गात पर ।

उड़ आया ऊँची मुँडेर से मेरे प्रागिन ध्वेत बनूतर ।

मेरे हाथ रची महदी उर

बगिया में बीराया फागुन

मेरे कान बची बसी घुन

पर आया मनचाहा पाहुन

एक पुनक प्राणों में चितवन एक नयन में मधुर-मधुरतर ।

उड़ आया ऊँची मुँडेर से मेरे प्रागिन ध्वेत बनूतर ।

कोई मुँदरे स्वप्न मुनहले—

प्राँचल में चण्डा बन आया

कोई भटका गीत उनीदा

भरी साँसों में टपराया

दिल्ले गई हा जेम जूती मन प्राणों में महक-महक कर ।

उड़ आया ऊँचा मुँडेर से मेरे प्रागिन ध्वेत बनूतर ।

मेरा बंधन गीत किसकता  
घर भाँगन देहरी-बरवाजे  
दोप जलाती साँझ उतरती  
प्राणों में सहनाई बाजे

ममराई में बिखर गए री फूँस सरीखे सरस-सरस स्वर !  
उड़ धाया ऊँची मुँडेर से मेरे भाँगन श्वेत कबूतर !





मैं छन्दों की रानी हूँ !

मैं छन्दों की रानी हूँ गीतों के राजकुमार तुम !

प्राण पपीहे की बोली में प्यार भरा संगीत है  
सावन बनी बरसने आई मेरे मन की प्रीति है,  
जब कि बादलों में भी सी-सी दाहनाई के राग हैं  
कैसे कह दूँ हार उसे जो मेरे मन की जोड़ है  
मैं मत्वासी बूँ गगन की बादल राग महार तुम !  
मैं छन्दों की रानी हूँ गीतों के राजकुमार तुम !

तुम प्राण आ गई बहारें पतझर में मधुमास मिला  
प्राण तुम्हारे पल पर पल-पल मेरे मन का दीप जला  
प्रहर प्रहर बन गा प्रसोदा के युग अब तक तुम न मिसे  
दाब दाब हो गया तुम्हारा गायन जो भी स्वर निकला  
मैं फिर प्यास प्रगति की मेरी मजिब के आधार तुम !  
मैं छन्दों की रानी हूँ गीतों के राजकुमार तुम !

राह सँवारेगी भरती भूमेगी हारे-बन कदम  
बसत-बसते मार तिमिर का कभी कहीं रो होगा कम  
सब मानो उम झगझकार में तुम जिस निम मुसका लोगे  
मुसका दगा बूँ गगन का रात मुग देगी दाबनम  
गा हो तो लोट न जामा आधार मेरे द्वार तुम !  
छन्दों की रानी हूँ गीतों के राजकुमार तुम !

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

राज मनाएंग दोवासी, मेरे आंगन चाँद-सितारे  
 उड़ बसेंग गीत-गगन में हम आगा के पक्ष पमारे  
 मानों स्वयं निद्रावर होंगे छोटी-सी कुटिया पर मेरी  
 निद्रा नींद पर मेरे आकर फेरो दग सौम्य-सुन्दार  
 तोड़ न देना मेरी आँखों का सपना सुकुमार तुम ।  
 मैं छत्रों की रानी हूँ गोतों के राजकुमार तुम ।

जन्म-स्थान— दिल्ली ।  
 जन्म-तिथि—मार्च १९२२ ।  
 शिक्षा—दिल्ली में ही हिन्दी-  
 प्रभाकर, साहित्य रत्न, बी ए. ।  
 विसेय—सन् १९४० में हिन्दी  
 के प्रमुख पीठकार श्रीर कवि  
 श्री चिरिमाकुमार माधुर है  
 विवाह । बचपन से ही तुलसी



### सकुस्त माधुर

करने श्रीर गाने निजने का  
 झीक वा । कुछ प्रारम्भिक  
 रचनाएँ 'धनु' में प्रकाशित  
 हुई थी । 'नई कविता' की कम  
 विधियों में प्रगुणी । रचनाएँ—  
 'बादली चुनर' । स्वादी पत्रा—  
 २२/४१ देवबागु मुक्ता रोड  
 कपोल बाग नई दिल्ली—३ ।

हिन्दी-कविविधियों के प्रेम-जीव

डर सगता है !

मधु से भरे हुए मणि घट को सासी करते डर सगता है !

जिसमें सारा सिंघु समाया  
मेरे छोटे जीवन भर का  
दूजे बरतन में उँडेसत  
एक बूँद भी छिटक न जाए  
कहीं बीच में टूट न जाए  
झूमे भर से जी कंपता है !

मधु से भरे हुए मणि-घट को सासी करते डर सगता है !

इस घरणी की प्यासी भाँखें  
सबों इसीकी घोर एकटक  
भाई जग में सुधा कहीं से  
जस का भी तो कास पड़ा है  
प्राण बिना मिट्टी-सा यह तन  
भार उठाऊँ इसका कैसे  
छोड़ नहीं पाती फिर भी तो  
जरा उठाते जी हिनता है !

मधु से भरे हुए मणि-घट को सासी करते डर सगता है !

तन गरमाया, बुल-सपटों से  
धीरे-धीरे जसा जा रहा  
धभी बहुत बाकी जसने को  
घट में मेरे पड़ी दरारें  
साहस भाज दूर भगता है !

मधु से भरे हुए मणि घट को सासी करते डर सगता है !



कर्म-स्वाम — प्रायः वि-  
हरी (जबलपुर) । १८८८-मि-  
बीपावली सम् १८११ ।  
सिता—वचन में ही पिता का  
विद्योत् हो जाने के कारण यधि  
कांध सिता-बीपा पर पर ही  
हुई । विद्य-सन् १८११ में  
हिन्दी के मधुर वीरकार श्री  
मर्मवाप्रसाद करे के साथ विवाह  
हुया । यही एक कोई कविता  
संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ किन्तु

शकुन्तला करे

हिन्दी काव्य की कोकिलाएँ  
तथा 'हिन्दी काव्य-गगन की  
कारिकाएँ' नामक पुस्तकों में  
विस्तार से वर्णन हुई है । श्री  
शान्तिप्रिय त्रिबेदी ने अपनी  
पुस्तक 'विश्वीर काव्य' में भी  
आपके कृतित्व को सप्रमाण है ।  
स्वाधी पता—हारा श्री मर्मवा  
प्रसाद करे लोक जेतना प्रका  
शन जबलपुर (म० प्र०) ।

हिन्दी-कवयित्रीयों के प्रेम-गीत

मैं तो उन पर बलिहार गई !

बली में साग्न-फूल धूँध  
निशि ने मेरा शृङ्गार बिया  
राका-शशि ने बन शीत-फूल  
छवि का मोहक ससार दिया

ऊँचा उनकी पद-मासी से हँस मरी माँग सँभार गई !  
मैं तो उन पर बलिहार गई !

बिन मणि प्यार-बुलार दिया  
सम्मान और भत्तार दिया  
रह गई मुक्ति करबद लड़ी  
मैंने बग्नन स्वीकार बिया

वे हार-हारकर जीत गए मैं जीत जीतकर हार गई !  
मैं तो उन पर बलिहार गई !

उनकी छाया में पसी सदा  
उनके पीछे ही बसी सदा ,  
उनके ही ओवन-मन्दिर में  
मैं मोम-दीप-सी पसी सदा ,

मैं उनको पा जग भूल गई छपने को स्वयं बिस्तार गई !  
मैं तो उन पर बलिहार गई !

कब साहा प्यार-दुसार मिसे  
 फूलों का मूड पल-हार मिसे  
 पूजा-अर्चन ही छोड़ दिया  
 बस पूजा का अधिकार मिसे,  
 उनके धी धरणों पर हँसकर मैं तन-मन सब-कुछ वार गई ।  
 मैं तो उन पर बलिहार गई ।

शर्म-रत्न— काशी ।  
 शर्म-विम्वि— १ जुलाई १९२८  
 शिक्षा—हिन्दू विश्वविद्यालय  
 काशी से एम० ए० ।  
 विम्वि—हिन्दी के सुप्रसिद्ध  
 उपन्यासकार तथा कहानी-  
 लेखक श्री कृष्णचन्द्र शर्मा  
 'विम्वि' की पत्नी । साव-  
 दस साप सेही श्रीराम कामिज

### शकुन्तला शर्मा



चौर बिम्वि नई दिल्ली में हिन्दी  
 प्राम्पायिका हैं । प्रकाशित रत्न  
 नाम— 'प्रवृत्ति' (कविता  
 संग्रह) 'बोहसो गमा' (कहानी  
 संग्रह) 'साधुनिक काव्य में  
 सौन्दर्य भाषना' (तमील) ।  
 वर्तमान बना—दीदी बोरान  
 कामिज चौर बिम्वि लावत  
 गप, नई दिल्ली ।

हिन्दी-कवयित्रीयों के प्रथम-गीत



कौन वह पुकार गई ?

झँपियारे घोंगना में दिवरा-सा बार गई !

कौन वह पुकार गई ?

सूख सी तिनकों में गुम-सुम-सा बैठा है  
पाँसों में छपि मुल जौवन से रूठा है  
नौड़ बिटप दूँठा है

ऐसे मन-सुगना को धुगना-सा डार गई !

कौन वह पुकार गई ?

पड़ों की फुनगी पर सिहरन झँपियारे की  
टहनी पर सुयबुग है पंछी बनबारे की  
पंखो मनहारे की

नबकी मनबीती भिनसार को गुहार गई !

कौन वह पुकार गई ?

झाँगों की छातों पर झामू का झूसा है  
हाठों के दोसे पर प्राग बहुत झूसा है  
पेंगों में झूसा है

साँसों की छिन्की सट प्यार से सँवार गई !

कौन वह पुकार गई !

हिन्दी-नवविधियों के प्रेम-५

बेसा के गजरे से सागर भा दोड़ा था  
 लट की चट्टानों ने फूल-फूल तोड़ा था  
 गति ने मुक्त माड़ा था  
 रेत की गसवाही से चुप चुप दुसार गई ।  
 कौन यह पुकार गई ।

सपनों के मखवे पर भादों के चारे पर  
 आका के बिरबे पर प्यार के टिकारे पर  
 बीर के निहारे पर  
 रूप, रस घी' गन्ध के फुहारे फुहार गई ।  
 कौन यह पुकार गई ?

रह रहकर गिरते हैं जाल उदासी के  
 दुख से धुंधियाए-मे भाप की उमासी में  
 कास में वासी में  
 मस्तस् के मटियासे कासम खगार गई ।  
 कौन यह पुकार गई ?

ऐसी फुलचुगगी की पाना भर जीवन है  
 बंठे जिस डाली पर उमम हो कम्पन है  
 गीतों का न-इन है  
 मुद्रों में बोधो का पारे-सी पार गई ।  
 धंधियारे धंगना में दिबरा-सा धार गई ।  
 कौन यह पुकार गई ?

जन्म-स्थान— भद्राचल  
 पाटन (राजस्थान) । जन्म-  
 तिथि—२४ जून १९२१ ।  
 शिक्षा—साहित्यरत्न एम० ए०  
 (राजस्थान-विश्वविद्यालय है) ।  
 प्रकाशित रचनाएँ — 'उगमुक्ति'  
 (पद्य-काव्य) 'सती सीता और  
 धामय ज्योति' (काव्य रेखाती) ।  
 विषय—हिन्दी-काल



शकुन्तलाकुमारो २९

साहित्यिक स्व० गिरिधर राम  
 नररत्न की सुपुत्री । अपने  
 धर्मयमसील पिता की छत्र  
 छाया में आपने लस्कृत-साहित्य  
 का भी चारमण किया है ।  
 मानभाषा बुझराती होने के  
 कारण बुझराती में भी लिखती  
 हैं । वर्तमान पता— नररत्न  
 सरस्वती नगर भद्राचल पाटन  
 (राजस्थान) ।

हिन्दी-नवनिर्माणों के प्रेम-धीन

इतनी कृपा कर दो !

पा तुम्हारा स्नेह अविषल  
जाये धुल सब पाप-पक्षि  
विमल अपना ध्यान दे, भव-साप सब हर लो !  
इतनी कृपा कर दो !

दो मुझे पद रेणु पावन  
हो उठे यह धन्य जीवन  
अद-नमिष्ठ मम बिनत सिर पर निज शरण घर दो !  
इतनी कृपा कर दो !

पा तुम्हें हो प्राण निर्भय  
शरण में हो चतना सय  
भव-यक्ति मेरे मृतनु का निज शरण में लो !  
इतनी कृपा कर दो !



जन्म-स्वान — बरमपुर  
जन्म तिथि—सन् १८१४ ।  
विषय—प्रख्यात मजदूर-नेता  
स्व० हुट्टहरमाच छास्त्री की  
धर्म-पत्नी । स्व० सुभद्राकुमारी  
बौद्धान धीर अपनी बड़ी बहन  
राजकुमारी धीवास्तव के द्वारा  
साहित्यिक धीर राजनीतिक  
भावनाओं का प्रस्तुतन । १०  
वर्ष की आयु में सावित्रीसत्य  
दान नामक छोटा सा काव्य

### शकुन्तला धीवास्तव

लिखा । प्रकाशित पुस्तकें—  
‘रत्न कण नामक कविता-संग्रह’  
धीर ‘बालमुखा’ बालोपयोगी  
कविताएँ । सभी तक लगभग ३  
कहानियाँ १५ लेख धीर सत्य  
यव २० कविताएँ लिखी हैं ।  
‘आमुषी मुखा’ ‘नरि’ ‘प्रेमा’  
‘सरस्वती’ ‘रामाय’ ‘वन्द्या’  
धीर ‘मात्रकल’ आदि पत्र-  
पत्रिकाओं में रचमाएँ प्रकाशित  
होती रहनी हैं । स्वाधी पता—  
११/१६४ ब्यास टोली कामपुर ।  
हिन्दी-वचयित्रियों के प्रेम-पीन

कितना सम्झा पथ जीवन का !

बसते-बसते पैर धक्का गए, पर न रखा क्रम इसका !  
कितना सम्झा पथ जीवन का !

बहु बड़मे को कहता प्रतिपक्ष  
किन्तु नष्ट हो चुका सकल बल  
अधु नयन से भरते अविरल  
अग्नि-परीक्षा का है धादो करता कष्ट महम का ।  
कितना सम्झा पथ जीवन का !

क्या जीवन भर होगा चमना  
उफ बिधि की यह कैसी सुपना  
इच्छा रहित सर्वदा जमना  
तार क्षीण श्वांति से दिग्भ्रमते हैं मार्ग बिपिन का ।  
कितना सम्झा पथ जीवन का !

किन्तु घटा नम में धिर धाई  
बुद्ध भी देता नहा दिलाई  
धार्म धीर धंधेरी धाई  
प्रग्न उपस्थित है सम्मुख अथ जीवन और भरण का ।  
कितना सम्झा पथ जीवन का !

प्राण विकस रह रह धबकाते  
हिंसक जगु उपर मुंह यात  
कटक पग में गुम-गुम जात

मन चाहत है विस-मिश्र है अग बरित इस तन का !  
कितना सम्झा पथ जीवन का !

सौट पड़ू पर पथ है बाकी,  
सगो-सका न हूँ एकाकी,  
है निधीबिनी हाथ धमा की  
कहीं नहीं धवसम्भ दिखाई पड़ता मुरुको तिनका !  
कितना सम्झा पथ जीवन का !

किस मतसब से मानव धाया ?  
क्यों इस पथ पर कदम बढ़ाया ?  
अपना साहस सकस रखाया !  
आवाहन किस भाँति करूँ लेकर अधीर मन उनका !  
कितना सम्झा पथ जीवन का !

प्राणी में जब धाए दिनकर  
उठ होऊँ अमने में तत्पर  
रक न कहों भी जाऊँ थककर  
पहुँच बन्द तब सदुपयोग कर हार्सू अन्तिम क्षण का !  
कितना सम्झा पथ जीवन का !

जन्म-स्थान—कोटा (राज  
स्थान) । जन्म-तिथि—१५  
दिसम्बर, १९१५ । शिक्षा—  
एम० ए० (हिन्दी) आगरा विश्व  
विद्यालय से । पोटमटिप्पेयो  
( प्रभाव विद्वत्विद्यालय से )  
प्रकाशित रचनाएँ—'दीप' 'सुबि  
के स्वर' 'बौद्ध इतना हुआ'  
(कविता-संग्रह) । इनके अतिरिक्त

### शकुन्तला सिरोठिया

जन्म १० बालोपयोगी तथा  
श्रीदोपयोगी पुस्तकें भी प्रकाशित  
हो चुकी हैं । विधायक—सन्  
१९३८ से अध्यापन-कार्य में  
निरत हैं । विद्यार्थी २ वर्ष से  
राजकीय विद्युत् प्रजिज्ञान महा  
विद्यालय इलाहाबाद में जाता  
ही अध्यापिका हैं । वर्तमान  
पता—६८ बी० बाई का बाग  
इलाहाबाद ।



हिन्दी-कविवरियों के प्रबन्धों



मुझे प्राण, तब तुम बहुत याद आते !

यनी जब झेंघेरी गगन मेघ छाते  
मुझे प्राण तब तुम बहुत याद आते !

उवासी लिये चाँदनी सी आती  
घिरी मध से रात भी छनपटाती  
हुली हो पपीहा पिया का बुसात !  
मुझे प्राण तब तुम बहुत याद आते !

तिहरती उमंगों मरा वायु धाती  
बिनी की मधुर सुधि मरी गुनगुनाती  
जहाँ धूलि-कण फूल बन मुसकराते !  
मुझे प्राण तब तुम बहुत याद आते !

धुमकती घनाई झेंघेरा डराता  
कही का पथिक पथ भी भ्रम जाता  
किसी के नयन मधु बरसात भात !  
मुझे प्राण तब तुम बहुत याद आते !

रजत जूनरो ठमिया की पहनकर  
नयी बस पड़ी विघ्न सारे सहन कर  
उमड़कर किनारे उसे भ्रम साते !  
मुझे प्राण तब तुम बहुत याद आते !

जन्म-स्थान—कन (पश्चिमी  
पाकिस्तान) । जन्म-तिथि—  
१५ अगस्त १९४१ । शिक्षा—  
मैट्रिक हिन्दी प्रभाकर ।  
विशेष—कवितारण, गीत विद्यार्थी

शान्ता त्यागी



घोर कान में विरोध काविरथ ।  
दुश्मन के लगीने घोर पान का  
भी गीत है । श्यामी बला—  
२६।० काविउ कवर हिम्मी १ ।

दिली-बदलिषियों के प्रक-लीन



मोन ताबो इस तरह मत छुप रहो  
घोर मैं बितना सहूँ यह ना कहो  
याचना मेरी महसूस हो गई  
खेतना बीघार बनकर तुम बहो

तुम म पिघलो तो झगूरा ज्जम लेकर क्या कर ?  
कर रही अपित तुम्हार द्वार पर सो ज़िन्दगी !  
दयता ! सब सा करा स्वीकार मेरी आरनी  
सचता ब दीप बी ली बगिरर बुझने लगी !

जन्म-स्थान—भामनपुर ।  
 जन्म तिथि—१४ नवम्बर सन्  
 १९२६ । शिक्षा—एस ए०  
 (मनोविज्ञान) । विषय—सन्  
 १९४६ में डॉ० मयदेकर  
 प्रभाव से विवाह । रचनाएँ—



शान्ता सिन्हा

‘समानागर मुने’ (कविता  
 संग्रह) प्रकाशित । ‘सिन्धुनी’  
 (कहानी-संग्रह) प्रेम में ।  
 वर्तमान पदा—द्वारा डॉ०  
 मयदेकरप्रभाव रोड नं ६  
 को रावेन्द्रनगर पटना ।

द्वार एष अमेक मी ।

नयन पवन जोसे मन ब बाज्रवन्द सोले  
घो बग्यु रे ।

इन्द्रधनु छाँव म, नया वो बाँध द !

चाँद झनझना उठा  
उमन है गगन-गगन  
गुनगुना रही नदी  
दीप जले नयन-नयन

जय-जयवन्ती स्वप्न-सले भग-भरपना आसाप से  
इन्द्रधनु छाँव में नया का बाँध द !

ऊँपता दितित्र याम  
स्वप्न आव रही पहाडियाँ  
बाघरा अहेरी चाँद  
टर रहा परछाइयाँ

यमुना निवृञ्ज छाँव मटका हिरण बाँध ॥  
इन्द्रधनु छाँव म, नया का बाँध द !

तलहटो म भूर्य सिधे  
दास रही आवाग-वन  
बब आधगा पतिपि प्रिय  
भरग हागा द्याम याम ?

समस्त रक्त-सिन्धु-पार मुक्ति-द्वार खोल दे !  
इन्द्र-धनु धाँव में नया को बाँध दे !

द्वार एक अनेक हैं  
नन एक दृष्टि अनेक  
युग-युग की प्यास लिये  
नील एक स्वप्न अनक

कर दे मुझे एक स्वर धोंग धोंग तार बाँध द  
इन्द्र-धनु धाँव में नया को बाँध द !

जन्म-स्थान—ग्राम रामपुर  
 (मीनपुर) उत्तर प्रदेश । जन्म  
 तिथि—१७ जुलाई १९२२ ।  
 शिक्षा—घर पर ही । उच्च  
 शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकी ।  
 विषय—अवतार से ही घर में  
 शिक्षा का बालावरण मौजूद  
 था । उसका नाम इन्हें भी  
 दिया । उन्नतभाषा पढ़ायी

### शांता सिनहा



घोर गरीबी की ली में जनक  
 बसाएँ मिली है । 'राष्ट्र  
 सेवा महासभा की' पर बहुत  
 से योगदान हैं । अग्रणी योगदान  
 ही पुस्तकालय प्रकाशित किया  
 था । सर्वज्ञान बना—शायद  
 भी सर्वज्ञान सिनहा सर्वज्ञान  
 की (इतिहास) जी० टी०  
 रोड घनीपट्ट ।



भसा मुझसे दूर कब वे ?

साधना भी स्वयं ही मैं स्वयं ही वरदान है मैं !

भक्ति भी है भावना भी

सिद्धि भी है साधना भी

अर्चना भी वन्दना भी स्वयं ही भगवान् है मैं !

वह घटस विस्वास है मैं

और प्रणयोष्ण वास है मैं

देवता है किन्तु मैं ही स्वयं ही पापाण है मैं !

पुष्प है उपहार की मैं

भाव है मनुहार की मैं

वेदना है चिर निरन्तर व्यथित उर का गान है मैं !

भूलती है आप ही मैं

खोजती है आप ही मैं

और पाकर आप ही मैं एक बेमुष प्राण है मैं !

सदय वे तुम दूर कब वे ?

भसा मुझसे दूर कब वे ?

देव वो से हम न दूषित स्वयं मरतिवाम है मैं !

साधना भी स्वयं ही मैं स्वयं ही वरदान है मैं !

जन्म-स्नान—हरेली (उत्तर प्रदेश)। जन्म तिथि—२३ जुलाई सन् १९२०। शिक्षा—अपराजित पी. बी. बिस्वम्भरनाथ प्रबन्धन एम० ए० साहित्य विभाग के सहयोग के युद्धक पीरन में भी साहित्य रत्न तथा एम० ए० की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। साहित्यिक कार्य—सापेक्ष लेख आदि भी लिखा

## शान्ति प्रयास

'हिन्दुस्तान' धीरे-धीरे 'आज' आदि वर्षों में छलने रहे हैं। 'आज' तथा 'आज' तथा 'आज' भी आज बहिर्मुख दिगन्तों की है। प्रकाशित पुस्तकें—'स्वयम्भूत-पदार्थ' 'आमचीरा' (आमोदपोषी बहिर्मुखों के मंदह) 'मोरब पत्र' (मेगाका मंदह)। रचनाएं—३१ ५ २ दिग्गज माध्यम बरेली।



डगर मिल गई !

तुम मिले प्यार की साधना को गई

तुम गए, भावना को डगर मिल गई !

भावना के विहग धाज उमुछ हो

कल्पना के परो को पसारे हुए

बल पड नीम नम में बहकत हुए

उड़ धारा स गगन के किनारे हुए

कामना कीन-मो खेप छोई हुई-

बतना यह युगों की डगर मिल गई !

तुम मिले प्यार की साधना को गई

तुम गए, भावना को डगर मिल गई !

सिन्धु से भी विद्युत व्योम स भी बिमल

नीर से भी तरल धाज मरा हृदय

वायु स भी सजग कुन् से भी मुमग

इन्दु से भी पवल धाज मरा हृदय

प्यार छोया किसी एक का प्ररणा-

विद्व के प्रेम की तो मगर मिल गई !

तुम मिले प्यार की साधना को गई

तुम गए, भावना को डगर मिल गई !

प्राण न एक ही साँस में पी लिया

विद्व के प्रेम स भर हृदय का अपक

सा गई बेतना हो महम् की खड़ा—

रग जब मिट गई युग-युग की कमक

मा अक्षर तक गिरा नीर का पात्र था

पर अमानक सुषा की गगर मिल गई ।

तुम मिले प्यार की साधना सा गई

तुम गए भावना को डगर मिल गई ।

हट गया आवरण मोह-माया अनित

बहु स जाव की मिल्नता मिट गई

यो युगों में भटकत हुए जोब का—

सदय पूरा हुआ मिल्नता मिट गई

सोक-परसोक की कामना भुट गई

ज्योति अगमग असीबिब अमर मिल गई ।

तुम मिले प्यार की साधना सा गई

तुम गए भावना को डगर मिल गई ।

अग्र-स्थान—मैनर्षी (राज-  
स्थान) । अग्र-नीति—अनु  
१९२६ । शिवा—धर्म० ए०  
(धर्मशास्त्र) सधनऊ-विश्व  
विद्यालय है । विशेष—हिन्दी  
की सघन नीतिकर्मी और  
मेजिका । आपकी 'रेखा' नामक  
काव्य कृति पर हिन्दी-साहित्य  
सम्मेलन द्वारा शेकसपिमा-पुर  
स्कार दिया जा चुका है । प्रका  
शित रचनाएँ—'निरुक्ति'



### शान्ति मेहरोत्रा

नरीनिका 'रेखा' 'विदा'  
'पद्म ध्वनि' 'पद्म प्रदीप' तथा  
'बागुवन' । प्रेस में—'सुरक्षा'  
के पर' (हास्य-व्यंग्यपूर्ण रच  
नाएँ) 'जुना आकाश' मेरे  
पंग (कहानीयों हास्य-व्यंग्य  
कविताएँ मधु कथाएँ) । इन  
कहानीयों और हास्य-व्यंग्यपूर्ण  
रचनाएँ ही विषय रूप में  
लिखी हैं । वर्तमान पता—  
आकाशवाणी केन्द्र इलाहाबाद

आराध्य न भव साकार बना ।

प्रतिमा में और पुजारी में थोड़ा अन्तर अनिवार्य मदा  
 औरक मयना में अक्षरों में, थोड़ा अन्तर अनिवार्य मदा  
 कुछ अन्तर तो होना ही है, अभिव्यक्ति और अनुभव में भी  
 फिर सत्य कल्पना में भी सा थोड़ा अन्तर अनिवार्य तदा  
 में सीमित है तुमको अभीम रगने में हो अभिमान मुक्त,  
 ससार बसा सकमें बाल, बस स्वयं न तुम मगार बना ।  
 आराध्य न भव साकार बना ।

हा अभी पूणता पाई है दुख सुखमय जग में मूर्तिम न  
 मिट्टी की प्रतिमा मानव का मन्दिर बस कर पार्थ धनान्  
 मार्गों के स्वप्निल रंगों से, मैं रूप सदा भर लिया कर  
 तुमको ओ-ओ करना चाहूँ बस पूज-पूज कर लिया कर  
 अनुमान सत्य में होता है बस भी ज्यादा बजाव  
 मैं तुम्हें मजाऊँ बदल में तुम मरे हा श्रद्धाग बना ।  
 आराध्य न भव साकार बना ।

बासन्ती कोयल कहती है—मुझको मरा मधुमय यद्यन  
 मधुवन की कलियाँ कहती हैं—मुझको मरा जीवन यद्यन  
 जीवन कहता—मैं दीराव के कामल भाषा में मुरन नहीं  
 मार्गों ने धाकर कहा, हम बलिता का धाम-त्रण यद्यन  
 धाम-मण की हड़ बड़ियों में पल-कमल तुम्हारा बस स्वप्न-त्र  
 फिर मरी हवाओं के बन्दी मत मर जागगा बना ।  
 आराध्य न भव साकार बना ।

जन्म स्थान — दिल्ली  
 जन्म तिथि—२ मार्च १८८२। शिक्षा—इंग्लिश स्कूल दिल्ली और बिहिबन कामेज इन्दौर में। बाद में हिन्दी प्रकाशक' किया। विसेय—१४ वर्ष की अवस्था से ही जब चाप हिन्दी-साहित्य-सम्बन्ध



शान्ति सिंह

प्रवास की 'प्रथमा परीक्षा' की तैयारी में तत्पर भी काव्या रचना प्रारम्भ की। प्रकाशित रचनाएँ — 'बिखरे प्रभु' (१८८७) 'उन्मिषासा' (१८८८) तथा 'धन्य' (१८९०)। स्वाधी पता—२४ हरियाणव प्रसारी रोड दिल्ली।  
 हिन्दी-व्यवस्थियों के प्रथम गीत

जब तुम्हीं अनजान घनघर रह गए ।

जब तुम्हीं अनजान घनघर रह गए  
विश्व की पहचान सगर क्या कर ?

जब न तुमसे स्नेह के दो वरग मिल  
क्या पहने के लिए दा क्षम मिल  
जब तुम्हीं की सतत व्यवस्था  
विश्व का सम्मान लेकर क्या कर ?  
जब तुम्हीं अनजान घनघर रह गए  
विश्व की पहचान लेकर क्या कर ?

एक धारा एक ही प्रमान था  
बस तुम्हीं गरहबय का अभिमान था  
पर न जब तुम हो हम अपना मर  
धर्म यह अभिमान लेकर क्या कर  
जब तुम्हीं अनजान घनघर रह गए  
विश्व की पहचान लेकर क्या कर ?

हूँ तुम्हें बस जसन अपनी निगा  
हूँ तुम्हें अपनी मगन बन निगा  
जो स्वरित हावरन कुछ भी यह मन  
मैं जसा ध गान लेकर क्या कर ?  
जब तुम्हीं अनजान घनघर रह गए  
विश्व की पहचान लेकर क्या कर ?





पुष्पतम क्षण है ।

मानिनी सब-कुछ निछावर करण पर तेरे—  
वरण कर पुष्पतम क्षण है ।

स्रोत दे निज नयन-शान्त  
युग-युगों से स्निग्ध उर-सप्त  
वेवना बन जाय यमुना—  
एक मुनि को साँस से गस  
रागिनी मुर-सय निछावर भजन पर तेरे—  
ध्वनन कर पुष्पतम क्षण है !  
वरण कर पुष्पतम क्षण है !

भाज बन्दी-सा बना है  
धड़कनों की माह का स्वर  
भयर का सगीत सोया—  
बहरती-सी है सह्र ;  
मादिनी मन प्राण तूपुर भजन पर तेरे—  
निरण कर पुष्पतम क्षण है !  
वरण कर पुष्पतम क्षण है !

भाज स्वप्निस-सा पुरातन  
एक अभिनव मधुर नूतन

विगत-आगत सब शिये—

धिरकन भरे तेरे सुककण

रगिनी मूषु नेह अपित मिलन पर तेरे—

सुजन कर पुष्पतम क्षण है ।

आनिनी, सब-कृष्ण निष्ठावर धरण पर तेरे—

वरण कर पुष्पतम क्षण है ।

जम्मू स्वाम— धर्ममेर (राज  
स्थान) । जम्मू तिथि—१६ नव  
म्बर समू १९२५ । एम० ए०  
(हिन्दी) । विषय— अपने पिता  
श्री जगन्मोक्ष बापूयों से अधिक  
प्रभावित । कविता के क्षेत्र में



जम्मू स्वाम

जान का समय भी इनके पारि  
वारिक साहित्यिक वातावरण के  
हैं। अभी तक प्रायः प्रेम-पीत ही  
मिले हैं और वे भी विराट-प्रधान  
हो । अतः मान  
पता—कला भवन कबीर मार्ग  
बनी पार्क जम्मूर (राजस्थान) ।

हिन्दी-कविताओं के प्रेम-पीत

हार तुम मेरे धाघोगे ।

जब मैं मुना द्वार भर धाघाग  
नई-नई निज धम्नवार बंधाना है ।

प्राग मुम्हारे ब्बागन म द्वार न्हारा  
धगना देया सारा मदन जगरा है  
बामय है प्रिय चरण तुम्हारा न्मोबिग  
पगुगियों म भाग प ध न्बाग है

जब से मुना महन तब तुम धा बाघाग  
धोब पूरगी मगल जमन जगनी है ।

जब से मुना द्वार तुम भर धाघाग  
नई-नई निज धम्नवार बंधाना है ।

धीराना-भा जावन मनन धा मिन  
माका बोई मो ता मरा मान नहा है  
धनबाधे धपरो पर मध्य धा बाग  
तमा बाई मो ता मरा गान नहा है

जब मैं मुना गात तुम मेरे गाघाग  
नय-नये निज छन धनाबर लानी है ।

जब मैं मुना द्वार तुम भर धाघाग  
नई-नई निज धम्नवार बंधाना है

इन भयनों में नय मनन का ममा है  
गनगगी म बाह हृदय म भुगराना

नईसे काटूँ पंख कल्पना के सुन्दर,  
 मन की सोन-बिरैया देखो धकसाती  
 जब से सुना प्राण पर मेरे छाओगे  
 मये-मये नित मावक सपन सजाती हूँ ।  
 जब से सुना द्वार तुम मरे आओगे  
 नई-नई नित बन्दनवार बँधाती हूँ ।

औराहे पर लड़ो हुई हूँ सोच यही  
 पता नहीं तुम किस पथ पर होकर आओ  
 मैं दीवानी बनी तुम्हारी जग कहता  
 सौवरिया इस पागसपन को दुसराओ  
 जब से सुना अजाना पथ अपनाओगे  
 डगर डगर पर दीपक रोज जलाती हूँ ।  
 जब से सुना द्वार पर मेरे आओगे  
 नई-नई नित बन्दनवार बँधाती हूँ ।

जन्म - स्वामि — बिहार  
 मरीफ (पटना)। जन्म तिथि—  
 १७ सितम्बर १९१९ ।  
 शिक्षा—बी ए० (पंजाब में) ।  
 एम० ए० पटना-विश्वविद्या  
 लय से १९४३ में । प्रकाशित  
 रचनाएँ—'मीनू की टोपी'  
 कहानी-संग्रह (१९४९) 'बीचन  
 का सत्य' (समस्त कहानी-संग्रह  
 धनी प्रकाशित) । 'स्मृति शेष'

### शारदा येवालकार

कविता-संग्रह भी प्रकाशित ।  
 १९३३ में पटना विश्वविद्यालय  
 से 'हिन्दी साहित्य का विकास  
 (सन् १८०० से १८३६) शीघ्र  
 प्रकाशित पर पी-एच०  
 डी० उपाधि प्राप्त । यह प्रकाशित  
 प्रथम ही बिहार राज्यभाषा  
 परिषद् से प्रकाशित हुआ ।  
 रचयिता— प्रधानाचार्या  
 मुन्तरबनी महिला महाविद्यालय  
 भागलपुर (बिहार) ।



तुम मुझको पहचान न पाए !

संघर्ष कर सरसिज पराग को  
पशुद्वियों के अरुण राग को  
अग्नि अन्न तक भी जान न पाए

तुम मुझको पहचान न पाए !

दीप शिक्षा से जग आलोकित  
स्नेह-सीम से मन अनुप्राणित  
दीप प्रभा को देख न पाए

तुम मुझको पहचान न पाए !

दिवा-रात्रि का अद्भुत समय  
हो पाया जब उनका सगम  
रहते अपनी व्यथा दिखाए

तुम मुझको पहचान न पाए !

विदवाओं पर मौन समपण  
आस लगाए जीवन के क्षण  
मेरे मन की चाह न पाए

तुम मुझको पहचान न पाए !

जन्म स्थान— बिजौली  
 जिला धर्मीगढ़ । जन्म-तिथि—  
 १ सितम्बर १९३६ । शिक्षा—  
 मन्त्रि यू०पी बोर्ड (१९५३)  
 बिद्याविनायिनी प्रयाग महिला  
 बिद्यापीठ (१९५१) एच टी०  
 भी राजकीय बोला बिद्यालय  
 धारवाह (१९५२-५४) । बिरोध—



## जीला

सन् १९४८ में विगने में  
 शिव । नवभारत विमान  
 और नविक धानि पत्रा में  
 रचनाएं प्रकाशित । नविक कवि  
 और साहित्यकार शिव गुरुवार  
 पाठक में सन् १९५६ में प्रकाशित  
 हुआ था किन्तु इस समय  
 बिजौली ही रहा है । रचनाओं  
 पत्रा-बिजौली जिला धर्मीगढ़ ।



मेरी आँखों से देखो तुम !

मेरी आँखों से देखो तुम कैसा होता प्यार ?

दीप-दिशा पर मतवासे हो आते मस्त पतंग  
निपटुर होकर दीप जलाता कोमल-कोमल धंग  
अपने धंग जमाकर जब वे इधर उधर उड़ते हैं—  
तब धाममग्न देता दीपक अपनी बाँह पसार !  
मेरी आँखों से देखो तुम कसा होता प्यार ?

बिह्वल होकर फूल हृदय के देता है पल सोस  
प्रेम-पावना करते भीरे भीठा-भीठा बोल  
कुछ दिन तक चलता रहता है गुप-गुप प्रमाणाप  
उड़ जाते नीरस फूलों से भीरे पल पसार !  
मेरी आँखों से देखो तुम कैसा होता प्यार ?

पाठक स्वाति-बूँद पाने को अपनी बाँह उठाए  
तस्या तपस्वी सा बीठा रहता है ध्यान लगाए  
किन्तु नीर के बंदने उसको जब मिलाते हैं पत्थर—  
तब स्वभाव को कोसा करता रह जाता मन मार !  
मेरी आँखों से देखो तुम कैसा होता प्यार ?

हमारे कवयित्रियों के प्रेम-भीत

जन्म-स्थान—कानपुर ।  
 जन्म-तिथि—१४ जून १९४३ ।  
 विधेय—कानपुर नगर महा  
 पालिका के एमिस्टेष्ट एट्टेन्डिंग

श्रीला अग्निहोत्री



पाठ्यपत्र (विद्या भुवनिस्टेष्ट)  
 श्री कमलाप्रसाद अग्निहोत्री की  
 मुद्रा । विद्या—पी० ए० ।  
 स्थायी पता—१० विद्यापी रोड  
 कानपुर ।

हिन्दी-कवयित्रियों के ब्रेड-बोर्ड

धीरे तुम जाने कहाँ हो ?

चाँद तो घर आ गया है धीरे तुम जाने कहाँ हो ?

एक दीपक ने दसों दीपक जलाए,

एक दूरी से बिहग घर लौट आए—

मैं स्वयं को एक मेला लग रही हूँ—

घाँव में सुकुमार सपने डबडबाए

प्राण यह ध्वरा गया है, धीरे तुम जाने कहाँ हो ?

चाँद तो घर आ गया है धीरे तुम जाने कहाँ हो ?

रात रानी गंध के स्वर फूँवती है

प्राण में उम्मन पिकी-सी झुकती है

क्या कहूँ मैंने हृदय पाया धजब है—

बिगदगी हर बार यों ही झुकती है

मधु मुझे नहसा गया है धीरे तुम जाने कहाँ हो ?

चाँद तो घर आ गया है धीरे तुम जाने कहाँ हो ?

कण्ठ में संगीत बँठा बुदबुदाता

होट पर धाता न पोछे लौट जाता

पायसों में एक कम्पन-सा विसय है

भारती में दोष रह रह भिन्नमिताता

रूप रस बरसा गया है धीरे तुम जाने कहाँ हो ?

गया है धीरे तुम जाने कहाँ हो ?

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

काम स्वाम— बड़की  
(बहालपुर)। काम तिथि—  
३१ अगस्त सन् १९२७।  
मिरा—सन् १९५३ में आगरा  
विश्वविद्यालय से अनुमान  
विषय में एम० ए. और उसके  
बाद सन् १९३६ में एम० टी०

श्रीला गुप्ता



पढ़ीया उत्तीर्ण की। विनोद—  
मूलोप-जय सुन्द विषय की  
आस्थाविकाहात हुए भी बाध  
रचना में अग्रसर हैं। वर्तमान  
काल—मूलान प्रकाश के भी०  
तम महिमा विद्यालय महारम  
पुर।

हिन्दी ज्ञानविद्या के प्रम-गीत

जाने क्या बात हुई ?

मौन हो गए तुम जाने क्या बात हुई ?

मेरा एक खरिद निगाहें भासों हैं  
मिम्न-मिम्न कोणों से दुनिया घाँव रही  
घपनी मन-भरजी के काम परदों को—  
उठा उठाकर लघु छिद्रों से झाँक रही  
कोई कहता है मैं मन-घँघियारी हूँ  
कोई कहता मूरख पर बसिहारी हूँ  
कोई कहता जमी नहीं मैं सोई हूँ  
कोई कहता रात रात भर रोई हूँ

मैंने तुमसे पूछा—'राम तुम्हारी क्या ?  
मौन हो गए तुम जाने क्या बात हुई ?

सारा जीवन गड़ी एक ही मूरत की  
सेहर पहुँची सेबिन जब बाजारों में  
सोन चाँदी संगमरमर की दूकानों—  
व्यग सगी करने कुछ मुलर इचारों में  
एक सगी पूछने—'कहो कितने पैसों ?  
हँसी दूसरी मिट्टी के पैसों कैसे ?'  
तुम चुपके स बोले—'इन्हें समीज नहीं  
मन्दिर की मूरत बाजारों की नहीं !'

हिम्नो-कवयित्रियों के प्रेम-गीत

मैंने सोचा, 'तुम्हें मुफ्त दे दूँ मूल्य'  
तभी था गए तुम जाने क्या बात हुई ?

भूप जमान में रूप घाटन धाई जब  
मैं धूलों की छाँव-तसे चुन पड़ी रही  
मेरी गंध बहकती थी मग्निर में—  
मैं कुछ बोधी नहीं द्वार पर खड़ी रहा  
भीड़ समझती रही मिथारिन कोई है—  
कोई आँख न मरी छातिर रोई है  
मैंने अपने मन को यों समझाया है—  
धराज देवता ने स्वयं तुम्हें बुलाया है  
सबिम पद रज छुवर नजर उठाई जब  
देव सो गए तुम जाने क्या बात हुई ?

जन्म-स्थान—इलाहाबाद ।

जन्म तिथि— १२ नवम्बर

१८३७ । शिक्षा—बी ए० ।

एम ए में अध्ययन कर रही  
है । विशेष— प्रख्यात तरुण  
साहित्यकार थी रमेश वर्मा की  
कमपत्नी । अपने पति के  
सेवा में सहयोग देने के  
अतिरिक्त इन्होंने अनेक नामों  
पर अपनी तथा प्रोडोपयोगी  
पुष्पक भी लिखी हैं जिनमें से  
कई भारत सरकार के शिक्षा

### शुभा वर्मा

महालय धीरे उत्तर प्रदेश का  
कांग्रेसवादी भी हो चुकी हैं ।

प्रमुख कृतियाँ— "बीबी बोक  
क्या" इत्यादि की लोक-

कथाएँ अमेरिका की लोक-

कथाएँ 'मूवेन की लोक कथाएँ'

आयरलैंड की लोक-कथाएँ

जिन देश में गया जाती है

पता गल्पनय जयत । स्थायी

गता अ १ कल्पननय  
दिना ३१ ।

हिन्दी साहित्य के प्रम-गीत



याद करती हैं तुम्हें ।

याद करती हैं तुम्हें बस एक ही क्षण ।

जब बिरुज की डार से प्राची उतरकर  
भवन-मल पर मोतियों का थाल भर भर  
महल सजुवाती सँभलती भूम गति स—  
नाच सली है घरा घावाला गद्गद  
दूँदती है मैं तमो घागात बिगत म  
व्यपित हो तुमस मिये अनुभूति के कण ।  
याद करती हैं तुम्हें बस एक ही क्षण ।

तुम न मिसते जब नियति के भाव सोम  
बिगत-भागात जब परम्पर एक क्षण  
भूत हो सज्जना में भूमकर ही  
हैं नहीं मानव कभी क्या बैठे रोत ?  
मैं अपरिचित-सी कही हूँ बनना म  
प्राप्त कर सती तुम्हारी ध्येया क प्रण ।  
याद करती हैं तुम्हें बस एक ही क्षण ।

दूर हो पय स बहुत यह जानती है  
मिम न पाऊँ मैं कदाचित् मानती है  
भूमकर भी तुम न पहचानो मुझे पर  
याद रगना मैं तुम्हें पहचानती है  
दूँक भूमी तुम जहाँ भी जा दिपाग  
बस हृदय का एक धागा एक ही प्रण ।  
याद करती हैं तुम्हें बस एक ही क्षण ।

द्वितीय कवित्वियों के प्रथम योग



जन्म स्थान—कानपुर ।  
 जन्म तिथि— ५ पुनर्वा सन्  
 १९४३ । शिक्षा—बी० एच  
 सी परीक्षा उत्तीर्ण । विशेष—  
 विज्ञान की छात्रा होते हुए भी  
 कविता की ओर विशेष रुचि ।  
 पूरा नाम रीतबामा श्रीवास्तव ।



## शस कली

पहली कविता 'साज' में प्रका  
 शित । 'साज' के साहित्य-सम्पा  
 दक भी मोहनलाल गुप्त से  
 विशेष प्रार्थनापूर्ण मित्र । पिता  
 भी सम्बन्धप्रसाद श्रीवास्तव  
 एक कुशल ईश्वरीनियत हैं । स्थायी  
 पता—२३/७५ कबीर चौक  
 बाराणसी ।

द्वितीय-कवयित्रियों के प्रथम-मील

घोर वन आए हो !

सुनती है दूर वही बोलन की रूक-रूक  
झोमता है तन मन उठती है 'रूक-रूक'  
सुपियों की नोकों पे शीतल व विनान मान  
मदमासी चड़ियों में पीर वन आए हा !  
दूबती तरी के तुम भीर वन आए हा !

सहर उठा मन पिया ! सहराते धौकस पा  
छहर उठा प्राण हिया बस गाले बाज-मा  
तहप उठी बिजली है नाचता है मन मधुर  
चातक व प्राण प्रिय मोर वन आए हा !  
दूबती तरी के तुम भीर वन आए हा !

स्वागत में दब मरा नह-नीप उल गया  
बाँद मुन्कराया सच्चा का मान गुन गया  
तिनी बसी मन्दन की गमा-गला नाच उठा-  
मन के निकुञ्ज में समीर वन आए हो !  
दूबती तरी के तुम भीर वन आए हा !

जन्म स्थान— मरठ ।  
 जन्म तिथि— १० जुलाई  
 १९२३ । शिक्षा— मैट्रिक  
 हिन्दी-प्रभाकर साहित्य विद्या  
 ण्ड । विधेय—सन् १९३८ में  
 विवाह के उपरान्त अपने पति  
 श्री जमरा चतुर्वेदी के सहयोग  
 में साहित्य निर्माण की ओर  
 घूमने लगे । प्रकाशित—  
 रचनाएँ—'बीर सेनानी' (उप  
 न्यास) सन् १९३९ से ३५ तक



### शशकुमारी चतुर्वेदी

राजस्थान विश्वविद्यालय की  
 हाई स्कूल अध्यापिका के पद पर  
 पुस्तक रचने । साकाश मातृ  
 के जयपुर केन्द्र से बालों  
 बलिता नाटक आदि प्रकाशित  
 होते रहते हैं । स्थायी पता—  
 शरा भी जमरा चतुर्वेदी एड  
 ७१० यात्रीनगर जयपुर ।

हिन्दी-रचयित्रियों के प्रेम-सीत

## प्रेममय अभिसार भूमी !

प्रेम के आवेगों में मैं प्रेम का उपहार भूमी !  
मधुर स्मृति-सुगन्ध-स्वप्न भूमी प्रेममय अभिसार भूमी !

आह उस मधुमास की मधु से भरी चिर मंदिर राम  
हृदय-हारी सुगंधकारी सुधा-खपक मधुर बान  
आह उन दक्षि-रश्मियों की चपल चक्षु सुगन्ध घान  
एकदा ही प्रेम की तन्मयीता में व्याप्त भूमी !  
प्रेम के आवेगों में मैं प्रेम का उपहार भूमी !

प्रेम की मृदु कल्पनाओं में भरा समार क्या है ?  
रे ! मुझे काँई बता दे दिमिज के उम पार क्या है ?  
प्रेम है यदि, तो बताओ प्रेम का दुधि गार क्या है ?  
हृदय-वीणा को बजाते प्रीति के मृदु तार भूमी !  
मधुर स्मृति-सुगन्ध-स्वप्न भूमी प्रेममय अभिसार भूमी !

जन्म स्थान— इम्हौर :  
 (मध्य प्रदेश) । जन्म-तिथि—  
 मार्च १९२२ । शिक्षा—  
 काशी विश्वविद्यालय से  
 बी ए० बाद में नागपुर-  
 विश्वविद्यालय से एम० ए  
 किया । विशेष—इनके पूर्वज  
 उत्तर प्रदेश के रहने वाले  
 थे । पिता श्री मदन  
 प्रसाद पाण्डेय इनके जन्म से

### शासकाला

पहले ही इम्हौर में आकर बस  
 गए थे । २० वर्ष की आयु से  
 ही काव्य रचना प्रारम्भ ।  
 आनन्द गवर्नमेण्ट ट्रैनिंग  
 कालिज हैदराबाद में हिन्दी की  
 अध्यापिका हैं । प्रथम काव्य  
 संग्रह सीमा ही प्रकाशित होने  
 वाला है । स्थायी पता—१४-  
 ७-२९१ बेगम बाजार, हैदरा  
 बाद (आन्ध्र) ।

हिन्दी रचयित्रियों के प्रथम-गीत



गीत घपमे गा रही है !

मैं तुम्हारे ही स्वरों में गीत घपमे गा रही हूँ !  
घो' तुम्हारे स्नेह से ही यह प्रदीप जला रही हूँ !

फिर रही थी यामिनी  
आसावरी का बदनाम  
आ गए तुम गजग दीपक-  
राग की मय खेनना ल  
मैं तुम्हारी ज्योति से आसोष घपना पा रही हूँ !  
मैं तुम्हारे ही स्वरों में गीत घपमे गा रही हूँ !

बँध गए नियम जसघर  
क्षीण विद्युत्-वन्दनों में  
भर उठे आमाद के स्वर  
जीव जीवन लादनों में  
मैं तुम्हारी मृगमा में लीन होनी जा रही हूँ !  
घो' तुम्हारे स्नेह से ही यह प्रदीप जला रही हूँ !

आज कुमुदित हो उठी है  
बटकिन मरुभूमि मारा  
सजस भुजते पा रहे हैं  
ये जमद घम्बर-विहारी  
मैं तुम्हारी खेतना मलय जिसरी पा रही हूँ !  
मैं तुम्हारे ही स्वरों में गीत घपमे गा रही हूँ !

जन्म-स्थान— मरठ ।  
 जन्म तिथि— १ सितम्बर सन्  
 १६२० । शिक्षा— ग्राम्य  
 विश्वविद्यालय से एम० ए० ।  
 काजी विश्वविद्यालय से हिन्दी  
 उपमाओं में नारी विषय पर  
 शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करके  
 पी०एच० डी० की उपाधि  
 प्राप्त की । विशेष—वचन



## वासु रस्तोगी

मे ही कहानी कविता काटव  
 निवृत्त लिखने की ओर घूमि  
 गयी रही है । आठवण मेरठ  
 के रघुनाथ गल्ले कामिज में  
 हिन्दी की प्राध्यापिका है ।  
 प्रकाशित रचना— 'वराग'  
 ( कविता—गद्य ) । रचना  
 पता— ११० मोरीपाड़ा  
 मेरठ ।

हिन्दी उच्चविश्वविद्यालय में प्रम-गीत

तुम न घाए पर !

निरसती ही रही मैं बाट घाघा तुम न घाए पर !

हगा बी गून्यना यह-

भर न पाई मीद गना भी

तुम्हारी छवि छ वसनी-

रही स्मृतियाँ बिगनी भी

समा जमती रहा निनि भर मजस-मी तुम न घाए पर !

मकुचना पय पर फेला-

समा का मौन नाराजन

गगन व नील आँगन म-

समकसे स्वर्ण व बुछ वग

यहाँ छलती रही मुम्हारी निरागा तुम न घाए पर !

तुम्हारा बिह्व सरगों व-

बिछे पायेय बन मुम तर

बितर उन पर गद पलरों-

मचमत आमुआ म थक

दिताई प्राण में भरती रही तम तुम न घाए पर !

रहा सग आज मुमकी-

बिब-मारा एव मगना-मा,

गया बुभ आह मग म्मेह-नीरा

मनह का व्यामा

व्यथा पलती रही मन म मदन में तुम न घाए पर !

निगगती हा रही मैं बाट घाघा तुम न घाए पर !

निगगी-वचदिविया व प्रम-नीरा



जन्म स्थान—मौरावा  
(उधाम)। जन्म तिथि—६ मई  
१८९१। शिक्षा—आयरा-विश्व  
विद्यालय से हिन्दी में एम० ए०  
(१९१३ में)। विषय—कविता  
और कहानी-लेखन में अधिक  
रुचि है। प्रारम्भ से ही घर का  
बातावरण साहित्यिक था।  
सन् १९१६ में हिन्दी की नयी  
कविता के जुने हुए कवियों में से

### स्नेहमयी चौधरी

एक श्री धनियकुमार से विवाह  
कर्यात् हिन्दी की प्रख्यात कव  
यित्री श्रीमती सुमित्राकुमारी  
सिन्हा की पुत्रवधू बनी। पिछले  
कुछ वर्षों में अनेक कविताएँ  
और कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं  
में प्रकाशित हुई हैं। 'युताव के  
रंग' नामक कहानी-संग्रह प्रका-  
शन पर पर है। वर्तमान कला—  
की धार् ७१७ सरोजिनी  
नगर गई दिल्ली—१।

हिन्दी-नवविचारियों के प्रम-नीत



मन मेरे, उनकी बात कहो ।

उनकी छाँव की तुलना में  
सब रंग-रूप हैं पीले

तृप्त हो गए हैं उनकी  
बहुरंगी में जल का पाप

उनकी लहर-लहर पर निरकर उनका गगन बहा ।  
मन मेरे उनकी बात कहो ।

उनकी तरंग बपल गतिविधियाँ  
पुनियाँ भर से ग्याही

उनकी मधुर मंदिर बागा  
कितनी है सुमन्या ग्याही

उनकी छाया बनकर प्रतिपल उनका नाम रहा ।  
मन मेरे उनकी बात कहो ।

उनकी सहज निबटता का मुग  
जीवन की घाती है

पर यदि कोई बला प्रिय की—  
बिलुडन की घाता है

तो भीतर-भातर उनसे दूरी का ताप मिला ।  
मन मेरे उनकी बात कहो ।

जन्म-स्थान—ग्राम पुछनी  
 सराय जिला भागमपुर  
 (बिहार)। जन्म-तिथि—२ जून  
 १९१६। शिक्षा—बी ए।  
 विषय—राजकीय महिला  
 शिष्य-कला पिछामय मुन्दीचक  
 से प्रबानाचार्या। कामिद-जीवन



स्नेहसता प्रसाद

के प्रारम्भ ग ही मगन में बधि।  
 पहलें-पहल १९ वर्ष की अवस्था  
 में हिन्दी-साहित्य-मगमन के  
 एक अधिवक्ता में कविता-गाठ।  
 स्थायी पता—डारा भी गुरु  
 मारायणप्रसाद बधीम मुन्दीचक  
 भागमपुर।

हिन्दी-कवयित्रियों के प्रथ-गीत

भूल गए क्यों निमम मेरे ?

मे सावन की बूंद धरा पर  
घनूमाण है धन नम धर ।  
भूल गए क्या निमम मेरे ।

नयनों के मिसन का धारा  
ब्याकुल धनर की है भागा  
कमे स्वर पहुँचा दूँ तुम तक  
जग-बन्धन व घनूपम कर ।  
भूल गए क्या निमम मेरे ।

बंचल जग की क्या माया है  
दमती अपनी ही छाया है  
नशाओं के भ्रम में भूलूँ  
धीरे धीरे व रह यमर ।  
भूल गए क्या निमम मेरे ।

आओ देव जुड़ा व मन या  
पणित वर निवर्त्तण धन का  
भूल निशा-भयनों में जाऊँ,  
या हँसते हास क्या न मन्दरे ।  
भूल गए क्या निमम मेरे ।

हिन्दी-शक्तिविद्या के प्रथम-गीत

जन्म-स्थान—ससमठ ।  
 जन्म तिथि—सन् १९३२ ।  
 शिक्षा—बी० ए० एम० टी० ।  
 कार्य—महिला हिन्दी विद्यापीठ  
 ससमठ में अध्यापन । प्रका-  
 शन—‘रजनीपम्पा’ (कविता  
 संग्रह) १९५९ । सम्पादन—



स्नेहसूता 'स्नेह'

'कविका' मासिक ( फरवरी  
 १९५९ से मार्च १९६० तक  
 लगभग चार वर्ष ) । छात्रकृत  
 कर्मचोक' मासाहिक का सम्पा-  
 दन कर रही हैं । स्थायी पता—  
 बतारो वाली गली ससमठ ।

हिन्दी-कवयित्रीयों के प्रथम-मीठ

तुम मिसोगे हो कभी !

तुम मिसोगे ही कभी मुषि की डगर में  
मैं तुम्हारी याद को घपना बना लूँ !  
तुम मिटा दोगे कभी मन की पुष्प का  
मैं तुम्हारी ज्यानि को घपना बना लूँ !

सुवह-सी मुग्धान बगदन-सा हृदय धन  
घोस-सा पावन नयन का मीर हासा  
मुमन को सौरभ भ्रमर को मूँच दवर  
स्वयं को छमती रही वो मदिर हासा

तुम सजा दोगे कभी बिछर सपन को  
मैं तुम्हारी नींद का घपना बना लूँ !  
तुम मिसोगे ही कभी मुषि की डगर में  
मैं तुम्हारी याद को घपना बना लूँ !

मैं अविचन-सी किमार पर गधी हूँ  
घोर उफनाता जसधि ससवारता है  
साथ देने को सह्र बेरस बडा है  
घोर तट का घेय भी हारता है

तुम मिसोगे हो कभी स्नेहिम सह्र में  
मैं विरस भेम्पार का घपना बना लूँ !  
तुम मिटा दोगे कभी मन का पुष्प का  
मैं तुम्हारी ज्यानि को घपना बना लूँ !

रात मम्बो है मगर सारों भरी है  
 हर दिया का दीप पलकों न जलामा  
 मोस छापी है मगर आशा बड़ी है  
 बिदगी न मोत पर पहरा लगाया  
 तुम मिसोग ही कभी बिछले पहर न  
 मैं सिसकती माँग दाबनम से सजा लूँ ।  
 तुम मिलाग ही कभी सूँघि की डगर मे  
 मैं तुम्हारी याद को छपना बना लूँ ।  
 तुम मिटा दाग कभी मन की घुन को  
 मैं तुम्हारी उजोनि का छपना बना लूँ ।

जन्म-स्थान—सयाऊ ।  
 जन्म तिथि—जून १९१९ ।  
 शिक्षा—एम० ए० (अंग्रेजी  
 तथा संस्कृत-साहित्य के  
 मगनऊ-विश्वविद्यालय से) ।  
 प्रकाशित रचनाएँ—‘कौटिल्यो  
 वा नाथ (मार्च १९३६) रेडि

## स्वल्पकुमारी बघशी



यम के घर (१९९१) दोनों  
 बहानी-संघ । ‘मगनऊ का पत्नी  
 (१९९१ में प्रकाशित कविता  
 संग्रह) । शिरोव—‘नारी विद्रोह  
 निवेदन इन्टर कानिज मगनऊ  
 की प्रकाशनाचार्या । रचनाएँ  
 बना—राज भवन टेलेफोन  
 एक्सचेंज रोड मगनऊ ।



रूप एक मीनार है !

केल यह घने-घने  
इत में सने-सने  
कुसुम, लगे धनमन  
यह नही मृदु रात है  
रिमझिमी वरसात है

यह सख जंजीर कामी रूप हम मीनार है !

ममम यह डरे-डरे  
धधधधमे भरे भरे  
मस्त-स परे-परे  
मम ममम यह जाम है  
या नलीली घाम है

ममम उनके है मगसे, देह कारामार है !

फिर मुरा डसे-डसे  
धग हर जसे-जसे  
हम रहे धसे धसे  
हम कहन जाय कभी  
हम धसक जाय कभी,

धिम्यगी ऐसी गुफा है भूस जिसका द्वार है !

मरत हू पिये पिये  
एक पस जिय जिये

रंग-सा निय सिये  
 सह ससो मिर-मिर  
 समझ रही महर-महर  
 खिलना का सूखरा तट खतना क पार है ।

उड़ ससो मही-मही  
 एक पल रवा नहा  
 मंजिलें खुला रही  
 दूर बितना राह है  
 मान क्या पगवाह है  
 क्यों मनुज मन्दी, खुसा जब विदय का विम्वार है ।  
 रूप एक मोनार है ।

जन्म - स्वाम - धम्मात्ता  
 छावनी । जन्म-तिथि—३  
 जनवरी १८३८ । शिक्षा—  
 एम० ए० (संस्कृत) सन् १८९९  
 में पंजाब यूनिवर्सिटी से ।  
 साहित्यरत्न (१८५६) । दिल्ली  
 विश्वविद्यालय में 'जर्मन'



## समुक्ता

दिल्लोमा' कोर्स का अध्ययन ॥  
 पी एच० डी० की सम्मीक्षा ॥  
 विनोद-विद्यार्थी से अधिक पढ़ने का  
 व्यसन । कुछ कविताएँ 'सरिता'  
 में प्रकाशित हुई हैं । वर्तमान  
 पता—१०६ सी बकिंग मस्त  
 होस्टल कर्जन रोड नई  
 दिल्ली ।

हिन्दी-कविधियों के प्रेम-गीत

घब तो नाब सहर में घाई ।

क्या देखू बिस्तार असधि का

क्या मापू उसकी गहराई ?

घब ना नाब सहर में घाई ।

रह रहकर मन झुलाना है

परिचित तट छूना जाना है

एक अपरिचित का घाम-प्रण

जीवन-गान हुमा जाता है

दक घीमे-से स्वर ने युग की

सहित गब मुष-मुष बिमराई ।

घब तो नाब सहर में घाई ।

मैं जस को घबगाह न जानू

बैसी तेरी राह न जानू

मैं बर्षा - घातप का मारी

कहाँ मिलेगी छाई न जानू ?

जाने किस तट वह बंगी-बट,

तूने बंसी जहाँ बजाई ।

घब तो नाब सहर में घाई ।

समूह सभी सहार पीछे  
उबियारे धैर्यधियारे पीछे  
इसीलिए हैं सबसे आगे  
दो पग चलू तुम्हारे पीछे  
फिर उस जल से पाँव पतारू

जो मैं सोचन में भर साईं ।  
धन का नाव सहर में धाई ।

जन्म स्थान—मुझियाना  
(पंजाब) । जन्म तिथि—१८  
अप्रैल सन् १९११ । शिक्षा—  
हिन्दी प्रभाकर इन्स्टीट्यूट ।  
विशेष—हिन्दी के विद्यार्थी का  
स्थापक, कहानीकार और  
नाटककार श्री पद्मीनाथ तर्मा  
को धन्यवर्धी । गद्य में गहरी कविता  
सन् १९३३ में लिखी जा चुन  
दिना 'चौ' के विद्युत् घब  
में प्रकाशित हुई । तदनन्तर

### सत्यवती तर्मा

घाणसी रचनाएँ सिद्धमित्र  
'विद्यालय भाषण' गद्यकी  
तथा नया तर्मा का हिंदी पत्र  
परिभाषा में समझाने प्रकाशित  
हुए । कविता-संग्रह 'अपराध गुप्त' का  
नाम सन् १९४२ में प्रकाशित  
हुआ । कहानियाँ 'दुर्ग' पत्र  
में पद्मीनाथ तर्मा के कहानी-  
संग्रह 'विद्यालय भाषण' में प्रकाशित  
हैं । वर्तमान पता—६ श्री साहू  
टाउन पटियाला (पंजाब) ।



प्यास बढ़ती क्यों हृदय की !

प्राज्ञ क्यों नभ खेस रचता ?

वेदमा का से निमन्त्रण वे उठीं पीसी घटाएँ  
रश्मि-कणों के आवरण में धरधरातीं सब दिखाएँ  
विश्व-वीणा के स्वरों में कौन भरब-राग भरता ?

प्राज्ञ क्यों नभ खेस रचता ?

भावनाओं के सपन-से घिर चले फिर ध्याम बादल  
मधुर स्मृति-सी कौंध जाती दामिनी की रेस बचस  
भय वसित इस विरस ठर मे महु क्यों सहसा बरसता ?

प्राज्ञ क्यों नभ खेस रचता ?

स्नेह की दो बूँद पाकर, प्यास बढ़ती क्यों हृदय की ?  
ज्वलित होती क्यों भिखारें वात बहती अब मलय की ,  
भूमने जब धन बढ़ी मैं धोट से क्यों अन्ध हँसता ?

प्राज्ञ क्यों नभ खेस रचता ?

बारबार उर बादलों का क्यों हँसे मदमत्त तारे ?  
बाह को उर में निय जब भटकते जुगनू बिचारे  
मृदुल उर की साधना का कौन यह उपहास करता ?

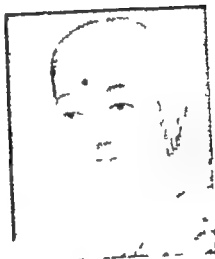
प्राज्ञ क्यों नभ खेस रचता ?

क्षुद्रतम ये खेस रचकर प्राज्ञ नभ किसको रिमाए ?  
मुप्त हैं सारे व्यपारें क्यों बधा उमको जगाए ?  
भाव क्या यह नभ सकेगा मिश्रु ब उर की बिबसता ?

प्राज्ञ क्यों नभ खेस रचता ?

जन्म स्थान—दिल्ली ।  
 जन्म तिथि—७ जून १८९४ ।  
 शिक्षा—हिन्दी प्रचार एम०  
 ए० ( हिन्दी ), दिल्ली  
 विश्वविद्यालय । भावकल  
 दिल्ली के केन्द्रीय विभाग

## सन्तोष अप्रवास



संस्कार में भी ए० की छाया ।  
 विशेष—कविता के अनिच्छित  
 कहानी में निरुपेक्ष और  
 भावोपना आदि विषयों में भी  
 रसिक रसि रगती हैं । स्थायी  
 बना—२४६४ कूटीवासान  
 बाजार सीडाराम ज्वेलरी ६ ।



हास्य भी तो रुठ जाता !

खुलते हैं प्राण प्रियतम  
है धरा के श्वास में तम  
पर न जान क्यों विषम है—

घाज मुझमें दीप का मन  
हम अंधेर-से जगत् में अह भी तो टूट जाता !  
हास्य भी तो रुठ जाता !

दे दिया मुझमें नियति का  
बलि बिलन का महारा  
प्रथम इति म म जाने  
भर दिया क्या गरल प्यारा

मारु के शृङ्गार मयह हरस भी तो छू जाता !  
हास्य भी तो रुठ जाता !

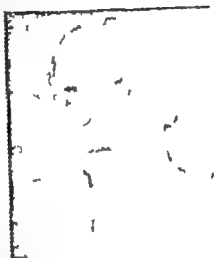
मैं दुगी थी तप तवर  
व्यथित थी मैं हास्य खोकर  
क्यों लगा तुमने मुझे दी—  
घाज फिर यों प्राण ठोकर

हृदयों के भूतने का अर्थ भी तो रुठ जाता !  
हास्य भी तो रुठ जाता !

बन्ध-स्थान—मई निम्नी ।  
 जन्म तिथि— १५ दिसम्बर  
 १८१४ । शिक्षा—प्रभाकर य  
 नाथिख-रत्न । प्रकाशित कवि  
 ताम् — 'रत्न-रत्न' (कविता  
 मण्ड) 'रूप धीर छाया'  
 ( जगन्नाथ ) सन् १८५६ में  
 प्रकाशित । विधेय—महागीत

## सन्तोष साक्षुपुरी

कलावी धीर शकुट रत्नाण  
 'धैरिक सुभाषार' 'नवभारत  
 गायन' 'विश्व-धर्म' 'धर्मयुग  
 धीर 'अहिम्न' धार्मिक वन-रत्न  
 कथा न प्रकाशित होनी पत्नी  
 है । रत्नायी बत्ता—६ ग । २३  
 रत्न लक्ष्मणदेव उगिया  
 कवीनराम नई टिप्पणी ।



तुमसे मीठी याद तुम्हारी !

मुझको यह मासूम नहीं था—

मिसन-यव भी सा सकता है घाँसू को जल-थार ज़िन्दगी !

इतना मुझे दसाया तूने, बीता बचपन भरी जवानी  
बद हो गए सरगम के स्वर, सूख गया घाँसों का पानी

मुझे कभी मासूम नहीं था—

मधुरिम प्यार कभी सा सकता चाहों भरी कगार ज़िन्दगी !

नींद घुरा ली क्यों पलकों को भटक रहे आवाज़ सपने  
मैं एकाकी तूम निर्मोही, कैसे बचन तोड़ते अपने

मुझको यह मासूम नहीं था—

सूझनों में बिक सकता है जिस्ती की मासूम ज़िन्दगी !

सुल की मेज़ बन गई धूलो सोंघ रही है दुल की क्यारी  
सच मानो या मत तूम मानो तुमसे मीठी याद तुम्हारी

मुझको यह मासूम नहीं था—

भूम जवानी भा बन सकता भीषण पारावार ज़िन्दगी !  
मिसन-यव भी सा सकता है घाँसू को जल-थार ज़िन्दगी !

हिन्दी-कवियों के प्र

जन्म-स्थान — धौनपुर ।  
 जन्म-तिथि — २ जुलाई सन्  
 १८४० । शिक्षा-प्रारम्भ से ही  
 दिल्ली-निवासीनी रही और  
 दिल्ली-विश्वविद्यालय से ही  
 सन् १८६१ में एम० ए० किया ।  
 विधेय—साहित्य में प्रारम्भ से

सन्तोष सकसेना



ही रचि रही है और छात्रकल  
 के पुस्तकालयों का हिन्दी  
 प्रचार करने में व्यस्त है ।  
 कविता के प्रतिरिक्त निबन्ध  
 लेखन में भी रचि है । वर्तमान  
 वयस— १०३ सदाशिव धर्म  
 मंत्री (उत्तर प्रदेश) ।

हिन्दी-भाषाविशेषों के प्रवर्धन

अभी से मन धराराया !

सौम हृद धरती पर धिर धाया अधियारा  
अभी यामिनी दोष अभी से मन धराराया !

छोटा से मुमना गई बन्दा से किरनें  
मन बुझ गया दिलो से भी द्रिप्त गई रोसनी  
धाया से उल्लास गया—सूना घर धागिन  
एक उगासी मन की धरे जग का बन-कन  
दूर कही छोए नयनों का बिज बनाता  
बादल का दस सिमट जितिज के बासे कोने  
धामू से बिल्वरे तारों की जसनी छाया  
जसी रही धागा नगरी की स्वणिम बाया  
सह युगों तक प्राण बिजल उपाद पीर की  
अभी प्रनोया धप—मूक उर क्यों भर धाया ?  
अभी यामिनी दोष अभी से मन धराराया !

उड़नी जाड़ी रग की बनरख वहीं न मिलता  
निमल मुमना व दस मोरम नहीं बिग्नरता  
बिछुड़ गए जो उनको मुधि में छोने बासे  
हुम्मी हृदय को छल जाते मुमनाम बासे  
बेरिन पीड़ा के पहर में बन्ने मपने  
रात्र यबलते प्राणों पर धामू की मोहरें

हिन्दी रचयितियों के प्रेम-

पूजा के फूलों पर चट्टानों का गिरना  
 घाने वाले तुमको पनबा मूस उमहना  
 हूँ क्षण पागल हूँ पृथ्वी मेरे स्पन्दन  
 अभी बिगड़ती घण अमा गायी क्या जाया ?  
 अभी यामिनी घण घमा म मन चकराया ।

जन्म स्वाम— दिल्ली ।  
 २४ अप्रैल सन् १९३२ ।  
 शिक्षा—प्रायः विश्व-विद्यालय  
 से एम० ए० (हिन्दी) करने के  
 उपरान्त उसी विश्वविद्यालय



सरला गुप्ता

स हिन्दी-साहित्य में डाक्टरेट ।  
 विशेष — प्राध्यापिका हिन्दी  
 विभाग रघुनाथ गर्ल कॉलेज  
 मेरठ । स्थायी पता—प्रहलाद  
 बाटिका ५१९ सिविल साइंस  
 मेरठ ।

हिन्दी-व्यक्तिविषयों के प्रेम-जीव

जीवन भरी गुञ्जार हो ।

मैं दूँ सफर क्या करूँ बस तुम मुझे भ्रमर । -  
जीवन भरी गुञ्जार हो ।

दा दीप-जैसी भावना जिसमें घमण मैं हूँ मग  
पावन तुम्हारा प्यार मैं फिर धारम विस्मय हूँ मग  
नित पास रहकर भी मुझे तुम दूर का उपहार हो  
जीवन भरी गुञ्जार हो ।

बच द ओ प्राण का वह पीर तो मिनती नहीं है  
पीर तो मुसल्ल सज वह गगिला मिनती नहीं है  
ओ प्राण का स्वर गा सब उमर गवा भ्रमर हो -  
जीवन भरी गुञ्जार हो ।

भावना सहर मिनत की दीपमा है प्राण जलन  
काहना की भावना में प्यार का समार नित्य  
मिट रहा है दीप उमरा उगति का समार हो  
ओ न भग गुञ्जार हो ।

दान हो तो प्रेम का पावन हिम कुछ वह मर्ग मैं  
बन्धन निज राह की मग पीर का भी महमम मैं  
कुछ नहीं का दीप में धाम भग हो हो नो -  
जीवन भरी गुञ्जार हो ।





जन्म स्थान—गोरे गाँव  
(नरसिंहपुर) मध्य प्रदेश।  
जन्म तिथि—सन् १९२५।  
शिक्षा—मैट्रिक डिप० टी०  
विद्यार्थ। बिशेष—आय बीकन  
में हो इन्हें मर्ब थी स्व० रंगा  
बिष्णु पाण्डेय स्व० माताजीन  
धुत्य माधनसास कतुबेरी  
राजेन्द्रर दुकान 'अबल धादि  
उत्कृष्टोक्ति के साहित्य-समिपों

### सरला तिवारी

वा निर्वेदा मिलता रहा है।  
बस घाव मीरा महादेवी पीर  
मूर की पीर से प्रभावित हैं।  
नामगूर के घावका बाछी केन्द्र  
मे इनके पीर पीर कविताएँ  
प्रचारित होनी रखनी हैं।  
य नरक घाव हिनकारिणी  
कहा। उक्तनर माध्यमिक शाळा  
में अध्यापन-कार्य करती हैं।  
रंगधी कला—१९२ घावरनाम  
अबलपुर।

हिंदी ज. ब. विज्ञान के प्रम-गीत

में उनकी ही होती !

जिनके घरों में नत यह जीवन  
में उनकी ही होती ।

जिनकी प्रीति पसी पसों में घाँपा म छवि धनुषम  
जिनकी एक किरण प्रति उज्ज्वल मिटा रही जीवन-मम  
जिनको अपनी उर को बगल  
में उनकी ही होती ।

रोम रोम में अहराता है जिनका प्यार सजावा  
जिनके मुचि-कटा युग-युग म भर, मीना घाँवन गोना  
जिनके सपने जीवन का धन  
में उनकी ही होती ।

नह मरी यस्मात् मिमन की उमड़ घुमन रह जाती  
उमन भोग भीम में प्रमिन्नग फिर भी भोग न पाना  
मेघों में जिनकी प्रति चितवन  
में उनकी ही होती ।

जन्म-स्थान—घोनिपुर ३  
 जन्म-तिथि—१२ मार्च १९२६  
 शिक्षा—बी० ए बी एड०  
 (१९४२) । विधेय—१९१७  
 वय की अवस्था में इनकी पहली  
 कविता प्रकटित हुई थी ।  
 वेदना की याविका महादेवी वर्मा  
 से घाप विशेष प्रभावित हैं ।  
 इनकी सविनोद रचनाएँ भी  
 माधे-जीवन की पीड़ा से प्रेरित-



## सरला भारती

प्राण हैं । साहित्यिक जीवन में  
 आपको श्रीमती बिद्यावती  
 'नोक्स' से विजय प्रमोदइन  
 मिला है । आशक्त गोरखपुर में  
 अध्ययन रत हैं और बिदय  
 विद्यालय की विद्वेन बननेकी  
 को मजिणी है । स्वाधी बता—  
 भी राम कृष्णबन्धु मैथुन  
 बंर घाँक इटिया बंर राह  
 गोरखपुर ।

श्रीमती वर्मा विद्वेन के प्रप-गीत

मुझे रीत जग की, निभाना न आया !

मुझे रीत जग की निभाना न आया !

स्वयं को जगत् से मिथाना न आया !

निठुरता ने बितन मिटाए है जीवन

कहीं मिट गए तन बही लुट गए मन

मुझे पर न भाई निठुरता जगत् की

स्वयं मिट गई पर मिथाना न आया !

मुझे रीत जग की निभाना न आया

मुझे छू न पाए जगत् के कपट छल

सदा बेदनामय इमाम मेरे पल

जगत् जो भी समझे, मिटे साथ जीवन

मुझे बात मौखी छिपाना न आया !

मुझे रीत जग की निभाना न आया !

छलों से भरे इस जगत् में भी पल भर

कपट धनि में धन तनब नित्य जलकर

मिसी छोट पग-जग सदा, बिन्दु मुन्हा

कभी भी तो अपना बगाना न आया !

मुझे रीत जग की, निभाना न आया !

हिन्दी प्रवर्धियों के प्रेम-गीत

मगर दड़ परण तो जगत् क्या करेगा  
वहाँ तक असत् सत्य से ही सबका  
सहृदयी सभी कुछ डगर में तुम्हारी  
मगर बात देकर भुमाना न पाया ।  
मुझे रीत जग की निमाना न पाया ।

जन्म स्वाम—पूँ मादाह ।

जन्म-तिथि—२ मार्च १९२६ ।

शिक्षा—महानगर-विश्वविद्यालय

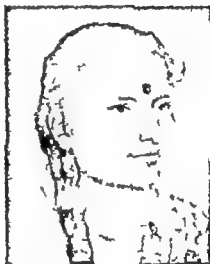
स बी० ए० प्रवास-मपीस

समिति से संपीस तथा मायन

की परीक्षा दे रखी है ।

विशेष—घाकास बाणो मक

## सरला घोषास्तव



मक के समीप और माटव  
विभाग में सन् १९४६ में भाग  
लेती रही है । सामान्य जनता  
गर्भ कालिन्, मखनक म  
प्रख्यापिका है । स्वामी पता—  
हारा—धी धी एम भट्टा  
शाय मबाह कोटी न मायन  
नगरी मयनक ।

बहु न मिला !

जीवन भर उमरा दूँड यकी  
एक टीस मिसी पर बहु न मिला !

धामू बरगाए इयर उधर  
बुछ दान्ति मिसी पर बहु न मिला !

गेने राते में हार यकी घाल भी मास दगाय हुई  
बरमात यकी फिर बिगड़-अगो रातों की मोद खराब हुई  
नन रघुपति प्रेम की छाया में देने को टीस प्रेमर द दो  
जब टीस मिगना बाहा नो

दमगान दिया पर हम न मिला !  
जीवन भर उमरा दूँड यकी  
एक टीस मिसी पर बहु न मिला !

हमन भी क्या क्या सोचा था मन म बस्तिन एक महल बना  
पर घोषा-पानी से उमरा तुम बहा गए जो बुछ था बना

नन रात बनाए स्वप्न महल  
जब मिसमा बेवस मिसन की आगा म  
चाहा तुमसे तो  
पद चिह्न मिस पर पद न मिला  
धामू बरगाए इयर उधर  
बुछ दान्ति मिसी, पर बहु न मिला !

हिन्दी कवित्रियों के प्रेम-गान

हर प्यार यहाँ बदनाम रहा, गुमराह यहाँ हर प्रीति रही  
सबस्य सुटाकर भर जाना उस इस जग की यह रीति रही  
क्या क्षीण तरीक़ा सिगार करे क्या जाए प्रियतम की मगरी

जब प्यार के बदले हर पग पर  
नराश्य मिला, पर वह न मिला ।

जीवन भर उसको ढूँढ़ बकी  
एक टीस मिली पर वह न मिला ।

घाँसू बरसाए हथर-उधर  
कुछ क्षान्ति मिली पर वह न मिला ।



जन्म-स्थान—मैरठ (उत्तर  
 प्रदेश)। जन्म तिथि—१९३१।  
 शिक्षा—एम ए० बी टी०।  
 विशेष—भाषावेत्ति भी जे० एम्०  
 चौधरी टी० ए बी कासिम  
 देहरादून में रसायन-शास्त्र के  
 प्रोफेसर हैं और भाषा स्वयं  
 कामरेष्ठ भाषा जीसस एण्ड मेरी



सरस्वती चौधरी

बहुत देहरादून में अध्यापिका  
 हैं। तीन बड़े ही भित्ति हैं।  
 कानूनी धोर सेनों की धोर  
 धारिक मुकाब हैं। कुछ बरि  
 ताते 'मलिका' 'धर्मधुन' धोर  
 'नवभारत टाइम्स' में प्रकाशित  
 हैं हैं। रसायन पता—१८  
 भास्वत नर्वे राड देहरादून।

हिन्दी-कार्यविधियों के प्रम-जीत

जिन्दगी फिर साथ लाओ ।

कौन जाने तुम स्वयं ही राह के उस पार जाओ ।

जिन्दगी से दूर हैं पर चरण घुमते जा रहे हैं  
मौन धाँसों रो रही पर गीत बमते जा रहे हैं  
है वही मजिस्त पुरानी राह तो बदसी हुई है  
क्या हुआ जो पथ भ्रमना हर नजर समझी हुई है  
कौन जाने किस अगह तुम जिन्दगी फिर साथ लाओ ।  
कौन जाने तुम स्वयं ही राह के उस पार जाओ ।

मे शिथिल विदवास इस पथ आज फिर से बस रही है  
मैं बुझी-सी ध्वनि हुई है रात बनकर गस रही है  
पूछते निर्वाण के क्यों दीप बुझकर जल रहा है—  
आज ये क्यों अथु उनके चरण धोने धल रहा है  
कौन जाने साँझ को तुम, प्रीति का इक गीत गाओ ।  
कौन जाने तुम स्वयं ही राह के उस पार जाओ ।

प्रिय तुम्हारे गीत थे जो बन गए उपहाम भरा  
प्राण, मेरी कल्पना ही मे गई मधुभास मरा  
मिल रहा आह्वान मुझको अब धपूरे गान लेकर—  
पग निरंतर बढ रहे पर मौत की मुमहान दब  
कौन जाने अन्त में तुम अथु की दो बूँद साओ ।  
कौन जाने तुम स्वयं ही राह के उस पार जाओ ।

जन्म-स्थान—  
 का एक गाँव। जन्म-तिथि—सन्  
 १८२३। विधवा—एम्० ए०  
 (हिन्दी) करके १८२१ में खुदा  
 गुरु का निज मेरठ में व्यवसाय  
 कार्य। १८२४ में घाघरे के  
 गाँव गुरु का निज की  
 व्यवसाय। घाघरे मपुरा के  
 किशोरीरमण गुरु का निज की  
 प्रधानाचार्या। जयपुर तथा  
 जयपुर के आकाश वाली-मेरठ



### सरोजिनी कुलकर्णी

पर भाषाविदित स्वर वेला तथा  
 रमणीय कार्यक्रमों में भाग  
 लिया। शैक्षिक ए वीत भी  
 प्रचारित होते रहते हैं। वक्तों के  
 लिए कुछ नोटियाँ प्रभावित  
 और भीत भी लिखे हैं। 'नायना'  
 नाम से एक कविता-संकलन भी  
 प्रकाश में आ रहा है। स्वाधी  
 यता—विद्यार्थी रमण गुरु  
 विद्यार्थी का निज मपुरा।  
 विद्यार्थी-कार्यविधियों के प्रकाश

अपने द्वार मुझे आने दो ।

मेरे द्वार न आओ तो प्रिय अपने द्वार मुझे आने दो ।

कभी न मुझको 'प्रेमसि' कहकर  
तुमने अपने पास बुसाया  
पाती भी निष्ठुर कव मेजी  
नित्य प्रतीक्षा में तरसाया

मेरी याद न तुमको आई अपनी याद मुझे आने दो ।

मेरे द्वार न आओ तो प्रिय अपने द्वार मुझे आने दो ।

जब-जब याद तुम्हारी आई  
नना बरस अस वदसी  
हँसी मुबह् बी वदस गई है  
स्वर्ण सुनाती सगंध्या वदसी

मेरी पीढा मिली न तुमको अपनी पीर मुझे पान दो ।

मेरे द्वार न आओ तो प्रिय अपने द्वार मुझे आने दो ।

तुमने कहा, 'न आना मुझ तक'  
मुमक़्त प्राण विकस थ कितने  
हुआ मुझे आभास उसी क्षण  
तुम प्राणों को प्रिय थे कितने,

तुम मैंनों में रम न आकर मुझे जरा-सा रम जान दो ।

मेरे द्वार न आओ तो प्रिय अपने द्वार मुझे आने दो ।

जम्म-स्वाम— मिर्जापुर  
(उत्तर प्रदेश)। जम्म-तिबि—  
२५ दिसम्बर १९२६। लिमा—  
प्रयाग महिला विद्यापीठ से  
मैट्रिक करने के उत्तरागत  
विद्यार्थि दिया। बिसेय—  
प्रयाग महिला विद्यापीठ के  
छात्रावास में रहने के कारण  
धीमती महादेवी वर्मा की  
छत्रछाया में काव्य की  
घार बिघव रबि हो गई।



### सावित्री ज्ञानसवाल

विवाह के बाद परिस्थितिबध  
बुद्ध बप तक इन शेष ग  
फलन रही। हमकी रचनाएँ  
प्रायः गुप्त में प्रकाशित हुया  
करती थीं। आशकत 'नैतिक'  
तथा 'युवक' में प्रकाशित होती  
रहती हैं। स्वाधी पता—आरा  
भी गरीबमवाग ज्ञानसवाल  
बशील नारायण बन्धु  
स्नेहम रोड इत्यादि। (उत्तर  
प्रदेश)।

शिवी-बचपित्री के प्रेम गीत

मुझे मिले थे प्रियतम रात !

कितना सुन्दर आज प्रभात, मुझे मिले थे प्रियतम रात !

पात ही प्रिय का सन्देश

आया फिर आनन्द अशेष

पूजन के हित बली बाल से

पुलक रहे थे सति, मम गान !

कितना सुन्दर आज प्रभात !

जब मैं खुशी चरण की धूल

हैंसे मुसुम छाया परमूल

चँदर हुआती मन्द पवन थी

भूम रहे थे सब तरु-पात !

मुझे मिले थे प्रियतम रात !

चरणोदक पाने की सत्वर

सहरे सङ्गे सगी परम्पर

ज्वार सगा उठने सागर मे

सति प्रिय हैं ऐसे अभिजात !

कितना सुन्दर आज प्रभात !

गोले चरण समीर सुगन्धी

धारिद बना उगे बरसाती

बुझ जाना सब प्यास घरा को

यों मेर प्रिय। सबके साग !  
मुझे मिले थे प्रियतम रात

उस दिन हम बैठे थे सट पर  
ब्रत हूट गया तब पनघट पर

मनह-मुखा से धाप्सावित हो

बीता कितना समय न ज्ञान !

फिरना मंदर आज प्रभात

मुझे मिले थे प्रियतम रात !

जगन्-रूपान—बीकानेर  
 (राजस्थान) । जगन्-तियि—  
 गन १६३३ । शिक्षा—एम् ० एम्  
 (हिन्दी) । विनोद—सिखना  
 घाटनी तथा नबी कथा से ही  
 शुरू कर दिया था । जब नबी  
 कथा में प्राइ तो इनकी रचनाएँ  
 पत्र-पत्रिकाओं में छपनी प्रारम्भ  
 हो गई थी । पश्चात् पत्रिकाओं  
 सोनकी नाम से लिखनी थी ।  
 प्रकाशित रचनाएँ— अमिट

## सावित्री डागा



निबन्ध (कविता-संग्रह) और  
 मुक्तक (मुक्तक संग्रह) ।  
 प्रकाशित कृतियाँ—'कविता  
 की सीढ़ी' (कहानी-संग्रह) तथा  
 'दो तार एक झंकार' (कविता  
 संग्रह) । पत्रिकाओं में पत्र-  
 पत्रिका कविता कालावेला  
 (राजस्थान) में हिन्दी की प्राध्या-  
 पिका है । रचनाएँ पत्रिका—भोगी  
 और भोग्य ।

हिन्दी-वर्तमान के प्रथम-मोक्ष



तुम आशा बनकर आते हो !

मरे इग मूने जीवन में तुम आशा बनकर आते हो !

मा आती जब मैरास्य निशा  
छा जाता है तम घास-घास  
जीवन का पथ छिप-छिप जाता  
हो जाता मग मन उदास

एसे म तुम राका-दागि-स घा मन्द-मग्न मुसकाते हो !  
मरे हम मूने जीवन म तुम आशा बनकर आते हो !

जावन के इस मूने नम में  
घनघार घटा छा जाती है  
गज-धज कर नूतन साज सजा  
जय अमा निशा मा जाती है

एसे म तुम ग्यदान बन जगमग जग-ज्योति जगाते हो !  
मरे इग मूने जीवन में तुम आशा बनकर आते हो !

आयन के मोरव सपनों का  
दुग दिगिग धूँर कर जाता है  
दावा की जलती सपनों मे  
जय मग्न जगवन जम जाता है

एसे म तुम शत्रुराज बने कोयस-सी पूब सुनाते हो !  
मरे हम मूने जीवन म तुम आशा बनकर आते हो !

घातुर जग के सब सान धगिण  
 नश्वरता का नष्टन होना  
 यह देख चकित हो मेरा मन  
 जग भी नाशानी पर राता

तब तुम्हीं प्रेरणा राग छेड़ नवजीवन-गीत सुनाते हो !  
 मेरे इस सूते जीवन में तम आशा बनकर आते हो !

जन्म-स्थान—जवाहरनगर,  
मेरठ छावनी । जन्म तिथि—  
१६ नवम्बर सन् १९१६ ।  
शिक्षा—हिन्दी प्रभाकर माहिरम  
रत्न । विदेश—सन् १९४२ के  
आन्दोलन में जेल गई । विदेश  
काल से बीर रस हास्य रस  
धीर शूमार रस की कविताएँ  
लिखने में अधिक सफलता  
मिली । रचनाएँ 'साप्ताहिक'



### सावित्री रस्तोगी

हिन्दुस्तान 'चरित्रा' 'वराण  
सिपा 'किरण' आदि पत्र-पत्रिका  
वाला में सम्मान प्रकाशित  
होती रही है । आकाशवाणी  
में कई हिन्दी वेब पर भी  
रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं ।  
वर्तमान पता—द्वारा धी विद्या  
नगर रस्तोगी जवाहरनगर  
मेरठ छावनी ।

हिन्दी-कवयित्रियों का प्रेम-दी

तुम न जाओ !

तुम न जाओ प्यार की मनुहार की यात्री पुराण  
प्रीति का बादल बरसेगा स रहा है ।

कौन कहता है कि घनवन को सजा हलनो बड़ा है  
मान का पर्दा उठाए मामिनी कब से लड़ी है  
तुम न जाओ रेशमी रूँघट बिना कर से उठाए  
नन का काजल बलया स रहा है ।

तुम न जाओ प्यार की मनुहार की यात्री पुराण  
प्रीति का बादल बरसेगा स रहा है ।

मौन मुस्तखि हो उठा भव गगिनी व छंद पूर  
कार भीगी घाँसुओं से मोचनों क बन्ध टूटे  
तुम न जाओ मधमरी गागर पन्क पनघट झुगा  
भोगता घाँसल बरसेगा स रहा है ।

तुम न जाओ प्यार की मनुहार की यात्री पुराण  
प्रीति का बादल बरसेगा स रहा है ।

गा गया उन्माद हलबल स भरी मुधि की गली है ।  
धूमन प्रिय व शरण भव साज की डोली चला है  
तुम न जाओ चाह की मृतप्राय-मी अर्घी सजा  
नेह का द्रुम-जस बलया स रहा है ।

तुम न जाओ प्यार की मनुहार की यात्री पुराण  
प्रीति का बादल बरसेगा स रहा है ।

जन्म तिथि—१३ दिसम्बर  
१९११ । निष्ठा—इन्दूर  
माहिण्ट माहिण्ट विद्यारण्य  
(हिन्दी साहित्य-सम्मेलन) ।  
शिरोधार्य—एक मध्यमवर्गीय

सावित्री शुक्ल



बाल्यकृष्ण विध्वंसिणार म  
जन्म । रमायी कला—पुस्तक  
मदन देवगुरुपुत्रा इटारसी  
(मध्य प्रदेश) ।

हिन्दी-अवधिनिर्देशों के प्रम-नी

मीत तुम्हारी मुधि घाती है ।

दूर चले जाते हो मुझको मीत तुम्हारी मुधि घाती है ।

मुझको तुम पर थका ऐसी

जमे सागर सहराता हो

पूनम में जमे नीला नभ

धमिल विभा मे भर जाता हो

घातों में भीम होने पर केवल मुधि हो उर भाती है ।

दूर चले जाते हो मुझको मीत तुम्हारी मुधि घाती है ।

परिभाषा में हीन भीत रु,

मरा मनह मदा जगता है

पूरा चंद्रमा मदा समस्ता,

नहीं ज्वार भाग बनता है

मरे मन की मात वहीं पर बोलिल धाम-जने गाती है ।

दूर चले जाते हो मुझको मीत तुम्हारी मुधि घाती है ।

कौन किसी को मुझ दे जाता

मुग्ध-मुक्त तो मन में रहता है

चाहूँ हंस ला या सखि मे मो

हाम्य-गम्य संग-संग पसते हैं

पभी विहंसती कभी सिहरनी जसनी जीवन को बाती है ।

दूर चले जाते हो, मुझको मीत तुम्हारी मुधि घाती है ।

अश्व-स्वाम—कह पावाव  
 ( उमर प्रदण ) । अश्व  
 तिय—मन् १८१ । गिहा—  
 मम० १० (हिन्दी) । धिनेय—  
 हिन्दी व पिग्यात गाहियकार  
 जी दम्भुदयास मन्मना की  
 मन्मनी धीर राजस्वाम कउदसल  
 गन्धकार स्व धी मन्मतिराय  
 मन्मनाय की पत्नी । राजस्थान  
 बिहवविद्यालय म राज् की समस्त  
 छात्राओं में एम० ए म प्रथम



## सीता भटनागर

स्वान प्राप्त करने के कारण  
 अश्वपदक प्राप्त किया। राजास  
 बीकानेर के मन्मनाजी गुहान  
 बामिन् में प्राप्ताविष्ट । दन्ते  
 गन्ध-भीन गीत कविताय धीर  
 गन्ध धीन विभिन्न पत्र गति  
 नामों में प्रकाशित १११ रत्न  
 १ । गन्ध-भीन १११ मन्मना  
 प्रथम में है । रचायी पत्नी—मम  
 युग पत्र बुनार बीकानर ।

गिनी रत्नविद्या व प्रम-भीन

## घाया कौन रिझने !

मेरे गीतों की पीड़ा का घाया कौन सुमाने ?

घाज ध्याया उग्मन मच्छा का अधम रहा सवार  
महर-महर क अन्तर में है जाने कितना प्यार ?  
घाज जगो है नयनों के मम्पु म सार्ई पीर—  
बहते धामू की लड़ियों की घाया कौन हँमान ?  
मेरे गीतों की पीड़ा का घाया कौन सुमाने ?

मर जीवन के उपवन में पतझड़ की नीरवता  
ननहार्ई में सिसक रही मेर अन्तर की कविता  
मपनी मुरभित मलय-समीरी साँसा के जादू म—  
कौन उजड़ते उपवन में घाया मधुमास मजान ?  
मेरे गीतों की पीड़ा को घाया कौन सुमाने ?

जब तब पीड़ा है तब तब जीने का माह्र बना है  
ममिसाया प्रबाग की तब नब जय नर निमिर घना है  
कोई घाएगा दम घाया म साँसा का पामा—  
मेरी सुतमातो घाया को घाया कौन रिझने ?  
मेरे गीतों की पीड़ा का घाया कौन सुमाने ?



जन्म-स्थान—रयालकोट  
(पाकिस्तान) । जन्म तिथि—  
२६ घनतुबर १९२६ शिक्षा—  
प्रमाकर साहित्य रत्न एम०  
ए० (पंजाब यूनिवर्सिटी से) ।  
बिनेय—घपनी माता धीमती  
मुगीमा पुरी के साहित्य तथा  
मनीन के प्रति प्रेम के कारण



## सुदर्शन बाहरी

उनका मुकाब भी बचिना की  
घार हुआ । बिबाह से पहले  
आप सुदर्शन पुरी नाम से  
लिखती थीं । आखरम आप  
से धार० ए० बालिक  
मोनीन में प्राध्यापिका ॥ ।  
वर्तमान-पता—सी० धार० ए०  
बालिक मोनीन (पंजाब) ।

हिन्दी-व्यक्तिता के प्रेम-जीन

बेसुष प्रीत-कहानी चलती !

रात रात भर दीप-दिखा-सी मन की यह नादानो जसती !  
नम पर जसता चाँद, धरा पर बेसुष प्रीत-कहानी चलती !

युग-युग स बे पहचान-से,  
किन्तु म बनकर घ्राण अपने  
छवि-सुपमा के रंग विरंग  
जाग रहे पलकों में सपन

रात रात भर विरह मिसन की दुनिया सी-सी रंग बदलती !  
नम पर जसता चाँद धरा पर बेसुष प्रीत-कहानी चलती !

पिय को कैसे दर्खू भाग—  
है मुस-दुख ना ताना-बाना  
भनजानों को इस बस्ती में  
कोन यहाँ जाना-सहजाना

रात रात भर नया रूप धर आन्ति मुझे भनजानी धसती !  
रात रात-भर दीप-दिखा-सी मन की यह नादानो जसती !

भरकर पगसी घास प्राण में  
रस के मधुर गीत मैं गाती  
सूनेपन म खार्डि-खोई  
बाँटों को राहें धपनाती ,

रात-रात भर सुधि-सपनों की, अविरल धाना-जानी चलती !  
नम पर जसता चाँद धरा पर बेसुष प्रीत कहानी चलती !

जन्म-स्थान— कामोकी  
 मण्डो गुजरानवाला (पाकि-  
 स्तान) । जन्म तिथि— सन्  
 १९२६ । शिक्षा—साम्बरी  
 साहित्य रत्न इंग्लिश का  
 स्नातक सम्मेलन । विशेष—  
 सम्बन्ध साहित्य के प्रकाश  
 पद्धि थी हुनारायण शास्त्री  
 के निरन्तर १० वर्ष के साप्ताहिक  
 स साहित्य-सभ में पदावली ।  
 सम्मिका नामक साप्ताहिक



### सुदेश प्रतिमा

पत्रिका की सहायक समिति ।  
 रचनाएँ— 'स्वप्नबधू' नामक  
 साप्ताहिक उपन्यास 'सम्मिका  
 स पाराकाष्टिक रूप में प्रकाशित  
 है । रचना है । 'अनुसूति पुण्यार्ति  
 नामक जीवन-ग्रंथ सभी सम्बन्ध  
 निम्न है । स्थायी बना —कारण  
 'सम्मिका' प्रकाशन में 'आत्मा  
 हरेट रानी श्रीमती राह तर्क  
 दिवसी ।

हिन्दी पत्रकारिता के प्रदग्ग

कौन मन की पीर जाने !

जो न प्रिय की पीर जाने !

तो भसा किमका कहें धपन तथा बिनबो विराम !

जो न प्रिय की पीर जाने !

नयन के निमल मुकुट म

है लिखी मन की कहानी

कल्पनाया के बिरंगे—

फूल-गुल म है मुहानी

बदन पट पर हो लिखित, उसको न पढ़ भी सत्य मान !

जो न प्रिय की पीर जाने !

जा हृदय-सस में प्रतिष्ठित

जो बना सर्वरस धपना

तारिखाओं म बसा रहता—

बना निग एव सपना

हो यही निष्ठुर पराया, भाव यदि हठ जाह ठाने !

कौन मन की पीर जाने !

रट सतन पी-पो जिसे

धनुराग-मुन स्वर से पुकारा,

हा सुपा-बाधित जठिन था—

स्वाति-ग्रत-मकल्य धारा

रुद्र-श्रुती पाठन यति को, हाथ धन धपना न माने ।  
कौन मन की पीर जाने ?

बन अधिप सन और मन का  
निस्प जो सन्ताप दत्ता  
अथु अधय धार के-  
अभिपेक्ष से गुरुदीप्ति लेता  
अथ भसा बस मनाएँ जो न फिर भी नेह माने ।  
कौन मन की पीर जाने ।

जन्म-स्थान—बिजनौर ।

श्रम विधि—फरवरी सन्  
१९३५ । प्रस्ता—सन् १९५५  
में सप्तनऊ-विश्वविद्यालय से  
बी० ए० । इसके दो वर्ष बाद  
प्रायः-विश्वविद्यालय में एम०  
ए० । विशेष—बिजनौर के  
प्रसिद्ध समाज-सेवी श्री रत्न  
नाथ जैन की सुपुत्री । १२ १३  
वर्ष की आयु में ही माहिम्न में

## सुधा जन



रवि । सभी से कविताएँ तथा  
कहानियाँ लिखने लगीं । भिन्न  
धीरमय-श्रोत भी लिखे हैं । बिज  
कना में भी दिग्गज रवि हैं ।  
इसके पति डॉ० इन्द्रमेन जन  
गोष्ठी सेकुण्ट इन्स्टीट्यूट फॉर  
मैट्रिकल लाइसेंस बम्बईगढ़  
में हैं । वर्तमान पता—मकान  
१९ए हाउस १८ भी बम्बईगढ़  
(पंजाब) ।

हिन्दी-कवयित्रियों का प्रेम-शीत

सौसों का यह रथ चसता है !

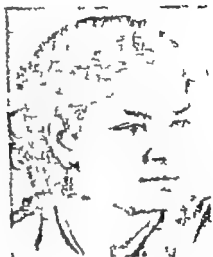
प्राण ! तुम्हारे स्मरण-मात्र से  
गौसा का यह रथ चसता है !  
प्रिय ! तुम स्नह-छाँह बसे हू  
मरा मुष्टि-प्रलीप जलता है !

नयनों में हैं बितन सपन  
पथ-मग्न व मगन कपन  
घोर तुम्हारा निष्ठुरता का  
हिम शण्डित हानर गसता है !  
प्राण ! तुम्हारा स्मरण-मात्र में  
गौसा का यह रथ चसता है !

तमम हू मन-रीणा बन्धित  
तमम हो जीवन है स्पन्दित  
पूष रागा में नह तुम्हारा  
जल बम पलको ल डसता है !  
प्रिय ! तम स्नह छाँह दन हो  
मरा मुष्टि प्रदीप जलता है !

जम्मू स्थान—मेरठ । जम्मू  
 तिथि—१५ मई सन् १९३५ ।  
 शिक्षा—एम्. ए. पी. एच.  
 डी० (पागल बिस्वविद्यालय  
 स) । विशेष—'विभिन्न सुधा  
 में सीता का चरित्र-विषय  
 और तुलसीदास में उसकी चरम

## सुधा बसवीर



परिणति' विषय पर सीता  
 विषय लिखा । जुलाई १९३९  
 में बयबान कानिब बिबनीर  
 में हिन्दी की प्राध्यापिका ।  
 स्थायी पता—मुम्बई शहर  
 मटारमा मीठी रोड केन्ठ ।

हिन्दी-रूपविनियोग क. ईश-मीन



मुसकाने को इन्सान बना ।

मुमने मुरझाया चाँद कहा करता है यों  
'झाँसू पी-पी मुसकाने को इन्मान बना ।'

जब निगा बालिमामय घंघस  
फँसा देती है घरती पर  
जब मूने पय हो जाते हैं  
रो देता है जब यह घंघर

तब राही का भीमा सा स्वर यह कहता है—  
मुनसान डगर में गाने का ही गान बना

मुमने मुरझाया चाँद कहा करता है यों—  
झाँसू पी-पी मुसकाने को इन्मान बना

मैं झाँसू के गारे जल में  
प्रस्तर प्रतिमा को नहसानी  
उमक कानों तक यह मरी  
पागल पुकार बन्द जा पाती ?

दयालय के घंटे मुमने यों कहते हैं—  
मानव को छलन ही को तो पापाग  
मुमने मुरझाया चाँद कहा करता है यों—  
झाँसू पी-पी मुसकाने को इन्मान बना

एक मृत्यु के घपस में  
तो-तो आगारों में जानी  
हिन्दी बचवित्रियों

बिना था यह, या प्रणय था  
 रस भरों अभिप्रेतना थी  
 सुसिमा ही बिनामय होकर  
 निजस्य मिटा चुकी थी  
 नह भर देता न तुमने पुँछ गया थूँकार सारा  
 घुस रहे सब रंग क्या आकार भी रहने न दोग ?  
 प्रचना था एक यह अपिपार भी रहने न दोग ?

जन्म स्थान — जावरम  
 (घमोगढ़), उत्तर प्रदेश । जन्म  
 तिथि — ३ जून सन् १९३३ ।  
 शिक्षा — एम० ए० (हिन्दी)  
 ग्राह्य रत्न सरस्वती ।  
 विषय — साक जीवन-विषयक  
 प्रत्येक निबन्ध सिल है ।  
 'नवमन' में मेंहरी तथा  
 भारतीय मौसम-विज्ञान विन्नी ।  
 आपके समुद्रगानपरक निबन्ध

## हृषीकेश भाटिया

१ । आप नगीर में भी विज्ञान  
 गति रमते हैं । भूमिगत  
 विज्ञानविद्यालय घमोगढ़ में  
 हिन्दी तथा भूतन्त्र-विभाग के  
 प्राध्यापक 'डॉ० कमानचन्द्र  
 भाटिया' की गुरुपिण्डी ।  
 सन्मान पता — प्रबोधनार्थी  
 भारतीय महिला विद्यालय गोपी  
 पार्क, घमोगढ़ ।



घा भी आ ओ मोत !

निपट अजानी पोड़ा भर दो, निप्टुर ! प्राणों में !

तुमने क्रम उमने बि प्रबन कमा से टकरा दो  
कसा तनिक बिहरी बि बुभन घुसों को बिगिरा दो  
अमिट निरासा-सो छाई उठते अम्मानों में !  
निपट अजानी पोड़ा भर दो निप्टुर ! प्राणों में !

व्यथ दासम की दापय रहा व्यबहार अमर का है,  
बात हुई भी भांगन की स्वर किन्तु समर का है  
कहाँ मिल गया गरम सुखा-सो उन पहचाना में !  
निपट अजानी पोड़ा भर दो निप्टुर ! प्राणों में !

घा भी आ ओ मोत बि दुइतर हुआ प्रणय बचन,  
गुमे द्वार पर टिक नयन, दुहराते घाम-नगा,  
स्वय उभर साई ब-गदी मुदु मुसकामों में !  
र दो निप्टुर ! प्राणों में !

जन्म स्वामी — सप्तर्षि  
 (मध्य प्रवेग) । जन्म तिथि—  
 २ मई सन् १९१५ । शिक्षा—  
 जबलपुर के महिला नाममात्र  
 स्कूल में शिक्षा ग्रहण ही कर  
 रही थी कि आपका विवाह हो  
 गया । विधोप-हिन्दी के प्रख्यात

होरावेखी चतुर्वेदी



पत्रकार मेगध श्रीर 'सरस्वती  
 के भूतभूत सन्सार' की हैवी  
 दयाल चतुर्वेदी 'जन्म' की  
 प्रमोदनी । प्रकाशित स्वामी—  
 'मन्त्री' 'नाममात्र' 'मधुर' ।  
 स्वामी पता—'गंगा भी हैवी  
 दयाल चतुर्वेदी' 'जन्म' 'मधुर' ।  
 विवाह मध्य प्रवेग स्वामिनी ।

हिन्दी-व्यक्तिविद्या के प्रेम-वीर

जाने कैसा उनका प्यार ?

नहीं समझ जो पाती हूँ मैं कीसुका अपरम्पार !  
जाने कैसा उनका प्यार ?

बहुते रहते यही सदा थे, प्रपसि ! प्राणाधार  
ममृति व बाण-बाण में तेरा सदा रूप निहार !  
जाने कैसा उनका प्यार ?

निमिर-पुर्ण-सी धार निता म बहुत यही पुकार-  
रूपसि ! तगे जगमग जगमग दिगता छटा अपार !  
जाने कैसा उनका प्यार ?

उपप्लव मरिता म भा जाकर, लगकर निज मनुहार  
बहने मुझमें तुम्हें देगता सहर्षों म राबार !  
जाने कैसा उनका प्यार ?

कहूँ उसे मैं उनका कबल पागम-सा व्यापार  
या धारना हा कहूँ इस मैं फिर ध्यान अपार !  
जाने कैसा उनका प्यार ?

जन्म स्थान—मरुत क  
प्रसिद्ध परिवार ज्ञान गानवान  
में। जन्म तिथि—माग शीर्ष  
वृष्णा २ संवत् १९२९ वि०।  
निधन तिथि—३ फरवरी  
१९४१। विद्वेष—हिन्दी का  
प्रभाव कविनी और कहानी  
लिखी। प्रकाशित रचनाएँ—  
कविता-संग्रह 'उर्वार' (१९३६)  
घन (१९३९) 'प्रतिष्ठाप'।

### स्व० होमयती देवी

(१९३९ में श्री वृष्णवन्द  
वर्मा और श्री बिरु  
प्रसादीति 'बहुक' के साथ  
सम्मिलित रूप में)। 'निर्द्वन्द्व'  
और अन्य कविताएँ प्रकाशित।  
कहानी संग्रह निर्गम (१९३९)  
'परोक्ष' (१९४६) 'अज्ञ  
भग' (१९४६) 'घना घन'  
(१९४६)। कुछ गद्य-वाक्य श्री  
निग घ श्री वृद्ध वन-नि  
वापों में प्रकाशित हुए थे।



जाने कसा उनका प्यार ?

नही समझ जो पाती है मैं बीगुन अपरम्पार !  
जान कसा उनका प्यार ?

बहुत रहते यहाँ सदा वे प्रयमि ! प्राणाधार  
ममृति के बग-बग में तेरा सदा रूप निहार !  
जान कसा उनका प्यार ?

निमिर-पूग-सी धार मिता में बहुत यही पुकार-  
रूपसि ! सगे जगमग अगमग विगती छटा अपार !  
जान कसा उनका प्यार ?

उच्छ्वस भरिता में भी जाकर, सगबर निज मनुहार  
कहन मुमम तुम्हें देगना लहरा में साबार !  
जान कसा उनका प्यार ?

बहुत दूरे मैं उनका कबल पागल-सा व्यापार  
या अपमा हा बहुत हम मैं फिर अज्ञान अपार !  
जान कसा उनका प्यार ?



जन्म स्थान—मरठ के  
प्रसिद्ध पत्थर वाले छानखान  
में । सम्म-तिथि—माघ कीर्ति  
वृत्त ५ मंथ १६५६ वि ।  
निधन तिथि — ३ फरवरी  
१६५१ । विरोध—हिन्दी का  
प्रभात कवित्री घोर बहाली  
लगाया । प्रकाशित रचनाएँ—  
कविता-संग्रह 'उदुग' (१६५१)  
'धर्म' (१६५६) 'प्रतिज्ञाया'

## स्व० होमवती देवी

(१६५६ में भी वृत्तगुणग्र  
रमा 'बल घोर की बिद्व  
प्रहाम कीर्ति 'बदु' व माघ  
मम्मिसिन् ५ म) । 'नि-स्वन्'  
घोर सम्म कविताएँ प्रकाशित ।  
कहानी गंठ निमग (१६५६)  
'परार्थ' (१६५६) 'दर  
भंग (१६५६) 'माता घर'  
(१६५०) । कुछ मठ-काव्य भी  
लिखे थे जो कुछ पत्र-पत्रि  
काओं में प्रकाशित हुए थे ।



हिन्दी-रचयित्रिणा के प्रम-वीन

कैसे गोली पसकें लोसूँ ?

मुमनानी ऊया क सम्मुख कैसे गोली पसकें लोसूँ ?  
किंग घासा बे उजियास में मन बे मनक बट पिरा सू !

मन बहत है हुमा सबरा  
छोट मन पनी गग डेरा

मैं वली में क्या वस सबर उड़ जाऊँ किम तर पर बोल ?  
मुमनानी उया क सम्मुख कैसे गोली पसकें लोसूँ ?

गाने दो यदि गग गात है  
गीत मुझे अब बच भात है ?

रहम तो चुपचाप मुझ में मार हृदय-गोदा का काम ।  
मुमनानी उया क सम्मुख, कैसे गोली पसकें लोसूँ ?

गग-सपनों में बिहूत पस-गग  
गोबर व्याधा पुरानी धबिधम

गद गम्भव है मधुमय धागव दूने उर-व्यामा में पोत ।  
मुमनानी उया क सम्मुख, कैसे गोली पसकें लोसूँ ?

बिसका मानू अपना जग में  
साथी जो था भूसा मग में

किमक हिस अब मृत प्राणों में मैं जीवन भर जागृत हो मैं !  
मुमनानी उया क सम्मुख कस गोला पसकें लोसूँ ?

आम-कमान—मुरादाबाद ।

आम-सिबि—दिसम्बर, १९३० ।

मिला—आइमरी तक बरेली में  
२ बी कसास महिला विद्यालय  
मकानड से, मेडिक १९४५ में  
नामपूर से इष्टर भी वहीं से  
१९४६ में आगरा से बी० ए०  
अन्तर्निवा विन्विद्यालय से  
१९३० में एम० ए० । विशेष—  
कई बर पहले तक इनका जैत



## मान अस्थाना

घोर कठिनाई 'कमल'  
इतिहास 'कर्मयुग' सरिता  
'आर्य समाज', अजमेरा  
नया 'समाज' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए । आज  
कल रिपेरे सात वर्षों में अन्तर्मा  
निया विन्विद्यालय हैदराबाद  
में प्राध्यापिका हैं । रचायी  
पता—हिन्दी विभाग अन्तर्मा  
निया विन्विद्यालय हैदरा-  
बाद ।

तुम हगों में छा रहे हो !

घाज घागिर दूर निज से तुम्हें कैसे मान लूँ मैं !

बाँव छिप जाता गगन में

घास गजनी को सताने

मीन ननों की कृपा का—

स्वप्न था जात बुझान

स्वप्न के सुसार को पर सत्य कैसे मान लूँ मैं !

घाज घागिर दूर निज से तुम्हें कैसे मान लूँ मैं !

प्यार में घन बाद के घन

तुम हगों में छा रहे हो

प्राण चासक में निगलन—

दूर हो मेहरा रह हो

इस सपन घन की भला जल-धार कैसे मान लूँ मैं !

घाज घागिर दूर निज से तुम्हें कैसे मान लूँ मैं !

म निगा के पथ का यह

बाँव दगा तब रहा है

काम के सपन में—

विद्वान् मग धब रहा है

तुम सदा भर रहान मरुत कम जान लूँ मैं !

घाज घागिर दूर निज से तुम्हें कैसे मान लूँ मैं !

बम्म-स्वान्न— बिजनौर ।  
 बम्म-तिथि— सन् १९३१ ।  
 शिला—बिदुपी । बिशेष—  
 घापकी रचनाएँ मुरानाबार  
 कासीपुर तथा गढ़वाल आदि की

## ज्ञानवती सफसेना



स्वामीय पत्र-पत्रिकाओं में  
 प्रकाशित होती रहती हैं । पत्र  
 के द्वारा हम ज्ञान में बिद्यन  
 प्रोत्साहन मिला है । बतमान  
 बत—१५ मरी माटान बरेली  
 (उत्तर प्रदेश) ।

हिन्दी-कवयित्रीयों के प्रथम-यात्र

जन्म स्थान—उदयपुर  
(राजस्थान)। जन्म-तिथि—  
१२ अगस्त १९१८। शिक्षा—  
विस्तारवत् साहित्य रत्न  
साहित्यालंकार, एम० ए०।  
विदेश—६ वर्ष की आयु में ही  
पिता का देशव्रतान। विवाह  
के उपरान्त ही अथवा अल्पवयस्य  
से गिता प्राप्त की। सन्  
१९६१ में ४३ वर्ष की आयु  
में विराम-विश्वविद्यालय में



### ज्ञानवती सकसेना 'किरण'

एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण  
की। पति का अग्रभूतलमात्र  
सकसेना यात्रात रीति (मध्य  
प्रदेश) में निवसित है। इनकी  
रचनाएँ प्रायः सभी प्रमुख पत्र  
पत्रिकाओं में प्रकाशित होती  
रहती हैं। वर्तमान पता—डारा  
३। अग्रभूतलमात्र गुरुदेवता  
एकीकृत विद्वत् अथ रीति  
(मध्य प्रदेश)।

विद्या-व्यवस्थितों के प्रेम गीत

मुन्स मेरे गान न छीना !

जीने को है साथ न मुझको

मरने के घरमान न छीना !  
मुमम मरे गान न छीनी !

मैंने अपनी जीवन नीका  
बोध भँवर में सा टापी है  
मैंने अपनी नियत घागा  
दुल की भग्ना में पापी है  
नयनों के निभर स सिचिभ

घघरा की मुमकान न छीनी !  
मुमम मर गान न छीनी !

सपपण का निमम नीपक  
मरी मज्जित का सम हस्ता  
सहज सरस बिदकात तुम्हारा  
मरी पीछा का कम बग्ता  
मान मत दो पर मंदिर की

देहरी का पहचान न छीना  
मुमम मरे गान न छीनी !

व मधुग्मि दो धोन तुम्हारे  
मर मानस म सा छात

कवयित्रियों के प्रेम-गीत

रीसे रीसे नयनों में तब  
 रिमक्तिम साबन घन भर आते  
 जीएण कुटी को झकृत करती—  
 छर-बीणा की तान न छीनो !  
 मुमसे मेरे गान न छीनो !



